पथ की वंशी

एक कलाकार के संघर्षमय जीवन पर
आधारित उपन्यास

यादवेन्द्र शर्मा 'चन्द्र'

राजपाल एण्ड सन्ज़, दिल्ली



मूल्य	दो रुपये पचीस नये पैसे
प्रथम संस्करण	अक्तूबर, १९५९
प्रकाशक	राजपाल एण्ड सन्ज़, दिल्ली
मुद्रक	हिन्दी प्रिंटिंग प्रेस, दिल्ली

मैं इतना ही कहूंगा

यह लघु उपन्यास है।

इसमें मैंने आधुनिक सभ्य समाज के नवीन सम्बन्धों और बदलते हुए मानदण्डों का एक सीमित मर्यादा में चित्रण किया है। इसमें एक ऐसे कलाकार युवक की कहानी है जो लंगड़ा है, हीनभावना से पीड़ित है, प्यार से उपेक्षित है। वह अपने लिए सुन्दर उपवन का निर्माण करता है पर यह पूंजीवादी युग उसे चैन की सांस भी नहीं लेने देता। तब उसके जीवन की प्रत्येक सांस विषैली हो जाती है। फिर भी वह महान् बनना चाहता है। अपनी हीनता को वह महानता के विराट् में सदा सदा के लिए फेंक देना चाहता है। इसके लिए वह अपने परिवार कर्तव्य और अपने आपके प्रति भी उदासीन हो जाता है लेकिन उसके मन की कामना का चरमबिन्दु आज के संक्रांति-काल में धुंधला-धुंधला सा दीखता है और अंत में उसे 'लोक-धर्म' का सहारा लेना पड़ता है अपने पारिवारिक और सामाजिक दायित्व को संभालना पड़ता है।

यादवेन्द्र शर्मा 'चन्द्र'

९

उसके सामने एक कापी पड़ी थी और कापी के पास एक दवात जिसकी स्याही सूख गई थी जैसे कई दिनों से इसका उपयोग नहीं हुआ है और यह केवल मेज़ की शोभा के लिए ही रखी हुई है। दो-चार हिन्दी की पुस्तकें और दो-चार अंग्रेज़ी के प्रसिद्ध उपन्यास बेतरतीब पड़े हुए थे। भूरे रंग के टेबल-क्लॉथ पर कहीं-कहीं हल्के स्याही के छोटे छोटे धब्बे थे जो नये नहीं जान पड़ते थे।

कुछ देर वह बहुत ज़िम्मेदार राजनीतिक नेता की तरह गम्भीर मुद्रा बनाकर सामने पड़े कागज़ पर आधुनिक प्रयोगवादी चित्रकारी का नमूना बनाने लगा। उसका शीर्षक दिया उसने—पातिसमन! फिर उसके होठों पर सूखी मुस्कान थिरक उठी मानो वह अपने आपसे कह रहा हो 'वह भी कैसा आदमी है।

फिर उसने अपने सिर को हथेली के सहारे टिका दिया और लिखने लगा जीवन = शून्य। आगे उसने लिखा नहीं।

वह कुछ देर तक विचारमग्न बैठा रहा। फिर उसकी कलम स्वतः ही चली।

जीवन + पैसा = आनंद!

जीवन—पैसा = समझदारी से जीवन यापन!

जीवन × पैसा = विलासमय जीवन!

जीवन – पैसा = दुख चरम दुख भोगती जनता।

और फिर उसने उन सबको काटकर बड़े-बड़े अक्षरों में लिखा 'इन्दु!

इन्दु के साथ उसके मानस-पटल पर एक युवती का चित्र उभर आया जो किसी प्राइवेट स्कूल में अध्यापिका थी और जो आजकल उसके आकर्षण की बिन्दु थी। उसने खिड़की की राह अनन्त नीलिमा को देखा और फिर मन ही मन कुछ बड़बड़ाता हुआ अपनी बैसाखी लेकर उठ खड़ा हुआ। लाल सीमेंट के फर्श पर उसकी बैसाखी की 'खट्-खट्' उसके मन की व्यथा को साकार करती हुई उस सूने कमरे में गूंज उठी। 'खट्-खट्' उस भाग्यहीन मनुष्य के जीवन की पुकारती वह ध्वनि थी जो उसके अन्तराल की गहूर परतों में प्रतिध्वनियों की भांति टकरा-टकराकर उसे पीड़ा पहुंचा रही थी। वह उदास-सा खिड़की का अवलम्ब लेकर खड़ा हो गया। क्षणभर के लिए वह इतना गम्भीर हो गया कि उसकी भृकुटियां स्पष्ट तनी हुई जान पड़ीं फिर उसके चेहरे पर व्यथा के गहरे काले बादल छा गए। उसका मुख क्षण भर में एकदम पीला-पीला-सा जान पड़ा। उसने खिड़की में झूमते हैडसम के बने आकर्षक पीले पत्तों को अपने दोनों हाथों से पकड़ा और बड़बड़ाया 'तैमूरलंग !

आज नीरोज रेस्त्रां में नवोदित लेखक ने अनाम को तैमूरलंग कह दिया। अनाम ने उस लेखक की जिसका नाम 'निर्वाण' था एक कहानी की कटु आलोचना किसी पत्र में छद्म नाम से लिख दी थी। वह आलोचना इतनी द्वेषभरी और पक्षपातपूर्ण थी कि निर्वाण बात ही बात में बहुत नीचे स्तर पर उतर आया और उसने अनाम का एक शाहियाना चित्रकार बताते हुए तैमूरलंग कह दिया। उस समय अनाम हंसता रहा ताकि रेस्त्रां के बुद्धिजीवियों की उपस्थिति यह अनुभव न करे कि उसने इसे बुरा माना है लेकिन बाद में इस शब्द ने उसको मर्मान्तक पीड़ा पहुंचाई और वह अब तक उसी तरह परेशान है।

'अनाम बाबू ! किसी लड़की का मृदुस्वर सुनाई पड़ा।

अनाम ने देखा—बरखा हाथ में चाय की प्याली लिए खड़ी है। अनाम

कृत्रिम मुस्कान होंठों पर लाता हुआ बोला 'चली आओ वहां क्यों खड़ी हो ?'

'आज आपका मूड अच्छा नहीं है न इसलिए मैंने सोचा कि आपसे आज्ञा ले लूं। देखा न खिड़की का पर्दा कितना खराब हो गया है।' और सचमुच घनश्याम ने देखा कि मुट्ठी में पर्दे के छोर के आ जाने से उसमें काफी सलवटें पड़ गई हैं। वह पर्दा भीगे कपड़े को फूहड़ता से निचोड़ा हुआ-सा जान पड़ता है। उसने वरदा के प्रश्न का कोई उत्तर नहीं दिया। वह बैसाखी के सहारे मेज के पास बिछे पलंग पर आकर बैठ गया और चाय की चुस्कियां लेने लगा।

वरदा उसकी ओर बिना देखे हुए उसकी पुस्तकों को उठाकर अलमारी में रखने लगी। एकाएक वरदा ने पूछा 'घनश्याम बाबू, मनुष्य उदास क्यों हो जाता है ?'

'जब तुम उदास हो तब उत्तर ढूंढ लेना।'

वरदा ने मौन धारण कर लिया और घनश्याम पलंग पर लेटकर सुप्रसिद्ध चित्रकार विन्सेण्ट वानगाग के जीवन पर आधारित उपन्यास 'लस्ट फॉर लाइफ' पढ़ने लगा। कुछ देर तक दोनों एक दूसरे से नहीं बोले। फिर वरदा प्याला लेकर चली गई। उसके जाते ही घनश्याम ने करवट लेते हुए कहा 'बेचारी!'

वरदा—एक निम्न मध्य वर्ग की कुंआरी बंगालिन कन्या। काली पैन भैंस का वर्ण और कुछ मोटी थी। इतने छोटे छोटे पांव चीनियों की तरह जैसे वरदा के मां-बाप ने भी उसे जन्मते ही लोहे के जूते पहना दिए हों। आंखें बड़ी-बड़ी गहरी और काली। बाल श्यामल घटाओं की तरह घने और काले और उसकी कमर के नीचे तक फैले हुए। आठवीं में पढ़ती थी। उम्र चौदह पन्द्रह पर शरीर का फैलाव पूर्ण युवती का-सा विवाह के योग्य।

अनाम के नीचे के दो कमरों के फ्लैट में वह रहती थी। बाप सरकारी आफिस में हैड क्लर्क। तीन छोटी बहिनें और एक छोटा भाई। घर-गृहस्थी का संचालन मां के हाथ में।

अनाम इस परिवार का एक अभिन्न सदस्य-सा हो गया। वरदा का बाप चित्रकारों का सम्मान करता है और उनसे मित्रता बनाए रखने में गौरव का अनुभव करता है। कालेज में वह भी चित्रकारी का शौक रखता था।

अनाम को वरदा चाहती थी इसे अनाम भी जानता था। कभी-कभी वह वरदा के बारे में सोचा भी करता था। सोचता-सोचता वह इतना क्रूर हो जाता था कि वरदा के हृदय को निर्दयी आवारा प्रेमी की तरह मसलकर तोड़ देना चाहता था। ऐसा विचार उसके मन में यथाकदा आया करता था। या तो वह अधिक उद्विग्न होता था या अधिक प्रसन्न—रोमांटिक मूड में।

अनाम अभी तक पलंग पर बैठे ही सोया हुआ था। उसकी आंखें पुस्तक पर जमी हुई थीं कि वरदा ने उसके कमरे में पुनः प्रवेश किया। इस बार वरदा ने कांजि विरेटम की साड़ी पहन रखी थी और चेहरे पर पाउडर मल कर उसने अपने हाथों और चेहरे के रंग में काफी फर्क डाल लिया था।

अनाम बाबू!

क्या है? अनाम ने उसकी ओर बिना देखे ही कहा।

सिनेमा नहीं चलेंगे?

'नहीं।

क्यों?

'मुझे किसी काम से कहीं और और जाना है।

क्या आप उस काम को आज के लिए टाल नहीं सकते?

'नहीं।

क्यों?

'बहुत आवश्यक है।

अभी तक अनाम ने वरदा की ओर नहीं देखा था। यह उपेक्षा वरदा को बुरी लग रही थी। यह व्यवहार अशिष्टता का भी सूचक है, ऐसा वरदा ने मन ही मन सोचा और वह कुछ अवश-सी बोली 'फिर आपने चलने की प्रतिज्ञा क्यों की थी ?

'प्रतिज्ञा को तोड़ा भी जा सकता है।

अभिजात वर्ग की सजी-सजाई महिला की प्रदर्शन-भावना लिए वरदा चाहती थी कि अनाम उसे देखे पल भर के लिए देखे ताकि वह गर्व करे अपने मन को तुष्ट करे, पर अनाम द्वारा निरन्तर उपेक्षा पाकर उसका अहंकार तड़प उठा। वह तनिक रोष में बोली 'तुम्हारे वचनों का क्या मोल ? तुम दूसरों की इच्छा को इच्छा नहीं समझते इतना दम्भ अच्छा नहीं ।

अनाम तुरन्त पलंग पर बैठ गया। उसने वरदा की ओर देखा। नज़रें चार हुईं। दोनों ने अनिमेष दृष्टि से कुछ क्षण के लिए एक दूसरे को देखा। वरदा अपनी धोती का पल्लू अपनी अंगुली के चारों ओर लिपटाने लगी और अनाम के चेहरे पर समझौतापूर्वक हंसी नाच उठी। वह शांत स्वर में बोला मुझे मेरे एक मित्र के घर जाना है उसकी पत्नी अस्वस्थ है। वरदा ! वहां नहीं जाऊंगा तो उन्हें कितना बुरा लगेगा।

वरदा के नेत्र भर आए। वह आंखों को पोंछती हुई कोमल स्वर में बोली 'अनाम बाबू आप अपने मित्र के पास अवश्य जाइए लेकिन इन्दु दीदी के यहां नहीं। यह इन्दु दीदी मुझे अच्छी नहीं लगती ।

और वह हवा की तरह से बाहर चली गई।

उसके जाने के बाद अनाम नारी की स्वाभाविक ईर्ष्या को देखकर गंभीर हो गया। फिर वह वरदा के अधिकारपूर्ण वाक्य का लेकर कई बार सोचता विचारता रहा और बाद में उसने निर्णय निकाला कि वरदा उसे प्रेम करती

है वह उसपर अपना कुछ अधिकार समझती है तभी वह उसे ऐसी आज्ञा दे सकती है। तभी वह उससे ऐसा हठ कर सकती है।

पांच बज चुके थे।

मई की उष्णता और जयपुर की बढ़िया किस्म की गर्मी। न चाहते हुए भी उसने मई पोशाक पहनी। कुर्ता और पायजामा। पावों में जोधपुर की हल्की जूती। जेब में कैलिको मिल का रंगीला रूमाल।

मेज की दराज में से उसने एक बटुआ निकाला। बटुए का रंग काला था और वह किसी कम की भेंट थी और तभी सेठ भंवर की हवेली का नक्सा उसके मस्तिष्क में घूम गया। उसने तुरन्त अपने कमरे की खिड़कियां बन्द कीं और पंखे का स्वीच ऑफ किया और चल पड़ा।

सीढ़ियों के बीच बरखा मिल गई। उसकी आंखों में करुणा और चिन्ता दोनों थीं। अनाम ने मर्ममरी दृष्टि से उसे देखा। उसके भावों को समझती हुई बरखा बोली 'आपकी विवशता न जानती हूं अनाम बाबू, लेकिन यदि आप साथ होते तो हमें बड़ा आनंद आता। मां भी यही चाहती थी। सम्भव हो सके तो आने का कष्ट कीजिएगा हम प्रेम प्रकाश में जा रहे हैं हिन्दी फिल्म देखने।

अनाम कुछ कहे, इसके पहले वह पुनः बोली 'आप बस में आएंगे या तांगे में।

'जो मिल जाएगा उसीमें चला आऊंगा।

'बस जब रुक जाए, तब उसमें बैठियगा। बरखा की करुणा भरी दृष्टि अनाम के भूनते हुए पांव पर जम गई।

अनाम उस दृष्टि को नहीं सह सका। उसके मन में हजारों बिच्छुओं के डंक की पीड़ा का संचरण हो उठा। उसने आवेश में तुरन्त सोचा कि क्या वह यह कहना चाहती थी कि आप लंगड़े हैं उतावली में गिर जाएंगे। —आह! दया कर रही है। उसके प्रशस्त ललाट पर स्वेद कण उभर आए।

उसका निचला होंठ ऊपर के दो मध्य दांत से दब गया। भंगिमा में कुछ कठोरता और भयानकता प्रतीत हुई। वरदा स्थिरता से सहम गई और कुछ उसकी आन्तरिक भावना को समझती हुई वह शीघ्रता से चली गई।

उसके जाते ही अनाम ने अपने आपको संभाला। अपने आवेश और रोष पर काबू किया। रूमाल से चेहरा पोंछा और चल पड़ा। बैसाखी की 'खट्-खट्' उसे अपने हृदय पर पड़ रही हथौड़े की चोटें-सी प्रतीत हुई।

घर से बाहर निकलकर उसने साधारण व्यक्ति की चाल से अधिक तेजी से चलना शुरू किया जैसे वह सोच रहा हो कि खिड़की में खड़ी वह काली-कलूटी वरदा उसके बारे में सोच ले कि वह कितना तेज चल सकता है? हालांकि 'बस स्टापेज' तक उसने पीछे मुड़कर देखा भी नहीं फिर भी वह कल्पना में साहसी पुरुषों की भांति ऐसा विचार रहा था कि वरदा उसे खिड़की की राह देख रही है। इसलिए वह बस में सबसे पहले लपककर चढ़ा। इससे अनाम की आत्मा को बड़ा संतोष हुआ।

बस में भीड़ थी। सीटें खचाखच भरी थीं। अपनी बैसाखी को बगल में दबाता हुआ वह एक सीट को पकड़कर खड़ा हो गया। अचानक सीट पर बैठे हुए महाशय की दृष्टि अनाम पर पड़ी। वह तुरन्त उठ खड़ा हुआ। उसने अनाम को कहा 'बैठिए।

'नहीं-नहीं आप बैठिए न ? अनाम ने उन्हें रोका।

'नहीं साहब मैं खड़ा हो जाऊंगा। आपको तकलीफ होगी। उसके मुख पर करुणा के भाव थे।

अनाम विवश होकर बैठ गया। उस समय उसका चेहरा विशेष परिस्थितिजनित किए गए अपराध द्वारा दंडित शरीफ व्यक्ति की भांति पीड़ा और संकोच से झुक गया था।

२

प्रसिद्ध 'फीरोज' रेस्त्रां में अभी पूर्ण शांति थी। संध्या-वेला में जो हल्का कोलाहल और सिगरेट के धुएं की घुटन उत्पन्न हो जाती है वह अभी तक नहीं हुई थी। वहां की उपस्थिति सहजता से गिनी जा सकती थी। 'एक दो तीन चार' अनाम ने मन ही मन उन्हें गिना भी और फिर उसने मैनेजर से समय पूछा। उत्तर सुनकर उसने मन ही मन सोचा 'अभी अभिजात वर्ग की युगल जोड़ियों की भीड़ लग जाएगी और मैं इन्दु से जमकर बातचीत नहीं कर सकूंगा।' अब इन्दु को आ जाना चाहिए। हर पल उसके लिए युग-सा बन गया। उसके हृदय की प्रतीक्षाजनित आकुलता नैनों में चमक उठी। वह बैठा-बैठा चाय पीने लगा।

इन्दु आई। उसके मुख पर उल्लास नाच उठा। अधरों पर मुस्कान लाता हुआ वह बोला 'तुमने बड़ी देर कर दी मैंने तुम्हारे आने की आशा ही छोड़ दी थी।

'मैं वादे की पक्की हूं और तुम्हें एक खुशखबरी सुनाना चाहती हूं। सुनोगे तो बहुत खुश होओगे।

'क्या ?

'वह कहानी छप गई है।

'कौन-सी ?

डौरी का करुण विलाप।

अनाम ने प्यार भरी दृष्टि से इन्दु के मुख पर खेलती उत्साह की रेखाओं को देखा। इन्दु को हार्दिक प्रसन्नता है। 'धर्मयुग' में कहानी का छपना उसके जीवन की बहुत बड़ी सफलता है।

'ऐसे क्यों देख रहे हो ?

देख रहा हूं कि तुम्हें कहानी के छपने की कितनी खुशी है ? क्या

तुम्हारी सहेलियों ने इसे पसन्द किया है ?'

'दो-तीन सहेलियाँ इस बीच आ गई थीं उन्होंने इसे खूब पसन्द किया। लेकिन मुझे तुमसे थोड़ी-सी शिकायत है। उसके स्वर में अन्दाज भर आया। प्रनाम ने जान-बूझकर अपनी मुद्रा को गम्भीर बनाने की चेष्टा की। उसने चाय बनाकर इन्दु के आगे रख दी।

चाय का घूंट लेकर इन्दु प्याले पर अपनी दृष्टि जमाकर बोली 'मैंने अपनी लिखी कहानी पढ़ी पढ़कर आश्चर्य हुआ तुमने उस इतना क्यों बदल दिया ? उस कहानी पर तुम्हारी चित्रकारी का प्रभाव स्पष्टतः बोलता है। तुम्हारे मित्र तुरन्त जान जाएँगे कि यह कहानी इन्दु की नहीं प्रनाम की लिखी हुई है और फिर वे मुझे और तुम्हें लेकर न जाने क्या-क्या सोचेंगे।

क्या-क्या सोचेंगे ? प्रनाम के भूखे हृदय में प्यार का झरना-सा फूट पड़ा। दृष्टि में चुहलबाजी उतर आई।

'बस ! उसने कृत्रिम रोष से बात खत्म करने की आज्ञा दी। दोनों कुछ देर तक शांत रहे जैसे दोनों पत्थर या मिट्टी के बने खिलौने हों जो सजावट के तौर पर लगा दिए गए हों। दोनों ने चाय तक पीनी बन्द कर रखी थी।

अचानक इन्दु बोली 'तुम्हारे मित्र वकील साहब नहीं आए ?

'बस आते ही होंगे।

'उनका स्वभाव कैसा है ?

'वैसे वे बहुत अच्छे आदमी हैं किन्तु कंजूस हैं। हृदय के पत्थर और एकदम नीरस।

'फिर ऐसे आदमी से मिलने में क्या लाभ ?

'उनकी यहाँ के बड़े-बड़े सेठों में पहुँच है। यदि उन्हें हम राजी करने में सफल हो गए, तो तुम्हारा पहला कहानी-संग्रह छपा ही समझो।

इन्दु ने भावावेश में प्रनाम का हाथ दबा लिया। कायस स्वर में अपने

चहरे को चमकते ऐसट्रे में देखती हुई बोली 'तुमने मेरे जीवन को बदल दिया। क्या थी क्या बना दिया? मैं प्रायः सोचा करती थी कि मैं एक ऐसी स्त्री बनूं जिसकी इस समाज और इस समाज के बाहर प्रतिष्ठित नागरिकों और बुद्धिजीवियों में सम्मान हो। लोग मुझे आदर की दृष्टि से देखें और अब मुझे विश्वास हो रहा है कि मेरी इच्छा अवश्य पूरी होगी।

अनाम ने बड़ी शान्ति से उत्तर दिया 'मैं अपनी ओर से तुम्हें सब तरह की मदद दूंगा।

'तुम्हारा ही यह प्रताप है कि मैं आज कुछ बन गई हूं।

वकील दयाल आ गए। अनाम ने उसे देखते ही उठने का प्रयास किया। दयाल ने तुरन्त उसके कन्धे पर हाथ रखकर कहा 'बैठिए-बैठिए, तकल्लुफ की जरूरत नहीं, आपको उठने में कष्ट होगा।

अनाम का मुंह उतर गया। वस्तुतः अपने पर अर्पित किए गए दया के भाव उसे अच्छे नहीं लगते थे। दूसरों की दया उसके लिए असह्य हो उठती थी। उसने गहरा मौन धारण कर लिया।

दयाल निर्विकार भाव से मुस्करा रहा था। अनाम की गहरी मुद्रा का उसपर कोई प्रभाव नहीं पड़ा। वह उसके कन्धे पर जोर की थापी देकर बोला 'अनाम आपने परिचय नहीं करायोगे?

'आप हैं इन्दु जी यहां प्राइवेट स्कूल में टीचर हैं और हिन्दी की नवोदित तरुण लेखिका भी हैं। आपने इनकी कहानियां पढ़ी होंगी।

दयाल ने कुटिलता से मुस्कराकर कहा 'वैसे मैं कहानियां नहीं पढ़ता पढ़ने का प्रश्न ही नहीं उठता फुर्सत ही नहीं मिलती लेकिन आज मैंने इनकी एक कहानी 'धर्मयुग' में पढ़ी। द्रौपदी का करुण विलाप। प्राचीन कथानक को आज की समस्याओं में घटित करना बहुत कठिन है। मैं उसे कला का एक सुन्दर नमूना मानता हूं।

'क्या आपको मेरी कहानी पसन्द आई? इन्दु ने अपनी भरी हुई दृष्टि

तनिक उठाकर पूछा।

'पसन्द आयी बहुत! आधुनिक द्रौपदी की दशा और उसका चित्रण पढ़कर मुझे प्रेरणा मिली कि मुझे अब हिन्दी की कहानियां और उपन्यास पढ़ने चाहिएं। लेकिन मैं जानता हूं कि यह सोचकर भी मैं कुछ नहीं पढ़ पाऊंगा। अपने धंधे से मुझे फुर्सत नहीं। मैं एक पल के लिए भी मुक्त नहीं हूं।'

इधर इन्दु की आंखों में गर्व चमक उठा। चमाम ने अब चुप रहना उचित नहीं समझा। वकील की मुक्त कंठ से की गई प्रशंसा इन्दु पर प्रभाव करती जा रही थी।

'वकील साहब इनका कमाल तो कहानी को मोड़ देने में है। महाभारत की द्रौपदी हर पति को सम्पूर्ण नारीत्व के साथ महासमर्पण किया करती थी और इनकी द्रौपदी विवशता और भय से अपने आपको उन पांच लोलुप भेड़ियों को सौंप दिया करती थी। वे भेड़िए अपने भोग-विलास की तृप्ति के साधन के रूप से उस मर्म-पीड़ित नारी का उपयोग करते थे। यह यौवन की कितनी भयानक ट्रेजडी है। उसने बैरे पर दृष्टि जमाकर कहा 'आप तो काफी पीते हैं न वकील साहब?'

'केवल काफी नहीं चमाम काफी के साथ कुछ खाने को भी चाहिए।'

'वह भी मिलेगा।'

तभी रेस्त्रां में दो एंग्लो इण्डियन युवतियों ने प्रवेश किया। वे गोरी दुबली-पतली युवतियां अंग्रेजी में बोलती हुई सभी कुर्सियों पर नज़र फेंकती हुई एक कोने की मेज पर आकर बैठ गईं।

इन्दु ने तपाक से कहा 'इस बार मैं एंग्लो इण्डियन समाज पर लिखना चाहती हूं। इनके जीवन और मन में बड़ी ग्रंथियां हैं। नियमित रूप से ईसा प्रभु के चरणों में गिरकर अपने अपराधों के लिए क्षमायाचना करना और उसी गति से अपने निजी अपराधों में वृद्धि करना ये दो विरोधी बातें हैं। वकील साहब उस कहानी का आधार होगी मेरी सहेली—रिजन!

'मैंने आपको कहा था मैं साहित्य के मामले में उतना ही जानकार हूं जितना एक साधारण पाठक । केवल अच्छा या बुरा बता सकता हूं । हां मार्डर्न आर्ट में अनाम की धूम है । उसकी शैली की विशिष्टता और बौद्धिक चमत्कार द्वारा इन्होंने कम से कम कद्रों का हृदय जीत लिया है । विशेषतः प्रयोगवादी-प्रभावशाली चित्रकारों का ।

अनाम को इन्दु के समक्ष की गई अपनी यह प्रशंसा रुचिकर लगी ।

वकील साहब ने काफी का लम्बा घूंट लेकर कहा 'अब मैं मुद्दे की बात पर आना चाहता हूं । अनाम तुम्हारी क्या योजना है ?

'योजना है एक प्रकाशन-संस्था खोलने की ।

'यह बेकार का धंधा है । श्याम ने स्पष्टता से कहा 'यह व्यापार बिलकुल घाटे का है । भाई अनाम कोई ऐसी योजना बनाओ जिससे लोहा भी सोना हो जाए ।

'जीवन में केवल सोना बनाने का दृष्टिकोण कहां तक ठीक है वकील साहब आपकी जरा-सी कृपा से हमें बड़ा सहारा मिलेगा विशेषतः मैं इन्दु जी का एक कहानी-संग्रह छपवाना चाहता हूं । 'मुझे विश्वास भी है इसकी कहानियां लोग बहुत पसंद करेंगे ।

श्याम प्रश्नवाचक दृष्टि से कभी इन्दु को और कभी अनाम को देखता रहा । उसकी पैनी दृष्टि जो दूसरों के अन्तस् के सत्य को सहजता से पहचान लेती थी तुरन्त ताड़ गई कि अनाम इन्दु से प्यार करने लगा है और वह इन्दु के लिए बड़ी से बड़ी रिस्क उठा सकता है ।

'मैं वकील हूं वकील भी ऐसा जिसके स्वभाव को तुम रत्ती-रत्ती भर पहचानते हो महाकंजूस अविश्वासी और सदा चौकन्ना रहने वाला । मुझे कुछ नहीं चाहिए, मुझे चाहिए अपना लाभ ! मुझे लाभ का तारा आकाश में भी दीख जाए तो मैं वहां पहुंचने को नहीं चूकूंगा ।

'श्याम जी ! अनाम क्षणिक आघात में आ गया । उसे श्याम का यह

व्यवहार जरा भी रुचिकर नहीं लगा। इन्दु के सामने उसे अपमानित करने का उसका क्या उद्देश्य हो सकता है? वह समझ नहीं सका।

अनाम ने कहा 'फिर मैं कोई अन्य उपाय ढूंढूंगा। मुझे इन्दु जी का कहानी-संग्रह छपवाना ही है। आप नहीं जानते बुद्धि को समुचित विकास और प्रोत्साहन न मिलने से वह कुंठित हो जाती है।

दयाल लापरवाही से उठ गया 'थैंक्यू अनाम! और देखिए इन्दु जी आप बुरा न मानें मैं रुपया अपनी तिजोरी से निकाल नहीं सकता हूं। रुपया मेरी आत्मा है परमात्मा है। सच कहूं परमात्मा से भी बढ़ कर है।

दयाल इस तरह चला गया जैसे उसने यहां आकर अपना समय ही खराब किया।

इन्दु ने घृणा से मुंह बिचकाकर कहा 'आपके बहुत अच्छे मित्र हैं! मैं कहती हूं कि ऐसे मित्रों से मित्रता रखना क्या जरूरी है?

अनाम ने करुण स्वर में कहा 'प्राणी का मूल्यांकन परीक्षा से ही होता है। लेकिन तुम चिंता न करो मैं सब ठीक कर लूंगा। "सब ठीक कर लूंगा। चलो। यदि यह चाहता तो अपना काम बनवा सकता था।

इसके बाद वे दोनों बाहर निकले।

अनाम की बैसाखी का 'खट्‌ खट्‌' उस कोलाहल में अपना पृथक अस्तित्व रखती हुई सबको स्पष्ट सुनाई पड़ रही थी।

३

दयाल के चरित्र के बारे में एक ही वाक्य कहना अधिक उचित होगा कि वह कटी हुई अंगुली पर पेशाब तक नहीं करता था। केवल धन-संग्रह और उसकी वृद्धि के अतिरिक्त उसके मन में दूसरी बात नहीं आती थी। तभी उसकी वकालत मामुमात और लेन-देन का व्यापार अधिक चलता था।

एक गरीब बनिया परिवार में उसका जन्म हुआ था। तीव्र बुद्धि होने के कारण उसका विवाह पन्द्रह वर्ष की उम्र में ही हो गया। पत्नी दहेज में तीस हजार रुपये लेकर आई। श्याम ने उन रुपयों को बड़ी सुरक्षा के साथ रख दिया और पढ़ाई में तन्मय हो गया। सी.ए. की परीक्षा पास करते-करते उसके मां-बाप का देहान्त हो गया। प्रैक्टिस प्रारंभ करते ही उसकी बीवी को क्षय का रोग हो गया। डाक्टरों ने उसे कहा इन्हें किसी पहाड़ पर ले जाइए। किन्तु श्याम अधिक खर्चे से डर गया और उसने अपनी पत्नी का यहीं पर इलाज कराना शुरू किया। इन्कम टैक्स की प्रैक्टिस उसकी खूब चली। वह रात-दिन अपने कार्य में व्यस्त रहता था। दो-दो तीन-तीन दिन तक वह घर नहीं आता था और उसकी पत्नी नैनों में आकुलता लिए श्याम की बाट जोहती रहती थी। श्याम आता और बड़ी रुखाई से उसके बालों पर हाथ फेरकर उसकी तबियत के बारे में पूछता। उपचार के बारे में सच्चे झूठे कई प्रश्न करता और फिर कहता 'मैं लखपति हो गया हूं।

उसकी रुग्ण बीवी दबी आवाज में कहती 'आप यह मकान बदल लीजिए, यहां जगह की बड़ी तंगी है।

'नहीं विद्या राजधानी होने के बाद जयपुर में मकान की बड़ी दिक्कत हो गई है। अच्छा मकान कुछ नहीं मिलता फिर भी मैं खोज रहा हूं।

'लेकिन यहां मेरा दम घुटता है। विद्या की आंखों में मौत की छायाएं नाच उठती थीं।

'कैसी बातें करती हो तुम मुझे ऐसा जरा भी नहीं लगता। मैं भी यहीं रहता हूं। यहां सूरज की धूप और चंदा की चांदनी दोनों आती हैं। और डाक्टर कहता था कि अब तुम अच्छी हो रही हो।

एक दिन विद्या ने श्याम से प्रार्थना की 'यह नौकरानी बड़ी फूहड़ है, कोई दूसरी रख लो।

'दूसरी कहां मिलती है? वस्तुतः बात कुछ और ही थी। यह नौकरानी

जितनी सस्ती की उतनी सस्ती नौकरानी ढूंढने पर भी नहीं मिल सकती। फिर भला श्याम उसे कैसे निकालता? वह अपनी पत्नी के लिए रद्दी से रद्दी फल लाया करता था। जब एक दिन विद्या ने रोष में कहा तब उस निर्दयी ने अपनी आंखें मिचमिचाकर कहा 'यह रोग आदमी का अन्त करके ही रहता है। व्यर्थ में रुपया बरबाद करने की क्या जरूरत है?

विद्या पर पहाड़ टूट पड़ा। उसने अपनी ममताहीन दीप्तिहीन आंखों से अपने पति की ओर देखा 'फिर मुझे यहां से चला ही जाना चाहिए। मेरा क्षय निश्चित है फिर जीवन के प्रति सम्मोह कैसा? तब विद्या के चेहरे पर भयानक छायाएं डोल उठीं 'तुम मुझे जहर देकर क्यों नहीं मार देते? तुम मुझे व्यर्थ ही क्यों तड़पा रहे हो? जाओ तुम मुझे जहर लाकर दे दो।

श्याम पत्थर की मूर्ति की तरह अचल खड़ा रहा।

'ईश्वर तुम्हें सद्बुद्धि दें। यह रुपया कुछ काम नहीं आएगा। आपको इतना धनलोलुप और हृदयहीन नहीं होना चाहिए।

श्याम ने धृष्टता से विद्या की ओर देखकर कहा 'अभी तुम्हें जीवन की गहराई का ज्ञान नहीं पैसा कितने महत्व की चीज है इसे मैं ही जान सकता हूं। फिर यह सरासर मूर्खता है कि हम उस वस्तु को बचाने के लिए अपने धन का अपव्यय करें जिसका विनाश निश्चित है।

विद्या अपने पति का उत्तर सुनकर उन्मादित हो उठी 'ओह! यदि कोई मेरा कलेजा निकाल लेता तो भी मुझे इतनी पीड़ा नहीं होती जितनी तुम्हारे इस वाक्य से हुई है। पता नहीं तुम्हें क्या हो गया है? तुम इतने पत्थर क्यों हो गए हो?

वह बिलकुल साधारण स्थिति में बोला 'मुझे कुछ नहीं हुआ मैं बिलकुल ठीक हूं। तुम्हें धैर्य रखना चाहिए और मेरी बात को समझने का प्रयास करना चाहिए। मैं झूठ नहीं बोलता। मैं पैसा न जाने क्यों खर्च

नहीं कर सकता।

'क्या मैं मरूंगी।' उसने पूछा।

'नहीं-नहीं।'

'फिर तुम रुपया खर्च करके मुझे अच्छे हस्पताल में भर्ती करवा देते। मैं तुम्हें विश्वास दिलाती हूं कि मैं अच्छी हो जाऊंगी। डाक्टर भी ऐसा ही कहता था। उसने अपने समीप पड़ी चादर को अपनी दोनों मुट्ठियों में भींच लिया जैसे वह जीवन को छोड़ना नहीं चाहती है।

शैतान की तरह उसकी पलंग के आगे चहलकदमी करता हुआ दयाल बोला 'रुपया जीवन का सत्य है, ईश्वर है सुख है शांति है। उसका दुरुपयोग का फल बुरा है। मैं तुम्हें मारना नहीं चाहता किन्तु अब तुमपर पैसा खर्च करना भी व्यर्थ-सा है। हजारों रुपयों के इलाज के बाद भी तुम्हारे स्वास्थ्य में जरा भी अन्तर नहीं आया। मैं चाहता हूं कि अब तुम किसी देवता की मनौती मानो। वह एक पल रुककर पुनः बोला 'क्या तुम कुछ दिन के लिए पीहर नहीं जा सकती हो?

विवश हो बिमला अपने पीहर चली गई। उस दिन दयाल ने खीर बना कर खाई। खीर खाता हुआ सोच रहा था 'फीकी खीर का स्वाद भी बढ़िया होता है। आगे से मैं चीनी का प्रयोग ही बन्द कर दूंगा। और उसकी आंखों में दुष्टता नाच उठी। वह अपनी पत्नी के पलंग पर हाथ फेर कर बड़बड़ा उठा 'पत्नी ने मुझे यमराज माना माना वो मानती रहे पर मेरे तो तीन सौ रुपयों की बचत हो गई, यदि मैं इतनी कड़वी और कठोर बातें नहीं करता तो क्या वह मेरा घर छोड़कर जाती? कभी-कभी क्रूरता भी लाभदायक सिद्ध हो जाती है।

और उसने नौकरानी को पुकारा। नौकरानी हाथ जोड़कर खड़ी हो गई। वह अपनी कमर पर दोनों हाथ लटकाकर तनिक उछल-उछल कर बोला 'तुम्हारी कितने दिन की तनखा बाकी है?

'दो माह की।

'इस बीच तुमने क्या-क्या नुकसान किया ?'

'वकील साहब इस बीच मेरे हाथ से सिर्फ एक कांच का गिलास टूटा।'

'सिर्फ एक ही ?'

'हां साहब !'

'आठ आने कम हो गए।'

'लेकिन सरकार कांच का गिलास छह आने में नया मिलता है।'

'नया मिलता है जानती हो नया गिलास बेकार होता है। उसके चलने की कोई गारंटी नहीं। मेरा छह माह का पुराना गिलास था और यदि तू नहीं तोड़ती तो वह कभी नहीं टूटता।'

बेचारी नौकरानी चुप हो गई। श्याम ने अपनी सफाचट मूंछों पर अंगुलियों को नचाकर कहा 'आज से मैं तुम्हें छुट्टी देता हूं। पन्द्रह रुपया माहवार मुझे बहुत लगता है। मैंने अपने पड़ोसी की नौकरानी से बात चीत कर ली है, वह पांच रुपयों में घर की सफाई और बरतन मलने को तैयार है।'

'पांच रुपयों में ही !' नौकरानी ने विस्मय से कहा।

'मेरे ख्याल में वह भी अधिक है। एक आदमी के बरतन अधिक नहीं होते। दो पलक झपकाई कि उसका काम समाप्त।'

नौकरानी जलती हुई अपने रुपये लेकर चली गई।

कुछ दिनों में पिता का भी देहान्त हो गया। श्याम ने उसके लिए आंसू बहाए सच्चे या झूठे यह कोई नहीं जान सका। उसने उसके पीछे ग्यारह ब्राह्मण भी जिमाए। कुछ दान-धर्म भी किया लेकिन उसके जीवन की गति में कोई भी परिवर्तन नहीं आया।

बाद में श्याम ने इन्कम टैक्स आफीसर से मिलकर और रुपये

कमाए। कुल मिलाकर उसके पास तीन लाख के करीब रुपये हो गए। उसने अपने व्यक्तिगत लाभ के पीछे राष्ट्र का भारी नुकसान किया। वह सेठ और आफीसर से मिलकर लाखों का मामला हजारों में तय करवा देता था।

अधिक रुपया आने के बाद उसका मन इस पेशे के प्रति ऊब-सा गया। नया इन्कम टैक्स आफीसर दयाल के हर मामले को बिगाड़ने का प्रयास करता था। निदान दयाल एक वकील से एक अच्छा पठान हो गया। वह औरों को रुपया उधार देने लगा। पांच सौ का सात सौ लिखवाना पांच-पांच रुपया सैकड़ा ब्याज अलग हजार की चीज पर पांच सौ रुपया देना यही था उसका धंधा! यही उसका व्यापार। फिर भी वह नियमित रूप से कुछ देर के लिए काला कोट पहनकर कचहरी जाता था।

इसीमें उसको महान संतोष और सुख था।

दयाल की मित्रता अनाम से भी विचित्र ढंग से हुई। अनाम को कुछ रुपयों की आवश्यकता थी किसीने उसे बताया तो वह उसके पास गया। दयाल ने एक अपरिचित को निर्भयता से उधार मांगते देखकर उससे बहुत प्रभावित हुआ। उसके व्यवसाय को पूछा। उत्तर पाकर वह बोला 'आप चित्रकार हैं वह भी कमर्शियल नहीं! क्या आप मुझे बता सकते हैं कि आपकी सामान्य इन्कम कितनी है?

'यही होगी पन्द्रह सौ रुपया।

'सिर्फ पन्द्रह सौ रुपया! और आप मुझसे इतनी बड़ी रकम अर्थात दो हजार रुपये मांगने आ गए! उसका स्वर आश्चर्य में डूबा हुआ था।

'देखिए, मेरी बड़ा बहिन निमला का विवाह है मुझे रुपयों की सख्त जरूरत है। मैं आपके पास बड़ी आशा लेकर आया हूं। अनाम ने दीनता से कहा।

'अन्न की दयावती भगवान के सामने अच्छी लगेगी। मैं एक सूदखोर हूं मेरा काम एक चिकित्सक से भी अधिक चतुराई का है। चिकित्सक

अपने प्रयोजन की चीज की ही जांच-पड़ताल करता है पर मुझे अपने 'मुख्य किस' के हर पहलू को देखना होता है। मेरी यह पैनी दृष्टि मनुष्य के अन्तर्मन की प्रत्येक गतिविधि को तुरन्त भांप लेती है।

'मुझे भंवर बाबू ने आपके बारे में बताया था। वे आपकी प्रशंसा करते थे। वे आपको हैल्पिंग लेबर का बताते थे।

'मेरी प्रशंसा मेरे हृदय में दया जगाने में सर्वथा असमर्थ रही है। मैं एक सूदखोर हूं जिसका धर्म सत्य और ईश्वर है—पैसा। हालांकि मैं ईश्वर की पूजा करता हूं। मेरी रसोई में जिसे मैंने आजकल मंदिर बना दिया है भगवान शिव का एक छोटा-सा लिंग है। हर रोज सवेरे मैं उसकी पूजा करता हूं ताकि मेरी आत्मा दुर्बल न हो। वह कुछ देर रुका। उसकी दृष्टि अपने काले पुराने कोट पर जम गई जिसकी गर्दन पर तेल की चिकनाहट चमक रही थी।

'लेकिन मेरा काम आपको करना ही होगा। अनाम ने अपने शब्दों पर जोर देकर कहा। फिर वह मसी चटाई को अपनी अंगुली से कुरेदने लगा।

'तीन हजार की जमानत किसने दी थी।

'किसकी ?

'भंवर बाबू की। वे जमानत दे देंगे मैं रुपया दे दूंगा।

'वे अभी कष्ट में हैं। उन्हें आपसे भय है कि सही वक्त पर रुपया न पहुंचा तो आप उनपर तुरन्त नालिश कर देंगे। आप उनकी इज्जत धूल में मिला देंगे।

दयाल अट्टहास कर उठा। उसकी अंगुलियों जैसी भयानक हंसी ने अनाम को भयभीत कर दिया। वह नादान बालक की भांति दयाल को देखने लगा।

'अब भंवर बाबू जिनके पास लाखों रुपये हैं तुम्हें नहीं दे सकते तब मैं

तुम्हें रुपया कैसे तोल सकता हूं।

'लेकिन वे लेन-देन का व्यापार नहीं करते।

'तुम भोले हो पैसे वालों की चालबाजियों को नहीं जानते। वे तुम्हें रुपया नहीं देंगे। वे तुम्हारी जमानत नहीं लेंगे। क्योंकि तुम एक गरीब चित्रकार हो जिसकी आय का कोई भरोसा नहीं। तुम नहीं जानते कि हर रुपया देने वाला आदमी अपनी आसामी की औकात देखता है। अनाम बाबू, कुछ गिरवी रखने को है? और उसकी दृष्टि अनाम के चेहरे पर जम गई।

'कुछ नहीं। अधिक से अधिक म अपने आपको गिरवी रख सकता हूं। हां यदि आप मेरे कुछ चित्रों को रखना चाहें तो खुशी-खुशी रख सकते हैं। उसकी वाणी में व्यथा तड़प उठी। आंखों में करुणा चमक उठी।

'इस तरह बात नहीं बनेगी। मैं पैसा जिसे मैं अपनी आत्मा मानता हूं ऐसे निकाल कर नहीं दे सकता। उसकी सुरक्षा का प्रबन्ध होना ही चाहिए।

'मैं आपके पांव पड़ता हूं।

'यह अभिनय व्यर्थ ही जाएगा। मैं अपने रुपयों की जमानत चाहता हूं। वैसे तो साधारण पार्टी का मकान भी गिरवी नहीं रखता क्योंकि एक मकान की कीमत आज एक लाख हो सकती है। लेकिन कल उसका पचास हजार रुपया भी कोई देने को तैयार नहीं होता। इसके साथ यदि मैं उसे आज बेचना चाहूं तो वह तुरन्त नहीं बिकेगा। इसलिए मैं सोना चाहता हूं जेवर चाहता हूं। सोना एक ऐसी धातु है जो कहीं भी तुरन्त बिक सकती है। वह एक क्षण चुप रहा 'लेकिन कलाकार इन व्यापारियों से कुछ ईमानदार होते हैं। अतः मैं तुम्हें मकान पर भी रुपया दे सकता हूं बशर्ते मकान की कीमत पांच हजार हो।

'मैने आपसे कहा न मेरे पास कुछ नहीं है।

'फिर मुझे क्षमा करना मैं आपकी कोई भी सेवा नहीं कर सकूंगा।

अनाम का हृदय दयाल के प्रति घृणा से भर उठा। उसे यहाँ तक गुस्सा आया कि वह उसके मुँह पर थूक दे पर वह इतना साहस नहीं कर सका। टूटा-टूटा-सा उठा और चल पड़ा। अभी वह दरवाजे तक पहुँचा ही नहीं था कि दयाल ने उसे फिर पुकारा 'सुनो।'

अनाम के तन-मन में खुशी की लहर दौड़ गई।

'मैं तुम्हें पाँच सौ रुपया दे सकता हूँ किन्तु एक शर्त पर।'

अनाम बैसाखी को मजबूती से बगल में दबाकर जल्दी-जल्दी दयाल के पास आया। उतावली से बोला 'मुझे आपकी हर संभव शर्त मंजूर है।'

'तुम्हारे जो भी चित्र बिकेंगे उन सबपर कापी राइट मेरा होगा उन्हें मैं ही बेच सकूँगा। उसका सारा रुपया मैं लूँगा।'

'मुझे मंजूर है।'

'फिर कल आ जाना मैं कागज बनवा कर रखूँगा दस्तखत करके अपनी रकम ले जाना।' वह इस तरह बोल रहा था जैसे कोई उपेक्षा से बात कर रहा हो।

दूसरे दिन अनाम ने जब दयाल के घर में प्रवेश किया तब दयाल एक साधारण युवती को कर्ज दे रहा था। बैसाखी की 'खट्-खट्' सुनकर दयाल भीतर से बोला 'अनाम बाबू वहीं पर रुक जाइए।'

अनाम एक टूटी-सी कुर्सी पर बैठ गया। कुर्सी की पीठ से लगी दीवार इतनी गन्दी थी कि अनाम को घृणा हो उठी। एक कोने में कुछ सड़े हुए फल पड़े थे। वह इस कंजूस पर गंभीरता से विचारता रहा जिसमें स्वार्थ का सागर लहरा रहा था। जो रात-दिन औरों की दौलत को अपने घर में देखना चाहता था। जिसका इस जीवन में न कोई दोस्त था और न कोई अपना। मनुष्यता से उसे चिढ़ थी। वह कभी भी जीवन की कोमल भावनाओं या नारी के प्रणय पक्ष को लेकर चर्चा नहीं करता था। दयाल का यदि सर्वाधिक प्रिय विषय कोई था तो वह था ब्याज दर। वह ब्याज को लेकर घंटों विचारा

करता था। किस प्रकार किसीको सौ रुपया देकर एक हजार वसूल करने चाहिएं—इसमें वह अपनी बुद्धि का कौशल बताया करता था। वैसे वह कसाई की छुरी से अधिक निर्दय और पत्थर से भी अधिक कठोर था। किंतु वचनों का बहुत पक्का था। जो कह दिया उसे वह पूरा करता ही था। चेहरे पर किसी प्रकार के भाव लाए बिना वह अपने मुवक्किलों (कर्जदारों को वह इसी तरह से सम्बोधन करता था) के मकान कुर्क करवा लेता था उनका सामान कब्जे में कर लेता था या उन्हें जेल भिजवा देता था। इस मामले में वह थोड़ा भी उदार नहीं था।

'मनाम !' भीतर से दयाल ने पुकारा। मनाम की बैसाखी की 'खट् खट्' गूंज उठी। वह भावोद्वेलित-सा उस कमरे में घुसा जिसमें चटाई बिछी हुई थी। जिसमें एक पतली-लम्बी युवती बैठी हुई थी। मनाम का ध्यान उस युवती की ओर गया। दयाल हंसकर बोला, 'यह अनामिका है, दासी कुछ कर्ज लेने आई है। तुम्हारी और इसकी स्थिति एक-सी है। यह अपने मालिक को एक हजार रुपया देकर उसकी गुलामी से मुक्त होना चाहती है। बेचारी छोटी जात की है।

मनाम ने मन ही मन सोचा, उसकी गुलामी से तुम जैसे आदमी की गुलामी बहुत भयनाक है। भगवान इसकी रक्षा करें।

'तुम चुप क्यों हो!' दयाल ने पूछा।

'मैं सोच रहा था कि आप कितने दयालु हैं।

वह ज़ोर से हंसा, 'आदमी झूठी प्रशंसा करने में माहिर होता है। अनामिका, तुम बाहर बैठो।

इसके बाद दयाल ने गहरा मौन धारण कर लिया। वह गहरा मौन मनाम के लिए असह्य हो उठा। दयाल ने अपने काले कोट की जेब से कागज निकाले और मनाम को हस्ताक्षर करने के लिए कहा।

मनाम ने हस्ताक्षर करने के पूर्व दयाल के कागजों का देखना चाहा।

देखकर वह तनिक स्तंभित-सा हुआ। बोला 'तीन रुपया प्रति सैकड़ा ब्याज !

'किसी वस्तु के अभाव में यह कुछ भी नहीं है। मैं यह रुपया केवल ब्याज के मोह में दे रहा हूँ। कभी-कभी हम सूदखोर ब्याज के मोह में मूल का मिट्टी बना लेते हैं अर्थात् एक भी रुपया वापस नहीं मिलता।

'लेकिन यह ब्याज साहूकारी नहीं है। अनाम के स्वर में शिकायत सी थी।

'साहूकार को एक तो अपनी इज्जत का भय सदा बना रहता है। दूसरा उसका मेरे पास कुछ न कुछ गिरवी होता ही है। तुम्हारे पास क्या है ? कुछ भी नहीं ! एक गरीब चित्रकार हो न मकान है और न सोना ! निरे फकीर। बाप भी है वह भी बीमार। पांच-पांच और छह छह बहिनें तुम स्वयं नंगड़े। कभी सोचा है तुमने आज नई चित्रकारी के दुश्मनों का राज्य भारतवर्ष पर हो जाए तो तुम्हारा क्या होगा ? फिर तुम्हारी कला भी अजब होती है। वह साधारण व्यक्ति की समझ में नहीं आती। एकदम विचित्र' एकदम नई। कौन खरीदेगा उसे ? मुझे तुमपर दया आती है।

अनाम को अपनी निन्दा असह्य लगी। कहीं वह उत्तेजित हो गया तो बना-बनाया काम बिगड़ जाएगा। इसलिए उसने तुरन्त हस्ताक्षर किए और बैसाखी को बगल में दबाकर जल्दी से वहां से निकलना चाहा लेकिन दयाल ने उसे रोक दिया 'रुपया नहीं लोगे ? वह बाहर बैठ गया। अनामिका भीतर आई। दयाल ने उससे पूछा तुम काम करना चाहती हो ?

'हां।

'कितनी तनख्वा लोगी ?

'रोटी-कपड़ा और तीस टका (रुपया) !

दयाल ने अनाम से कहा तुम्हें एक नौकरानी की जरूरत है है क्या हामी ही। यदि मेरी बात मानना चाहते हो तो अनामिका को रख लो तुम्हारा सब काम कर देगी रोटी-कपड़ा और तीस रुपया नकद। दोनों

मंजूर है।

'हां मंजूर।

"फिर सौ रुपये।" उसने सौ-सौ के पांच बहुत पुराने नोट निकालकर धनाम को दिए। धनाम आभार प्रदर्शन करता हुआ चला गया। अनामिका पथराई दृष्टि से धनाम को देखती रही। उसके अन्तस में इस तरुण के प्रति दया की किरणें फूट पड़ीं। अचानक उसके मुंह से निकल पड़ा "बेचारा कितना सुन्दर है मोर की तरह इसके पांव में प्रभु ने कसर रख दी।"

श्याम ने कुटिल हंसी हंसकर कहा "अनामिका तुम्हारा नाम तुमसे मिलता-जुलता-सा है। सुनो यह है धनाम का पता।" उसने एक कागज अनामिका के हाथ में दिया। फिर मुस्कुराकर वह बोला "तुम्हें एक हजार रुपया दस रुपया ब्याज पर दिया है। इसलिए हर सवेरे तुम्हें मेरा काम मुफ्त में करना होगा। चूंकि तुम एक गरीब लड़की हो इसलिए तुम मुझे ब्याज नहीं दे सकोगी मैंने उसका भी प्रबन्ध कर लिया है। जैसे ही तुम्हें धनाम तनखा दे वैसे ही तुम मुझे पन्द्रह रुपया पहुंचा देना।" याद रखना एक सूदखोर ब्याज के मामले में बहुत ही घटिया होता है।

अनामिका ने हाथ जोड़कर कहा "मैं दुखी हूं मुझे सदा अपने पुराने मालिक से भय बना रहता था वह मनुष्य मेरे तन और मन से खेलता था फिर भी मैं उसे कुछ नहीं कहती थी। मैं दिन भर काम-काज में लगी रहती थी थक जाती थी। लेकिन वहां सभी मुझे कामचोर कहते थे।" अनामिका की आंखों में आंसू आ गए। उसने अपना मुंह अपने हाथों में छुपा लिया।

वह पाषाणवत् श्याम न जाने क्यों कांप-सा गया। हकलाता हुआ वह बोला "तुम जाओ तुम जाओ तुम्हें कोई चिंता करने की जरूरत नहीं। सब ठीक हो जाएगा। आखिर तुम्हारी सिफारिश सेठ हुकुमचंद ने की है। मेरा पैसा सुरक्षित है और तुम आजाद हो गई। बस बस!"

अनामिका अपनी आंखों को पोंछती हुई चली गई।

श्याम उन कागजों को एक मजबूत किन्तु पुरानी लोहे की तिजोरी में रखने गया। वह तिजोरी हरे रंग की थी जिसका रंग जगह-जगह से उतर गया था और जिसमें नोटों की गड्डियाँ जेवर और सोने के छोटे-छोटे पासे पड़े थे।

श्याम ने एक बार उन सबपर बड़ी आत्मीयता से हाथ फेरा और तिजोरी बन्द करके विचित्र दृष्टि से कमरे को देखता हुआ बाहर चला गया।

४

इसके पश्चात अनाम का वकील श्याम और अनामिका से सम्बन्ध बढ़ता ही गया। जब श्याम से उसका सम्बन्ध अत्यन्त घनिष्ठ और निकटतम हो गया तब उसने जाना श्याम अत्यन्त कठोर और कृपण मनुष्य है। उसके हृदय में प्यार की एक लहर भी नहीं है। वह पैसों के लिए किसीका लिहाज नहीं रखता। लेन-देन के मामले में न कोई उसका मित्र है और न कोई अपना। किन्तु अनाम यह भी स्वीकार कर सकता था कि श्याम उसके प्रति उतना कठोर नहीं है जितना दूसरों के प्रति। हर माह ब्याज पहुँचाने के बाद वह उसके साथ उदारता का व्यवहार-बर्ताव करता है।

श्याम को अनाम के रुपयों का बड़ा खतरा था। उसने सोच लिया था कि अनाम इस तरह जीवन भर उसके रुपये नहीं दे पाएगा। अतः उसने अनाम के चित्रों की एक प्रदर्शनी का आयोजन किया।

जयपुर के एक कालेज का हाल उसके लिए मांग लिया गया। प्रदर्शनी का उद्घाटन शिक्षा मंत्री से कराया गया। शिक्षा मंत्री ने उसकी कला की सराहना करते हुए कहा 'अनाम जी की कला में विचित्र प्रयोग है। केवल रेखाओं के द्वारा मानव जीवन की अभिव्यक्ति, वह भी प्रभावशाली रूप में उल्लेखनीय है। उन्होंने चित्रकार को अपनी ओर से एक चित्र के पाँच सौ

रुपये लिए। वह भी था महासमर्पण!

जिस दिन अनाम को रुपये मिले उसी दिन श्याम पहुंच गया और अपने पूरे पांच सौ रुपये ले लिए। अनाम चाहता था कि श्याम अभी उससे ढाई सौ रुपये ले ले लेकिन वह इसपर राजी नहीं हुआ। जब अनाम ने अधिक अनुरोध किया तब श्याम बिगड़ गया। बोला 'समय पर दया करने का क्या यही बदला है? मैंने तुम्हारी जाती हुई इज्जत को बचाया था तुमने वचन दिया था। तुम्हें तो मेरी रकम बिना मांगे देनी चाहिए थी।

'श्याम बाबू! मुझे रुपयों की सख्त जरूरत है। इधर दो ट्यूशन भी छूट गए हैं।

'अनाम! रुपया एक ऐसी चीज है जिसकी सख्त जरूरत हर समय हरएक को रहती है। मुझे भी रुपये की सख्त जरूरत है। तुमसे लेकर किसी और को दूंगा।'

आखिर अनाम को रुपये देने पड़े। श्याम ने जाते हुए कहा 'कल घर आकर अपना हैंडनोट ले जाना। देखो भूलना मत क्योंकि मैं जितने सूदखोर होते हैं वे हृदय के बहुत मैले और काले होते हैं। उनकी ईमानदारी पर भरोसा करने वाला कभी न कभी पछताता ही है।

श्याम के चले जाने के बाद अनाम बहुत उदास हो गया। नलिन के विवाह में उसने अपने कई मित्रों से थोड़ा-थोड़ा करके एक हजार रुपये लिए थे वे सभी उसका रास्ता देखेंगे। सभी को थोड़े-थोड़े की आशा है। कुछ पाने की उम्मीद है। इन सब बातों से वह बड़ा व्यग्र हो गया।

रास्ते में वह विचारता जा रहा था 'यदि मैं चित्रकार नहीं होता कितना अच्छा होता? कहीं अच्छी नौकरी मिल जाती हर माह तनखा मिलती। लेकिन उस समय मेरा कोई सम्मान नहीं करता। सभी मुझे एक साधारण व्यक्ति समझकर उपेक्षा की दृष्टि से देखते। आज मुझे लोग एक कुशल प्रयोगवादी आधुनिकतम चित्रकला का एक अच्छा चितेरा मानते हैं और

मेरी कला को समझने वाले मेरा बहुत सम्मान करते हैं। मुझे पलकों पर बिठाते हैं। मेरी बहिन ?

विचार चलचित्र की भाँति पल-पल में बदल रहे थे।

हाँ उस पढ़ी-लिखी भावुक बहिन को दहेज के अभाव में कितना साधारण पति मिला है। एक क्लर्क बी० ए० पास क्लर्क! जो न तो अधिक सुन्दर है और न अधिक चतुर! फिर भी उसके लिए डेढ़-दो हजार रुपये खर्च हो गए। खर्च बढ़ता ही जा रहा है।

फिर उसका सम्बन्ध उच्च मध्यवर्ग और पूंजीपति वर्ग से दिनोंदिन बढ़ रहा था जिससे उसके खर्च में वृद्धि हो रही थी पर आय में नहीं। वह जो थोड़ा-बहुत ट्यूशन और पत्रों से कमाता था उसमें से एक पैसा भी नहीं बचा सकता था। उसे दिन प्रतिदिन अपना रहन-सहन ऊँचा करना पड़ रहा था। उसे अपना होटलों का खर्च बढ़ाना पड़ रहा था। हर तरफ से खर्च बढ़ता ही गया और आय के बढ़ने का कोई जरिया नहीं बना। निदान वह बहुत तंग हो गया। जब भाग्य ने उसपर तनिक भी रहम नहीं दिखाया तब वह अपने घर में आकर टूटा हुआ-सा पड़ गया।

थोड़ी देर के बाद इन्दु आई। इस बीच इन्दु की जान-पहचान अनाम से काफी हो चुकी थी। अनाम उसकी ओर तीव्र रूप से आकर्षित था। वह अपने जीवन की विषमताओं व अभावों को विस्मृत करके इन्दु के समक्ष— मैं अत्यन्त भाग्यशाली और सुखी चित्रकार हूँ—का प्रदर्शन किया करता था। इस मिथ्या बातों से उसके अन्तस् को सुख मिलता था।

अभी अनाम दुश्चिन्ताओं से घिरा हुआ था। उसे भय लग रहा था कि जैसे ही उसके मित्रों को इस बात का पता लगेगा कि उसको पाँच सौ रुपये मिले हैं वैसे ही वे अपने रुपयों की माँग कर बैठेंगे और न मिलने पर उसे एक अविश्वासी मित्र मानेंगे? पर वह करे भी तो क्या? पठान जैसे हृदयहीन प्राणी के चंगुल से बचकर निकलना भी सहज नहीं। कहाँ से उसे पता लग

रुपये लिए। यह मित्र का महासमर्पण!

जिस दिन अनाम को रुपये मिले उसी दिन दयाल पहुँच गया और अपने पूरे पाँच सौ रुपये ले लिए। अनाम चाहता था कि दयाल अभी उससे ढाई सौ रुपये ले ले लेकिन वह इसपर राजी नहीं हुआ। जब अनाम ने अधिक अनुरोध किया तब दयाल बिगड़ गया। बोला 'समय पर मदद करने का क्या यही बदला है! मैंने तुम्हारी जाती हुई इज्जत को बचाया था तुम्हें जीवन दिया था। तुम्हें तो मेरी रकम बिना मांगे देनी चाहिए थी।

'दयाल बाबू! मुझे रुपयों की सख्त जरूरत है। इधर दो ट्यूशन भी छूट गए हैं।

'अनाम! रुपया एक ऐसी चीज है जिसकी सख्त जरूरत हर समय हरएक को रहती है। मुझे भी रुपये की सख्त जरूरत है। तुमसे लेकर किसी और को दूंगा।

आखिर अनाम को रुपये देने पड़े। दयाल ने जाते हुए कहा 'कल घर आकर अपना ईजलोट ले जाना। देखो भूलना मत क्योंकि ये जितने बुद्ध और होते हैं वे हृदय के बहुत मैले और काले होते हैं। उनकी ईमानदारी पर भरोसा करने वाला कभी न कभी पछताता ही है।

दयाल के चले जाने के बाद अनाम बहुत उदास हो गया। बहिन के विवाह में उसने अपने कई मित्रों से थोड़ा-थोड़ा करके एक हजार रुपये लिए थे वे सभी उसका पल्ला खींचेंगे। सभी को थोड़े-थोड़े की आशा है। कुछ पाने की उम्मीद है। इन सब बातों से वह बड़ा व्यग्र हो गया।

रास्ते में वह विचारता जा रहा था 'यदि मैं चित्रकार नहीं होता कितना अच्छा होता? कहीं अच्छी नौकरी मिल जाती हर माह तनखा मिलती। लेकिन उस समय मेरा कोई सम्मान नहीं करता। सभी मुझे एक साधारण व्यक्ति समझकर उपेक्षा की दृष्टि से देखते। आज मुझे लोग एक कुशल प्रयोगवादी आधुनिकतम चित्रकला का एक अच्छा चितेरा मानते हैं और

मेरी कला को समझने वाले मेरा बहुत सम्मान करते हैं। मुझे पलकों पर बिठाते हैं। मेरी बहिन ?

विचार चलचित्र की भांति पल-पल में बदल रहे थे।

हां उस पढ़ी-लिखी भावुक बहिन को दहेज के अभाव में कितना साधारण पति मिला है। एक क्लर्क बी० ए० पास क्लर्क ! जो न तो अधिक सुन्दर है और न अधिक चतुर ! फिर भी उसके लिए डेढ़-दो हजार रुपए खर्च हो गए। खर्च बढ़ता ही जा रहा है।

फिर उसका सम्बन्ध उच्च मध्यवर्ग और पूंजीपति वर्ग से दिनोदिन बढ़ रहा था जिससे उसके खर्च में वृद्धि हो रही थी पर आय में नहीं। वह जो थोड़ा-बहुत ट्यूशन और पत्रों से कमाता था उसमें से एक पैसा भी नहीं बचा सकता था। उसे दिन प्रतिदिन अपना रहन-सहन ऊंचा करना पड़ रहा था। उसे अपना होटलों का खर्च बढ़ाना पड़ रहा था। हर तरफ से खर्च बढ़ता ही गया और आय के बढ़ने का कोई जरिया नहीं बना। निदान वह बहुत तंग हो गया। जब श्याम ने उसपर तनिक भी रहम नहीं दिखाया तब वह अपने घर में आकर टूटा हुआ-सा पड़ गया।

थोड़ी देर के बाद इन्दु आई। इस बीच इन्दु की जान-पहचान अनाम से काफी हो चुकी थी। अनाम उसकी ओर तीव्र रूप से आकर्षित था। वह अपने जीवन की विषमताओं व अभावों को विस्मृत करके इन्दु के समक्ष—मैं अत्यन्त भाग्यशाली और सुखी चित्रकार हूं—का प्रदर्शन किया करता था। इस मिथ्या बातों से उसके अहम् को सुख मिलता था।

अभी अनाम दुश्चिन्ताओं से घिरा हुआ था। उसे भय लग रहा था कि जैसे ही उसके मित्रों को इस बात का पता लगेगा कि उसको पांच सौ रुपये मिले हैं वैसे ही वे अपने रुपयों की मांग कर बैठेंगे और न मिलने पर उसे एक अविश्वासी मित्र मानेंगे ? पर वह करे भी तो क्या ? श्याम जैसे हृदयहीन आदमी के सम्मुख न बचकर निकलना भी सहज नहीं। कहां से उसे पता लग

गया कि उसे आज रुपया मिलेगा ? कैसे वह उसके पीछे-पीछे चला आया ? 'भूत है भूत ! उसमें घृणा से ब्याज के नाम पर थूकना चाहा पर इन्दु के आगमन ने उसे ऐसा नहीं करने दिया। वह हंसता हुआ-सा बोला 'आज यहां अचानक आना कैसे हुआ ? तबियत तो है ?

'बड़े अनजान बन रहे हो ?

'क्यों ?

'पांच सौ रुपये क्या अकेले ही हजम करना चाहते हो ?

ओह ! वह गंभीर हो गया 'यह कैसे हो सकता है इन्दु, तुम्हारे बिना अनाम इन रुपयों का उपयोग नहीं कर सकता। बोलो कहां चलोगी ?

'चौधरी रेस्त्रां में।

'मैं अभी तैयार होता हूं।

अनाम ने झट से कपड़े पहने और चल पड़ा। चौधरी रेस्त्रां एक उच्च स्तर का रेस्त्रां है। वहां अनाम के पचीस रुपये खर्च हो गए। मन से न चाहते हुए भी उसने इन्दु के समक्ष अत्यन्त दरियादिली का परिचय दिया।

रात को वह लौटा। अनामिका भोजन बनाकर बैठी हुई थी। समीप बरखा अपने मन्तव्य की कसम का परिचय दे रही थी। वह कह रही थी 'यह इन्दु अनाम बाबू को अपने प्रेम-जाल में फंसा रही है। एक साधारण अध्यापिका का चरित्र कैसा हो सकता है वह तुमसे नहीं छिपा है अनामिका दीदी ?

अनामिका ने बरखा को समझाया 'किसी पर लांछन लगाना ठीक नहीं है। सभी आदमी अच्छे होते हैं और सभी बुरे।

'लांछन नहीं लगा रही दीदी ये नर्सें और ये अध्यापिकाएं कभी भी चरित्र की अच्छी नहीं होतीं। अपने अनाम बाबू बड़े भोले हैं वह इन्दु की मीठी-मीठी बातों में आ गए। 'तुम याद रखना एक न एक दिन यह अनाम बाबू से सम्बन्ध खत्म करेगी।

बैसाखी की 'खट्-खट्' सुनते ही बरदा चुप हो गई। अनामिका ने इस तरह का भाव बनाया जैसे वह बहुत देर से अपने आपमें खोई हुई है। किवाड़ों के पास 'खट्-खट्' आने के साथ ही बरदा उठकर चली गई। अनाम न सहजता से पूछा 'मेरे आते ही चल पड़ी।

'हां मां पुकार रही है।

अनाम ने कुछ नहीं कहा। वह भीतर चला आया। बैसाखी को दीवार के सहारे खड़ा करके वह कुर्सी पर बैठ गया। मुंह पर हाथ फेरकर उसने एक गहरा निश्वास लिया।

अनामिका ने आकर पूछा खाना लाऊं?

'नहीं।

'क्यों?

'मैंने बाहर खाना खा लिया।

'फिर आपने मुझे कहा क्यों नहीं?

'तुम घर में नहीं थीं इसी बीच इन्दु आ गई और मैं उसके साथ चला गया।

'बाबा रे बाबा इन्दु ने आपपर क्या जादू कर दिया है कि आप उसके इशारों पर नाचने लगे! उसे तुरन्त बरदा की बात याद हो आई।

अनाम ने इसका कोई उत्तर नहीं दिया। वह घर्म भरी दृष्टि से अनामिका को देखता रहा। अनामिका पर उस दृष्टि की कोई प्रतिक्रिया नहीं हुई। वह निर्विकार भाव से बोली 'बुरा न मानें तो मैं आपको एक बात कहती हूं।

'कहो? अनाम की दृष्टि में गुमसता थी।

'आप इन्दु से शादी कर लीजिए।

जैसे हृदय वीणा के सभी तारों को झनझना दिया हो ऐसा प्रतीत हुआ अनाम को। वह एकटक अनामिका के मुस्कराते हुए चेहरे को देखता रहा।

तब वह शांति से बोला 'मैं किसीसे विवाह कैसे कर सकता हूं मेरे पास पैसा नहीं है मेरी कोई स्थायी और पक्की आय नहीं है। अपने, दादी सहज नहीं है।' अनामिका कुछ बोले इसके पहले ही अनाम फिर बोल उठा, 'आज मुझे पांच सौ रुपए मिले सोचा बहिन के विवाह का कुछ कर्ज चुकाऊंगा। कुछ मित्रों को थोड़ा-थोड़ा देकर उनको धीरज दूंगा। पर दयाल बाबू बीच में ही आ टपका और सब कुछ छीन कर ले गया। अनामिका ऐसा दयाहीन आदमी मैंने कहीं भी नहीं देखा। 'मैंने उसे कहा कि तुम आधा ले लो पर नहीं पूरे अपने पांच सौ रुपये लिए। अब बताओ कि मुझे उन लोगों के सामने कितना शर्मिंदा होना पड़ेगा।'

अनामिका ने अनाम की बात का कोई उत्तर नहीं दिया और वह चली गई। जाते-जाते उसका चेहरा गंभीर हो गया।

दूसरे ही दिन सवेरे अनामिका ने दयाल के पास से अनाम को ढाई सौ रुपए लाकर दे दिए। अनाम का हृदय उस नारी के प्रति श्रद्धा से भर आया। उसने कुछ कहना चाहा पर अनामिका ने मनाकर दिया। बस इतना ही कहा 'आप जाकर दयाल बाबू के कागज पर हस्ताक्षर कर आइएगा।

उस घटना से आज तक दयाल अनाम के प्रति उतना कठोर नहीं बना जितना औरों के प्रति बनता था। अनाम का जीवन पूर्ववत् ही था। अनामिका उसकी दासी अथवा उसकी पड़ोसिन और प्रभु उसकी प्रेमिका!

बस ये ही जीवन के इर्दगिर्द दौड़ने वाले चरित्र!

५

प्रभात की स्वर्णिम किरणें ऊंचे-ऊंचे मकानों की दीवारों का चुम्बन लेती हुई नाच रही थी। अनाम ने सूरज की ओर पड़ने वाली खिड़की को खोला ताकि धूप कमरे में आ जाए।

अनामिका अभी तक नहीं आई थी। इधर कुछ दिनों से उसकी तबीयत

ठीक नहीं थी।

बरदा ने किवाड़ खटखटाए। धनाम ने बगल में बैसाखी दबाकर द्वार खोला। बरदा चाय लाई थी।

'मन्नो दीदी की आज्ञा है कि जब तक वह न आए तब तक मैं आपको चाय का प्रबन्ध कर दिया करूं।

धनाम ने कोई उत्तर नहीं दिया। वह चुपचाप अपनी कुर्सी पर बैठकर चाय पीने लगा।

बरदा बोली 'आप हमारे साथ सिनेमा नहीं गए पर इन्दु के साथ !

बीच में ही धनाम बोला 'बरदा मैं और इन्दु जिस काम के लिए गए थे वह काम नहीं बना तो हम सिनेमा देखने चले गए।

वह रूठती हुई बोली 'सच क्यों नहीं कहते कि मुझ जैसी काली लड़की के साथ आपको सिनेमा देखना अच्छा नहीं लगता।

'यह बात नहीं है बरदा मैं तुम्हारे साथ कई बार सिनेमा देख चुका हूं।

'झूठ क्यों बोलते हैं? आप मेरे साथ सिनमा देखन चले थे कि म आपको जबरदस्ती ले गई?

'तुम जैसा भी चाहो सोच सकती हो इसकी तुम्हें स्वतंत्रता है। बरदा मैं किसीके हृदय को नहीं दुखाता। सच यह इन्दु से मैं प्यार करता हूं। मैं चाहता हूं कि वह मुझसे खुश रहे। कदाचित उसको खुश करने में तुम्हारा अपमान भी हो सकता है पर मुझे विश्वास है कि तुम उसका बुरा नहीं मनोगी? तुम मेरी मजबूरी समझोगी।

बरदा को धनाम से ऐसे शब्दों की आशा नहीं थी। वह स्वयं धनाम पर अपना अधिकार समझती थी। सोचती थी कि यदि वह जोर लगाएगी तो धनाम उसके प्यार को स्वीकार कर सकता है। किन्तु आज अचानक धनाम न उसके भ्रम के आवरण को विदीर्ण कर दिया। वह विस्मित-सी ठगी-सी धनाम को देखती रही। धनाम अपनी दृष्टि को बैसाखी किरणों पर जमाकर

बोला 'बरखा मेरे स्नेह को गलत मत समझना इस मकान में एक शरीफ व्यक्ति होकर रहना चाहता हूं। तुम्हारे बाबा (पिता) और तुम्हारी मां मुझे अपना बेटा समझते हैं। मैं उनके विश्वास को तोड़ना नहीं चाहता। मैं उनके हृदयों पर आघात नहीं पहुंचाना चाहता।

बरखा प्याला लेकर चली गई।

अनाम लापरवाही से अपने आपसे बोला 'यह काली लड़की अपने आपको क्या समझती है! मुझे पहले ही कुछ अन्देशा था कि यह मुझे अपने जाल में फंसाएगी। छि: न रंग और न रूप!

उसने उठकर अंगड़ाई ली और फिर गुसलखाने में चला गया।

अनामिका आ गई थी। वह स्टोव जलाकर चाय बनाने लगी। आज उसने हरे रंग की साड़ी और नीला ब्लाउज पहन रखा था। इधर उसका चेहरा सफेद हुआ जा रहा था। बार-बार पूछने पर भी अनाम उससे संतोषप्रद उत्तर नहीं पा रहा था। वह अनाम को यह कहकर टाल देती थी कि वह बीमार है उसे पेट की शिकायत है।

अनामिका अनाम के लिए सोचने का विषय थी। वह नारी रहस्य-मयी-सी उसके सम्मुख खड़ी थी। एक ज्वलंत प्रश्न अनाम के मस्तिष्क में अनामिका को लेकर घूमा करता था। अनामिका बीस वर्ष को पार कर रही थी। उसने उसे कभी प्रेम और परिवार के बारे में बातचीत करते नहीं देखा। वह शांत और मौन रहती थी। जब कभी अनाम को उदास देखती तब वह उसकी उदासी को दूर करने का प्रयत्न करती थी। अनाम न अनामिका को कभी हंसते-मुस्कराते देखा था।

एक बार अनाम ने अनामिका से पूछा था 'तुम्हारा गहरा मौन मेरी चिंता का कारण बन जाता है।

आप मेरी चिंता न कीजिए अनाम बाबू कुछ ऐसी स्त्रियां होती हैं

जिनके जीवन में घोर एकान्त के अतिरिक्त कुछ होता ही नहीं। चरम दुःख उनके जीवन का प्रतिरूप होता है।

'इन बातों से मेरे प्रश्न का उत्तर नहीं मिलता। मम्मो ! क्या तुम्हारा विवाह हो गया ?

'नहीं।

'फिर तुम विवाह क्यों नहीं करती ?

अनामिका के चेहरे पर तरस भरी हंसी बिखर गई, 'एक दासी के साथ कौन विवाह करेगा ? फिर मां के आंचल पर लगा कलंक ? अनाम बाबू मां का कलंक उसकी सन्तान को भी कलंकित कर देता है। और फिर मैं मां को छोड़कर कहीं भी जाना नहीं चाहती। वह पोड़ामों के मामले में धरती माता है।

अनाम ने देखा कि अनामिका के चेहरे पर अवसाद की घटाएं उमड़ आई हैं।

'आप बार-बार पूछा करते हैं मेरे बारे में जानने की इच्छा रखते हैं चाहकर भी मैं अपने बारे में आपको नहीं बताना चाहती।

'क्यों ?

'आप चित्रकार हैं आपके बारे में लोग कहते हैं कि आपमें मनुष्यता' कूट-कूटकर भरी हुई है लेकिन मैं ऐसा नहीं समझती। मैं इतना ही जानती हूं कि कलाकार भी एक साधारण मनुष्य होता है।

'लेकिन तुम्हारी मां ने कौन-सा पाप किया ?

'वह अपने पति को छोड़कर भाग गई। मैं वर्णसंकर हूं, मेरे बाप का कोई पता नहीं और न ही मेरी मां मुझे यह बताना चाहती है। भावावेग में उसे जो न कहना था न वह भी कह गई। उसके हृदय पर झटका-सा लगा।

अनाम ने तुरन्त प्रश्न किया 'फिर भी तुम अपनी मां की इतनी सेवा करती हो ?

'वह माँ है, बस इसीलिए।

इस उत्तर ने अनाम के मस्तिष्क में अनामिका के लिए आदर की सर्जना कर दी। वह अनामिका के सुख और दुःख का यथेष्ट ध्यान रखने लगा।

गुसलखाने के किवाड़ खोले साथ ही केतली की 'खट्-खट्' सुनाई पड़ी। अनामिका ने तुरन्त चाय की ट्रे अनाम की मेज पर रख दी। अनाम ने बैठते ही कहा 'जब तुम्हारी तबीयत खराब थी तब तुम यहाँ क्यों आईं?

'बेकार बैठे बैठे मन नहीं लगा।

'लेकिन तबीयत अधिक खराब हो गई तब?

'तब अपने आपको ईश्वर के सहारे छोड़ दूँगी। वह तुरन्त बात बदल-कर बोली 'आपको श्याम बाबू ने कहलवाया है कि आप भंवर बाबू के यहाँ चले जाएँ।

'मैं! क्यों?

'वे इन्दु की पुस्तक भंवर बाबू द्वारा छपवा देंगे! आज सवेरे के बाद वे मुझे अपने एक 'मुवक्किल' के यहाँ जाते हुए मिल गए थे। अचानक भृकुटियाँ तानते हुए बोले जैसे वे मुझे सवेरे इस बात को कहना भूल गए थे।

'अच्छा कल तो उन्होंने साफ इन्कार कर दिया था। कह रहे थे कि सोना बनाने की योजना बताओ।

'आप इन्दु को लेकर भंवर बाबू के यहाँ चले जाइएगा। मैं समझती हूँ कि आपका काम बन जाएगा। इससे अधिक मैं कुछ नहीं जानती।

'बड़ा विचित्र आदमी है। अनाम ने धीरे से कहा और फिर चाय पीने लगा। क्या उस राक्षस के मन में भी इस दासी के प्रति ? एक प्रश्न अनाम के मस्तिष्क में उछलकर नाचने लगा।

वह चाय पीकर तुरन्त इन्दु के यहाँ जाने को तत्पर हो गया। अनामिका को उसने खाना न बनाने के लिए कह दिया। जब वह इन्दु के घर

पहुंचा तब इन्दु की विधवा मां खाना बना रही थी। उसकी बैसाखी की 'खट्-खट्' सुनकर उसने भीतर से ही इन्दु को आवाज दी। इन्दु ने उसे ऊपर आने को कहा। वह धीरे धीरे सीढ़ियां चढ़ता हुआ कमरे में गया। उसका सांस फूल गया था। वह धम से एक कुर्सी पर बैठ गया। इन्दु ने उसके कन्धों पर हाथ रखते हुए कहा 'तुम्हें ऊपर चढ़ने में बड़ा कष्ट होता है?

सलाम ने इन्दु की ओर देखा। उसकी आंखों में क्या अंगारे-सी दहक रही थी। वह मन ही मन गुस्से में भर उठा पर ऊपर से स्वाभाविक स्वर में बोला 'नहीं नहीं मुझे जरा भी कष्ट नहीं होता तुम एक गिलास पानी का पिलाओ न?

उसने पानी इस तरह पिया जैसे वह अत्यन्त प्यासा है। पानी पीकर उसने एक गहरा सांस लिया। सांस लेकर वह बोला 'तुम्हें स्कूल कितने बजे जाना है? क्या तुम आज छुट्टी नहीं ले सकती?

'आज मैंने छुट्टी पहले से ही ले रखी है।

'फिर तुम तैयार हो जाओ हमें शंकर बाबू के यहां जाना है। तुम्हारी पुस्तक शीघ्र ही प्रकाशित हो जाएगी ऐसा मेरा ख्याल है।

इन्दु की आंखों में चमक आ गई। वह भीतर के कमरे से कपड़े बदलती हुई बोली 'कभी-कभी घटनाएं बड़ी तेजी से घटती है जिनपर हम आसानी से विश्वास भी नहीं कर सकते। कल हम निराश हो चुके थे पर आज आशा हमारे सम्मुख फिर जाग उठी है। तभी हमें न चाहते हुए भी दैवयोग को मानना पड़ता है। सलाम! क्या हमारे मिलन को तुम दैवयोग नहीं मानते?

'मानता हूं।

'तुम्हारा वह चित्र देखकर मुझे ऐसा लगा कि तुम्हारे चित्र मनुष्य को पौरुषहीन बनाते हैं। जीवन को मृत्यु परास्त कर दे यह भाव अच्छे नहीं था भी तुम्हारी शैली के चमत्कार के कारण वह चित्र प्रभावशाली हो गया था।

भौर मुझे वह चित्र इतना प्रिय लगा कि मैंने उसकी चर्चा अपने कई परिचितों में की। उसमें एक विचित्र आकर्षण था जो आदमी को एक नये ढंग से प्रभावित करता था। फिर हमारे स्कूल में उत्सव! हमारी भेंट! प्रगाढ़ मित्रता और ! इन्दु हठात् चुप हो गई। अनाम अगला वाक्य सुनने के लिए उत्तेजित हो उठा। वह शीघ्रता से अपनी बैसाखी पर हाथ फेरता हुआ बोला 'और क्या इन्दु ?

'और तुमने मुझे लेखन के क्षेत्र में सहयोग दिया फलस्वरूप मैं हिन्दी की एक अच्छी लेखिका बन गई। हालांकि यह 'पेशा' बहुत कम माव वाला है किन्तु इसमें मनुष्य को बड़ा सम्मान मिलता है और मैं सम्मान को सबसे अधिक महत्व देती हूं।

अपनी आशा पर तुषारापात होते देख अनाम ने बात को पुनः उसी तारतम्य पर लाकर कहा 'तुम कहना कुछ और चाहती थीं और कह गईं कुछ और।

इन्दु बाहर आ गई थी। उसने हिंगलूम की एक सुन्दर चौड़ी किनारी की साड़ी पहन रखी थी। ललाट पर छोटी गोल बिन्दु और हल्का कजरा। अनाम क्षण भर के लिए स्तब्ध हो गया।

इन्दु भौंहे टेढ़ी करके बोली 'मैं क्या कहना चाहती थी ?

अनाम बैसाखी को बगल में दबाकर उठता हुआ बोला 'यह तुम्हीं बता सकती हो। तुम्हारे अन्तर्मन के भावों को मेरी जिह्वा वाणी का रूप नहीं दे सकती।

बैसाखी की 'खट्-खट्' की फिर गूंज हुई। अनाम अब बिलकुल रोमांटिक मुद्रा में इन्दु के समीप खड़ा था। इन्दु ने उसका हाथ पकड़ा और मृदु स्वर में बोली 'तुम्हारे कलाकारों का समाज आजकल हमारी बड़ी चर्चा करने लगा है। वे जलन करने वाले प्रतिद्वन्द्वियों की तरह हमारे बारे में अनर्गल प्रलाप और निराधार दिल्ली प्रेम चलाएं कर रहे हैं। अनाम !

क्या ऐसी बकवास सुनकर तुम विचलित नहीं होते ?

अनाम ने कोई उत्तर नहीं दिया। वह इस चर्चा को यहीं पर खत्म कर देना चाहता था। वह इन्दु की माँ के समक्ष किंचित् भी विस्मृता बनने को तैयार नहीं था। क्योंकि वह जानता था कि आर्थिक रूप से अवलम्बित इन्दु की माँ इन्दु के विवाह में कम इच्छुक है और थोड़ी बहुत है भी तो वह ऐसा वर चाहती है जो उसे नौकरी करना न छुड़ाए। अनाम यह भी भली भाँति जानता था कि उसके पास कोई सरकारी नौकरी नहीं है वह करना भी नहीं चाहता ओवर-एज भी हो गया है और फिर जो स्वतंत्रता और सम्मान इस काम में है वह किसी भी काम में नहीं।

अनाम और इन्दु घर से बाहर आ गए थे। अनाम बात करने के मूड में था अतः उसने टैक्सी ली। टैक्सी में बैठने के साथ ही अनाम ने कहा 'अब बताओ तुम उस समय क्या कह रही थीं ?

मैं कह रही थी कि क्या इन निराधार चर्चाओं से तुम परेशान नहीं होते ? उसने नितान्त सहज भाव से कहा।

'नहीं !

'क्यों ?

'क्योंकि इन चर्चाओं में सत्य का आधार बोलता है। क्या तुम मेरे और तुम्हारे सम्बन्धों के बीच इस कोण से नहीं सोचती कि हमारे अत्यन्त गहरे सम्बन्ध हैं ?

'सम्बन्ध प्रेम का रूप नहीं ले सकते। वे गहरी मित्रता की संज्ञा अवश्य पा सकते हैं।

'सम्बन्ध ही आगे चलकर गहरे प्रेम का रूप ले लेते हैं। दो अपरिचित व्यक्ति मिलते हैं मित्र बनते हैं मित्रता बढ़ती है मित्रता प्रेम का रूप धारण करके विवाह के पवित्र बन्धन में बंध जाती है।

'फिर मुझे सावधान हो जाना चाहिए। इन्दु के मुख पर चंचलता थी

थी मनाम को बहुत भाई।

मनाम के मन में आया कि आज वह इन्दु को अपने प्यार के बारे में स्पष्ट कह दें पर उसका साहस नहीं हुआ। प्रेम का स्पष्ट बखान उसे पूहड़पन और मूर्खता का परिचायक लगा। यह तो एक अहसास की चीज है। जिसे वह भी जानता था और इन्दु भी जानती थी।

बाएं !

टैक्सी मुड़ चली। इन्दु ने अपनी गर्दन दूसरी ओर कर ली। मनाम भी विचारों में खो गया। आज से पांच वर्ष पहले वह जोधपुर में था। इसी प्रकार उसका प्रतिमा से प्यार हुआ था। प्रतिमा उसपर जान देती थी और वह भी प्रतिमा के बिना एक पल भी नहीं रह सकता था किन्तु प्रतिमा के माता-पिता एक लंफगे के साथ अपनी बेटी को बांधने को तैयार नहीं हुए। इस बात का पता जब मनाम के मित्रों को लगा तो उनके मन की घृणा भड़क उठी और उन्होंने विचित्र कथाएं गढ़ लीं। एक मित्र ने तो एक कहानी ही बना डाली। मनाम का हाथ अपनी टांग पर चला गया। वह टांग पर हाथ फेरने लगा। भंवर बाबू की कोठी आ गई थी। टैक्सी रुकी और मनाम और इन्दु दोनों ने दरबान को भीतर सूचना पहुंचाने के लिए कहा।

एक भव्य कोठी। संगमरमर और सीमेंट की बनी। राजसी सामन्तों जैसे ठाट और रौनक।

वे दोनों विस्मित दृष्टि से देखते रहे।

भंवर बाबू ने बाहर आकर सस्मित मुख से उनका स्वागत किया। वे उन्हें एक आलीशान कमरे में ले गए जिनको इन्दु एकटक देखती रही। जैसे उसे ऐसे व्यवस्थित और आधुनिक सामान से सज्जित कमरे अत्यन्त प्रिय हों। भंवर बाबू उसकी बात को समझ गए। तनिक मुस्कराकर बोले 'इन्दु जी कमरा पसन्द आया ?

'बहुत ! उसने इस तरह कहा जैसे कोई बच्चा अजीब वस्तु देखकर खुशी में झूमता है।

पथ्यू ! आप बैठिए प्रनाम जी ! आपको खड़े होने में कष्ट होगा। भंवर बाबू ने स्नेहमिश्रित स्वर में कहा 'आइए इन्दु जी मैं आपको मकान दिखाऊं।

इन्दु ने प्रश्न भरी दृष्टि से प्रनाम की ओर देखा। भंवर बाबू चौंकते हुए बोले 'ओह ! प्रनाम जी मेरे मकान को पहले ही देख चुके हैं। व्यर्थ में चढ़ने-उतरने की तकलीफ इन्हें नहीं देनी चाहिए।

प्रनाम के मन में आया कि वह इस सेठ के बच्चे के सिर पर बैसाखी दे मारे। क्या देवता बन रहा है ? लंगड़ा हूं तो क्या अभी तुमसे अधिक चल सकता हूं।

घृणा से उसका मुख विकृत हो गया किन्तु वह नहीं बोला और न ही किसीने उसके चेहरे को देखा।

इन्दु और भंवर बाबू बाहर चले गए।

इन्दु भंवर बाबू के ऐश्वर्य से बहुत प्रभावित हुई। प्रत्येक कमरे की प्रशंसा के साथ-साथ भंवर बाबू इन्दु की कहानियों की प्रशंसा कर दिया करते थे। प्रनाम के चित्रों के बारे में भंवर बाबू की और इन्दु की राय पर स्वर मिल गई जिससे इन्दु को गौरवानुभूति हुई। उसे लगा कि उसका सोचना सही है।

प्रनाम घोर एकान्त में बैठा हुआ भंवर बाबू और इन्दु के प्रति द्वेष भरे मौन उद्गार छोड़ रहा था। उसका मन ईर्ष्या के कारण जल रहा था। यदि वह इन्दु को प्यार नहीं करता तो इसी समय यहां से उठकर चला जाता। ऐसी धृष्टता उसके लिए असह्य थी। तभी उसके कानों में गर्म तेल-सी इन्दु और भंवर बाबू की मुक्त सम्मिलित हंसी पड़ी। वह विवश नायक की भांति उत्तेजित हो गया। उसने चाहा कि वह इन्दु को जाकर कहे

कि एक अपरिचित सेठ के समक्ष प्रथम भेंट में अपने को इतना बिह्वल नहीं बनाना चाहिए। इससे व्यक्ति की गंभीरता खत्म हो जाती है। लेकिन ये सब उसके मन के दुराव थे जिन्हें वह अपनी इच्छानुसार पका रहा था।

अप्रत्याशित हल्की हंसी के साथ इन्दु और भंवर बाबू ने कमरे में प्रवेश किया। अनाम की आकृति को देखकर चतुर व्यापारी भंवर बाबू तुरन्त समझ गए कि इसके दिल पर क्या गुजर रही है। क्षमा-याचना करते हुए बोले 'कुछ समय अधिक लग गया अनाम जी आपकी बहू इन्दु हर बस्तु में दिलचस्पी लेती है।

उसने कृत्रिम सहजता से कहा 'कोई बात नहीं। इनको संतोष तो हो गया। इनको आपका मकान पसंद आया कि नहीं?

इन्दु अपने शब्दों पर जोर देती हुई बोली 'मुझे हर अच्छी चीज पसंद आती है चाहे वह अपनी हो या पराई। सच भंवर बाबू के मकान में रहने की इच्छा होती है।

इसपर भंवर बाबू चुप रहे। नौकर चाय और कुछ पापड़ तलकर ले आया था। इन्दु ने सबको चाय बनाकर दी। कुछ देर व्यर्थ का मौन छाया रहा।

भंवर बाबू ने ही मौन भंग किया 'दयाल ने कल अप्रत्याशित आपके कहानी-संग्रह की बात चला दी।

अनाम ने बीच में ही कहा 'भंवर बाबू! इसकी कहानियां बड़ी प्रभावित करती हैं। सर्जन के मामले में इसका हृदय अनोखा है। शैली कथावस्तु और मार्मिक चरित्र-चित्रण में ये नवीन पीढ़ी के कथाकारों के साथ सहजता से बैठ सकती हैं।

'मैं आधुनिक साहित्य पढ़ता रहता हूं। साहित्य की ओर मेरी महरी दिलचस्पी है। मैं अमूमन राजस्थानियों से भिन्न हूं। मेरे जीवन का मूल ध्येय पैसा नहीं आनंद है। आनंद भी सोद्देश्य। उद्देश्यहीन आनंद में मेरा

विश्वास नहीं। मैं चाहता हूँ कि एक प्रकाशन-संस्था खोलूँ।

'यह तो बहुत अच्छी बात है।

'मैं कुछ रुपया लगा सकता हूँ। पहले मेरा एक पत्र निकालने का विचार था पर मैंने वह विचार बदल दिया है। दयाल ने मुझे इन्दु जी के बारे में बताया। वैसे स्त्रियों के मामले में वह निरा कोरा है। प्यार और रोमान्स पर वह सर्वथा बेरुखी से बातचीत करता है। लेकिन इन्दु जी के बारे में उसने गहरी तो नहीं फिर भी तनिक दिलचस्पी दिखाई। इनकी एक कहानी की प्रशंसा भी की।

इन्दु ने गर्व से कहा 'उस कहानी को मैंने बड़ी मेहनत से लिखा है। ऐसा कहते समय उसकी दृष्टि मनाम पर जम गई। मनाम पूर्ववत गंभीर था जैसे उसके चेहरे पर कोई नये भाव नहीं आए हैं।

नंबर बाबू ने बात के सिलसिले को जोड़ते हुए कहा 'इस राजधानी में वैसे सैकड़ों लेखक हैं। बड़े-बड़े सेठों की जी हुजूरी करते वाले उनके नेता लिखकर आजीविका कमाने वाले उनकी झूठी प्रशंसा करके अपने मासिक और दैनिक पत्र चलाने वाले तथा उन्हें व्यर्थ में साहित्यकार कहकर पैसा ऐंठने वाले। वस्तुतः यहाँ साहित्यिक व्यापारी बहुत अधिक हैं। और तो और यह राजधानी साधना की कम पर दिखावट की बड़ी दुकान है। ऐसी स्थिति में मेरे द्वारा प्रकाशन-संस्था का संचालन कुछ व्यक्तियों की दृष्टि में निहित स्वार्थों का प्रतीक माना जा सकता है किंतु इसमें ऐसा कोई स्वार्थ नहीं है। मैं विशुद्ध रूप से साहित्य-सेवा करना चाहता हूँ।

'इसका मतलब है आप बड़े पैमाने पर यह कार्य करना चाहते हैं।

'नहीं। उसने गर्दन को झटका देकर कहा 'मैं फिलहाल बड़े रूप में इसे नहीं खोलना चाहता। मैं केवल आपकी और इन्दु जी की सभी पुस्तकें छापने का विचार रखता हूँ। मैं आपके चित्रों का एक एलबम तथा आपकी चित्र-शैली पर विभिन्न आलोचकों के लेखों का संग्रह छापना

चाहता हूँ।

अनाम ने तुरन्त कहा 'यह तो और अच्छा रहेगा। स्थानीय लेखकों न तो लेखक की संज्ञा देना ही साहित्य का अपमान है। भंवर बाबू, यहां लेखक चिन्तन-मनन के नाम पर शून्य हैं। न इन्होंने फ्रायड को पढ़ा और मार्क्स को। युंग हैवलाक एलिस और सार्त्र के कदाचित् नाम भी न जानते होंगे। आज मनोविज्ञान का जमाना है। भला इनके पढ़े बिना को साहित्यकार जीवित रह सकता है! और पिकासो यामनाग पोल बोच यामिनीराय सुमा टैगोर आदि चित्रकारों के बारे में यह बिल्कुल नहीं जानते।

भंवर बाबू ने अपनी सहमति प्रकट की।

इन्दु ने तुरन्त बात के प्रसंग को बदल दिया 'फिर मैं समझती हूँ कि बात पक्की हो गई। अब मैं अपनी सहेलियों में कहानी-संग्रह के प्रकाशन की जोर-शोर से घोषणा कर सकती हूँ?

'बेशक!'

इसके बाद अनाम प्रकाशन की एक रूपरेखा बनाने का वायदा करके उठ खड़ा हुआ। जाते-जाते भंवर बाबू ने इन्दु से कहा 'आप मुझे फोन नम्बर ३०१३ पर कभी भी याद कर सकती हैं।

बैसाखी की 'खट्-खट्' फिर सुनाई पड़ी। बाहर आते ही इन्दु के चेहरे पर उल्लास बिखर गया। वह चहकती हुई चिड़िया-सी मधुर स्वर में बोली 'अनाम भंवर बाबू की उम्र मेरे ख्याल में तीस-पैंतीस की होगी। कला के अच्छे पारखी हैं?

'शायद!' छोटा-सा उत्तर दिया अनाम ने।

६

इधर अनामिका अधिक अस्वस्थ हो गई थी इसलिए सवेरे की चाय

बरखा साथ करती थी। धनाम का उसके साथ का व्यवहार जरा-सा भी सुन्दर नहीं था। वह हर समय ऐसे भावों का प्रदर्शन किया करता था जैसे वह बरखा से दूर, बहुत दूर भागना चाहता है। यही कारण था कि जब बरखा शरत् चन्द्र की 'कमला' अथवा 'सावित्री' की चर्चा करती तो धनाम उसके बारे में इस तरह उत्तर दिया करता था जैसे ये बातें जीवन में कोई महत्व नहीं रखती हैं। व्यर्थ ही समय को खराब करती हैं परन्तु कल सवेरे एक विचित्र प्रशंसनीय घटना घट गई।

अभी तक धनाम बिस्तरे पर सोया हुआ था। बरखा ने चाय की प्याली को मेज पर रखकर उसे जगाया। धनाम ने अपनी अलसाई आंखों से बरखा को देखा। हमेशा की अपेक्षा आज बरखा कुछ अधिक अच्छी लग रही थी। उसके गालों में उल्लास की परछाइयां नाच रही थीं। उसकी आंखों में प्यार की गहराइयां तैर रही थीं। उसका शरीर उसे इतना काला और भद्दा नहीं लगा जैसा उसे सदा लगता था। आज उस उसमें भी सौन्दर्य की ज्योत्स्ना विकीर्ण होती हुई लगी। उसके बाल धुले और नीचे कमर तक छितराए हुए थे। धनाम उन सबको एकटक देखता रहा। उसने क्षण भर के लिए सोचा 'बरखा इतनी बदसूरत नहीं है जितनी मैं समझता हूं।'

'चाय!'

धनाम चाय पीता हुआ खामोशी से बरखा के बारे में सोचता रहा। बरखा संगमरमर के बुत की भांति निश्चल और अटल खड़ी थी। चाय समाप्त करके धनाम ने प्याले को मेज पर रख दिया और अपने आपको बहलाने की चेष्टा की ताकि बरखा यह समझे जैसे वह उसमें तनिक भी दिलचस्पी नहीं ले रहा है। लेकिन बरखा पूर्ववत् खड़ी रही। उसकी छाया में एक उपेक्षित नारी की अतृप्त चाह और प्यास थी जो तृप्ति की मांग कर रही थी। एक करुण असहायता थी जिसको धनाम पूरी तरह देख भी नहीं सकता था।

'क्या बात है बरखा ? उसने अपने हृदय के आन्दोलन को दबाते हुए सहज स्वर में पूछा 'तुम मुझे इस तरह क्यों देख रही हो ?

'मैं ! वह अस्पष्ट रूप से इतना कहकर कुर्सी पर बैठ गई जैसे कोई भयभीत प्राणी हो जो टूटकर गिर पड़ा हो। उसकी सांसें तेज थीं और उसके सारे बदन में कंपकंपी थी। अनाम के मन में कई प्रश्न एकसाथ उठे और बैठ गए। उसने अपनी दृष्टि दूसरी ओर फेर ली

अनाम बाबू ! उसने कहा।

'कहो।

'मैं चाहती हूं। उसने बड़ी कठिनता से कहना प्रारम्भ किया 'मैं आपको चाहती हूं। मैं—आपको प्यार करती हूं। इतना वह कर वह चुप हो गई। हर शब्द उसके गले में अटक रहा था।

अनाम ने चीखना चाहा पर न मालूम उसका स्वर क्यों रुक गया। उसने इतना ही कहा 'बरखा !

बरखा ने सम्पूर्ण समर्पण भरी दृष्टि से अनाम की ओर देखा। वह प्रेम भरी दृष्टि एक औरत की प्यार भरी नजर अनाम के लिए असह्य हो उठी। उसने अपनी अंगुलियों से खेलना शुरू कर दिया।

वह आगे बढ़ी। उसने अपने कांपते हाथ से अनाम के हाथ का स्पर्श किया। एक आन्दोलन एक कम्पन उसकी रग-रग में उत्पन्न हो गया। उसे लगा वह कांपता स्पर्श और गम आहें उसके तन और मन में एक ऐसे आश्चर्य को जन्म दे रही है जिसे वह सहन नहीं कर सकता। उसने साहस करके बरखा के चेहरे को देखा। चेहरा बदल गया था। उसकी आंखों में नारीत्व का ओज और समर्पण का आलोक दीप्त था। अनाम के हाथ स्वतः ही बढ़ गए। बरखा ने अपना मस्तक उसकी गोद में रख दिया।

मेज हिल उठी। उसके हिलने के साथ वैसाखी गिर पड़ी। वैसाखी के साथ अनाम के मस्तिष्क में अपनी झूमती हुई टांग घूम गई। उसे लगा कि

वह इस उत्तेजना को नहीं संभाल सकता। उसके हाथ ढीले पड़ गए। सहसा उस दिन वाली स्मृति उसके मानस-पटल पर घूम गई। वह बस पर चढ़ रहा था और बरखा की व्यंग्य भरी दृष्टि उसकी टूटी टांग का उपहास कर रही थी। फिर उसके मन में घृणा की लहरें दौड़ पड़ीं। उसने बरखा को अपने से अलग करना चाहा। बरखा नैनों में आंसू भरकर कह उठी 'अनाम बाबू, मैं आपसे प्यार करती हूं प्यार करती हूं मुझे अपनी बांहों में भर लीजिए, मैं केवल आपकी हूं। यह अस्फुट स्वर) अनाम विचलित हो गया। तुरन्त अपनी बैसाखी को पकड़कर खड़ा हो गया। संभलकर बोला 'शायद तुम भूल गई हो कि मैं एक शरीफ आदमी हूं। तुम्हें अत्यन्त निम्न स्तर की स्त्रियों की तरह इतने आवेश में नहीं आना चाहिए और न ही तुम्हें इस तरह प्रेम का प्रदर्शन करना चाहिए, यह एक अच्छे घराने की लड़की के लिए शोभा नहीं देता।

अनाम ने जैसे ही वाक्यों को समाप्त किया वैसे ही बरखा संभलकर खड़ी हो गई। थोड़ा क्षण पूर्व उसके मुख पर जो करुणा और क्षोभ था वह लुप्त हो गया और वह तनिक कर्कश स्वर में बोली 'तुम निर्दय हो, हृदय हीन हो तुम मेरे प्यार को ठुकरा रहे हो ईश्वर तुम्हारे प्यार को ठुकराएगा।

'किन्तु मैं तुम्हें प्यार नहीं करता इस तरह भावुकता में बहना अच्छा नहीं है। मुझे समझने की कोशिश करो।

बरखा फुफकारती हुई बोली 'मैं तुम्हें समझ गई। तुम्हें एक सौंदर्य देवी की आवश्यकता है। लेकिन वह तुम्हें नहीं मिलेगी परन्तु तुम्हें प्यार नहीं करेगी वह एक लंगड़े को अपना पति क्यों बनाएगी? वह मेरी तरह काली और भद्दी नहीं है। वह मेरी तरह अनपढ़ थोड़े ही है।

वह कमरे से बाहर चली गई।

अनाम के मन में हाहाकार मच गया। उसने क्षण भर के लिए खिड़की

के चौखटे पर अपनी कुहनियों को टेककर दूर तक फैली हुई सड़क पर अपनी दृष्टि दौड़ाई। उसे लगा कि उसकी टांग अच्छी हो गई है और वह हवा की तरह तेज और बहुत तेज भाग रहा है और बरदा उसे भागते हुए देखकर मन ही मन जल रही है।

तत्पश्चात् वह दिन भर कहीं नहीं गया। वह दिन भर बीमार-सा पड़ा रहा जैसे उसमें शक्ति हो नहीं है।

रात्रि की गहरी निद्रा ने उसको काफी स्वस्थ किया। उसका आवेश और बेचैनी जाती रही। वह स्वस्थ दृष्टि से कल की घटना पर विचारने लगा। उसे लगा कि बरदा में सिर्फ एक कुरूप लड़की का आवेश और उत्तेजना है। प्रेम में प्रोत्साहन का अभाव पाकर वह घृणा से भर गई और उसने उस हालत में उसको लंगड़ा तक कह दिया। अनाम ने एक आलोचक की भांति अपनी आलोचना करके अपने आपको धैर्य दिया कि इसका उसे भी बुरा नहीं मानना चाहिए तथा उसे बरदा को एक नादान लड़की समझकर क्षमा कर देना चाहिए।

उसने ऐसा ही किया तथा बैसाखी लेकर वह नीचे चाय पीने चला गया। रास्ते में बरदा की मां मिली। उसने साधारण तरीके से कहा 'बरदा आपसे नाराज है, अनाम बाबू!'

अनाम ने हंसने का प्रयास करते हुए कहा 'वह पगली है।'

कार्यों से निवृत्त होकर वह इन्दु के घर की ओर चल पड़ा। आज मौसम अच्छा था। सवेरे-सवेरे बादल निकल आए थे जिनमें आकाश में मृगछौने दौड़ रहे थे।

जब वह इन्दु के घर पर पहुंचा तब इन्दु उसे नहीं मिली। इन्दु की मां ने बताया कि वह भंवर बाबू के यहां खाना खाने गई है। अनाम का मन डाह से भर गया। उसने सोचा कि वह उसे छोड़कर कैसे अकेली भंवर बाबू के यहां चली गई? हठात् उसके मुंह पर दुख की परछाइयां नाच उठीं।

इन्दु की मां ने उसके चेहरे के भावों को समझने का प्रयास नहीं किया। वह अपने आंचल को ठीक करती हुई बाली 'कल इन्दु की वर्षगांठ है शायद भंवर बाबू इस उपलक्ष्य में उसे अपनी मनपसंद का तोहफा खरीद कर देंगे। वह उनके साथ बाजार भी जाएगी और दोपहर तक लौटेगी ?

अनाम ने खामोशी से मुस्कराने की चेष्टा की। वह उखड़े हुए स्वर में बोला 'वह आए तो उसे खबर कर देना और कह देना कि आज रात वह मेरे साथ खाना खाएगी।

७

वह तत्काल लौट आया।

घर में घुसते ही उसने देखा कि बरखा ने अपने कमरे के आगे सामने से उसकी बैसाखी का भौंडा चित्र बनाया है। मन में रोष के होते हुए भी उसने उसके प्रति लापरवाही दिखाई। वह खट्-खट् करके ऊपर चढ़ा। अप्रत्याशित उसने अपने पांवों के नीचे लंगड़ा लिखा हुआ देखा। उसने अपने एक पांव से उस शब्द को कुचल दिया। वह जान गया कि यह हरकत बरखा के अतिरिक्त किसीकी नहीं हो सकती।

वह पलंग पर कपड़े खोलकर पड़ गया। तभी हाकिए ने पुकारकर एक चिट्ठी दी। घर की चिट्ठी थी। अनाम को घर की चिट्ठी पढ़ने का तनिक भी शौक नहीं है। वह जानता था कि अभावग्रस्त जिन्दगी की एक ही भाषा है। कुछ इने-गिने शब्द हैं। एक ही मांग है कि रुपया भेजो।

एक बार उसने वह चिट्ठी रख दी लेकिन फिर उसने पढ़नी आरम्भ की। छोटी बहिन ने लिखा था—भैया ! हम बड़े कष्ट में हैं। तुम दो-दो महीनों पर भी सौ-पचास रुपया नहीं भेजते ? ऐसी भी क्या 'चित्रकारी' हुई ? तुम कहीं सरकारी नौकरी क्यों नहीं कर लेते ? जरा सोचो मैं बड़ी हो गई हूं छोटी बहिन बस बड़ी होने वाली है। मां रात-दिन हमारे विवाह

की चिन्ता में घुलकर काँटा हो रही है। हमसे उनकी दुर्दशा नहीं देखी जाती। और एक तुम हो कि घोड़े बेचकर परदेस में बैठे हो। यह कला-सेवा किस परम्परा की श्रेष्ठ सेवा है? घर का एक-एक सदस्य एक-एक पैसे के लिए तरसे और तुम वहां पर शाही जीवन गुजारो यह कहां का इन्साफ है? अभी तुम्हारा एक मित्र आया था उसने जो कुछ तुम्हारे बारे में कहा उससे हमें लगा कि तुम सम्मान और निजी सुख के पीछे अपने परिवार वालों का भी बलिदान कर सकते हो। इतने अभावों में भी माँ तुम्हें आशीष भेजती है और शेष तीन बहिनें प्रणाम।

पैसा न भेजो तो न भेजो पर अपनी कुशलता का समाचार जरूर दे दिया करो।

तुम्हारी बहिन
सन्तोष

पैसा! पैसा!! पैसा!!!

वह बड़बड़ाया 'यह लोग समझते हैं कि मैं यहां पर ऐश कर रहा हूं। मैं ही जानता हूं कि मैं कैसे जी रहा हूं? मैं बेटा हूं इसलिए मैं अपने जीवन की आकांक्षा और उद्देश्य को छोड़कर परिवार की चक्की में पिसकर अपना अस्तित्व मिटा दूं। नहीं मैं ऐसा नहीं कर सकता। मुझे एक महान् चित्रकार बनना है, और मैं अवश्य बनूंगा। और वह मित्र? जलता प्रश्न अनाम के आगे आया। उसने घृणा से मुंह बिचका लिया 'ये मित्र शत्रु का काम करते हैं। इन्हें मेरा सुखी जीवन पसन्द नहीं। खुद सरकारी नौकरियां कर-करके अपने को बेचते हैं और परिवार की सेवा करके दकियानूसी विचार वाले बड़े-बूढ़ों की सहानुभूति ग्रहण कर लेते हैं। छि:, गिरगिट कहीं के! किन्तु ये भी अपने मित्रों के हक में अच्छा नहीं। और उसने कुछ घटनाओं का विश्लेषण करके जाना कि उसने अपने व्यक्तिगत स्वार्थों के कारण अपने प्रत्येक मित्र को हानि पहुंचाई है। उसने किसी भी मित्र पर

कार्टून बनाना नहीं छोड़ा। उसके वास्तविक रूप को विकृत करके उसने उसकी मनचाही खिल्ली उड़ाई। फिर वह अपने दोस्तों से अच्छाई की कैसे उम्मीद रख सकता है?

नीचे से बरखा की मां चिल्लाई 'बारह बज रहे हैं और तू अभी तक सोई हुई है बरखा! ओ री बरखा उठ! उठ न!

'बारह! अनाम चौंका। उसने पत्र को फाड़कर फेंक दिया। 'इन्दु की कल वर्षगांठ है। उसने सोचा 'भंवर बाबू उसे मनपसन्द तोहफा देंगे। और वह' ?

उसके पास पैसा ही नहीं है। फिर इन्दु उसके बारे में क्या समझेगी? भेंट के अभाव में वह उसके प्यार का गलत मूल्यांकन कर लेगी। सोचेगी कि जो भेंट नहीं दे सकता वह हृदय क्या देगा? यह पूंजीवादी युग है। आदान प्रदान पर सम्बन्धों का चिर रहना अवलम्बित है। फिर मनुष्य का अहम् सार्वजनिक स्थानों पर अधिक सम्मान की चाह रखता है। फिर पैसा ?
पैसा?

अप्रत्याशित उसके मस्तिष्क में दयाल की घिनौनी और कठोर मूर्ति नाच उठी। एक ऐसे नरपिशाच का हृदयहीन विद्रूप चेहरा नाच उठा जिस-पर मानवीय संवेदना की हल्की रेखाएं भी नहीं थीं। वह कुछ क्षण तक उस कठोर कंजूस को गालियां देता रहा। फिर वह कपड़े पहनकर बाहर निकला।

सीढ़ियों पर बरखा उन्मन-सी बैठी थी। इस बार उसने कोई हरकत नहीं की। वह उसे एक दुर्दमनीय भावना से देखती रही। जब उसने देखा कि अनाम घर से बाहर निकल रहा है तब उसने अपने भाई धीरू का आवाज लगाई कि भीतर आ जाओ।

अनाम ने देखा कि बरखा का छोटा भाई एक लकड़ी को बगल में दबाए उसी तरह हिचकोले खाता हुआ चल रहा है। अनाम देखकर खोखली हंसी हंस पड़ा ताकि उसके अहम् का रोष प्रकट न हो।

उसे बरखा की धृष्टता अच्छी नहीं लगी। यह बिलकुल अशिष्टता है किन्तु वह कर ही क्या सकता है। कुछ धृष्टताएं ऐसी होती हैं जिनके बारे में आदमी चाह कर भी कुछ नहीं कर सकता। वह थाने में बैठा हुआ बरखा का विश्लेषण करने लगा। बरखा की आयु अपरिपक्व है और अपरिपक्व का प्यार या तो सब कुछ सहकर देखता है और एक जिज्ञासा भरा स्वयं से प्रश्न करता रहता है कि ऐसा क्यों होता है ? अथवा उसमें असमता का विरोध उत्पन्न हो जाता है जिसके द्वारा उसका हृदय घृणा का प्रदर्शन करता रहता है किन्तु वह घृणा एक उपहास अथवा हल्की धृष्टता बनकर रह जाती है जैसी बरखा की रह गई है।

वह काली और भद्दी लड़की ?

अचानक सड़क पर कोहराम मचा। मालूम हुआ कि एक सज्जन एक दुकानदार से दृढ़ता से कह रहे हैं कि वे उसे पैसा दे चुके हैं किन्तु दुकानदार नहीं मान रहा है। तब उक्त सज्जन एक सन्यासी की तरह अपने वेश में चल रही धांधलेबाजी नौकरशाही भ्रष्टाचार और अनाचार की बातें करने लगे। उन्होंने दूध के धोए इन्सान की तरह वर्तमान के सभी लोगों को लुटेरा और ठग कहा पर दुकानदार अपने हठ पर अड़ा ही रहा और उक्त सज्जन को पैसे देने पड़े। इस घटना ने अनाम की विचार धारा को भंग कर दिया। उसके सामने इन्दु का उल्लास भरा चेहरा नाच उठा। उसके कर-स्पर्श का स्पंदन अब भी अनाम के हृदय में हल्का मधुर संगीत उत्पन्न कर रहा था। आज इन्दु भंवर बाबू के साथ अकेली क्यों चली गई ? फिर उसने अपने मन को आश्वस्त किया कि भंवर बाबू के कथन को टालने की उसकी हिम्मत नहीं हुई होगी। उसने सोचा होगा कि इस अस्वीकृति से नाराज होकर भंवर बाबू प्रकाशन का कार्य स्थगित न कर दें।

कमल ये बनिए होते ही ऐसे हैं। चाहे तो बेटा भी दे दें नहीं तो बेटी भी छीन ले।

श्याम का मकान आ गया था।

किवाड़ों के समीप पहुंचते ही प्रमोद को सड़े हुए अन्न की बास आई। सने नाक के आगे रूमाल देकर दरवाजा खटखटाया। अनामिका ने द्वार ोला। उसे देखते ही उसने विस्मय से पूछा 'तुम यहां? तुम्हारी तो तबि त खराब है न?

'हां पर श्याम बाबू छुट्टी नहीं देते।

'ओह! कितना नीच आदमी है भगवान उसे कड़ा दंड देगा।

अनामिका ने संकेत से समझाया कि वे धीरे बोलें। श्याम बाबू के कान रे तेज हैं।

'क्या कर रहे हैं श्याम बाबू?

'सो रहे हैं।

'उन्हें जगा दो।

'नहीं।

'डरती हो?

'हां।

'ठीक कहती हो कर्जदार को अपने आसामी से डरना ही चाहिए। अनामिका! आज मैं श्याम बाबू को तुम्हारे बारे में कुछ कहूंगा। उनका यह व्यवहार मुझे कतई पसन्द नहीं। तुम दिन-ब-दिन कमजोर होती जा रही हो।

'नहीं आपको ऐसा नहीं करना चाहिए। वे मेरे लिए देवता समान हैं। इधर मैं इनका ब्याज भी दे नहीं सकी क्योंकि मांगा तक नहीं। कल इन्होंने दस पये और उधार दिए कि दवा-दारू अच्छी तरह करो। अब आप ही कहिए, से आदमी की आज्ञा न मानूं तो क्या करूं?' श्याम बाबू हृदयहीन और कठोर हैं। उनका कोई भी अपना-पराया नहीं है। वे केवल रुपया चाहते हैं लेकिन मेरे प्रति वे अत्यन्त दयालु और सहृदय हैं। मैं नहीं चाहती

कि आप कुछ कहकर उनके मन का भरम ले।

'यदि तुम्हारी इच्छा नहीं है तो मैं कुछ भी नहीं कहूंगा।' अनाम 'खट् खट्' करता श्याम के कमरे की ओर बढ़ा। 'खट्-खट्' जैसे ही कमरे के समीप पहुंची वैसे ही श्याम ऊंचे स्वर में चिल्लाया 'ओह अनाम बाबू कलाकार, आइए आइए!'

अनाम ने बैठते हुए कोमल स्वर में कहा 'आपको जगाकर बड़ा कष्ट दिया।'

'नहीं अनाम बाबू एक सूदखोर के लिए इससे अधिक प्रसन्नता और क्या हो सकती है कि कोई उससे उधार मांगने आए।'

अनाम ने सलज्ज नैनों से श्याम की ओर देखा। उसने अपने मुख पर अवसाद की छायाएं दौड़ाईं। उसने हास्यभाव दर्शाते हुए कहा, 'एक बार रत ही ऐसी पड़ गई। मैं आपका पिछला नहीं चुका सका, इसके लिए शर्मिन्दा हूं।'

श्याम ने क्रूरता से अनाम की ओर देखा। उसकी दस रोज की बढ़ी हुई दाढ़ी से उसका चेहरा और भी भयानक लगता था। रूखे बाल और मैले वस्त्र उसकी भयानकता में वृद्धि कर रहे थे। वह बोला 'तुम मेरे स्वभाव को जानकर भी ऐसी गलती क्यों करने आ जाते हो? पहला रुपया दिया नहीं और फिर लेने आ गए।'

अनाम का स्वाभिमान आहत हो गया। उसकी इच्छा हुई कि वह उठकर चला जाए किन्तु कल के आयोजन के स्मरण मात्र से उसका अंग-अंग शिथिल हो गया। शंकर बाबू व अन्य लोगों की उपस्थिति में यदि वह श्रेष्ठ चित्रकार की प्रतिष्ठा के अनुकूल भेंट नहीं देता है तो रम्भु उससे जरूर नाराज हो जाएगी। उसे प्रतिष्ठित व्यक्तियों के समक्ष तुच्छ होना पड़ेगा तथा बेवकूफों की भांति उनके कहकहों का निशाना बनना होगा। क्या उसमें इस अपमान को सहने की शक्ति है? नहीं नहीं! वह उस मर्मान्तक

अपमानजनित पीड़ा को नहीं सह सकता। उसका चेहरा तमतमा उठा। वह ऐसी स्थिति में भी नितान्त शान्त बैठा रहा ताकि श्याम उसके अन्तरतम के हाहाकार को न समझे।

'मैं बहुत शर्मिन्दा हूं और वायदा करता हूं कि मंवर बाबू से रुपया लेकर मैं आपको दे दूंगा।' उसका स्वर विनती में डूबा हुआ था तथा उसकी आंखों में करुणा तैर रही थी।

'मैं वायदा-कायदा कुछ नहीं जानता। सच तो यह है कि मैं तुम्हें रुपया नहीं दे सकूंगा।'

'ऐसा न कहिए श्याम बाबू मेरे घर में अन्न आया है मेरी मां की तबीयत खराब है घर पर एक पैसा नहीं है। जरा सोचिए ऐसी स्थिति में आप मेरी मदद नहीं करेंगे तो मेरा क्या होगा।'

'होगा क्या? मां बीमारी में तड़पती रहेगी और बहिनें अभाव में प्यासे हृदय लिए हर उस सजी-संवरी युवती को देखती रहेंगी जो अपने अन्तस् में सुन्दर भविष्य की मधुर कल्पनाएं और आकांक्षाएं लिए मचलती हुई उनके आगे से गुजर रही होगी।'

'श्याम बाबू! किसीके घाव पर नमक छिड़कने में आपको क्या मिलता है?'

'यह मैं स्वयं नहीं जानता।'

उसने दुःख से उत्तेजित होकर श्याम की ओर देखा। उसकी दृष्टि में तीव्र घृणा थी। उसके शरीर में जड़ता आ गई थी।

श्याम अपने कन्धों को सिकोड़कर बोला 'तुम्हें मेरे कथन पर आश्चर्य होता होगा। यह स्वाभाविक भी है। ललाम! जो व्यक्ति जीवन के मर्म से पलायन करके केवल अपने स्व को सम्मानित-प्रतिष्ठित करने की धुन में व्याकुल है। उसको पीड़ा देने में ही मजे आनन्द आता है। फिर मेरे जैसे हृदयहीन व्यक्ति के लिए किसीकी गरीबी और मजबूरी से विपत

पाना भी ठीक नहीं। यदि मैं दूसरों की विवशता या कष्ट से द्रवित होता हूं तो मेरा व्यापार चौपट हो जाएगा। मैं एक रुपये के बदले सवा रुपया चाहता हूं।

'श्याम बाबू! उसने बड़ी कठिनता से कहा 'बस एक बार मुझपर और दया कर दीजिए।

श्याम ने रूखे स्वर में कहा 'दया का व्यापार से कोई सम्बन्ध नहीं है। यदि कसाई निरीह बकरे या मुर्गे को दया की दृष्टि से देखे तो उस बेचारे का क्या होगा? दया एक असत्य भावना है जिसका प्रयोग कहानियों के आदर्शवादी लेखक अपने नायकों में करते हैं या वे महन्त और दाता उस भावना का उन पर प्रदर्शन करते हैं जिनका दान उनके पास महादान के रूप म आता है। मैं इसको अपने हृदय में भी नहीं रखता। मैं भूखे को जरूरत मन्द को किसीकी इज्जत जाती हुई को बचाने के हेतु, रुपया देता हूं और आवश्यकता पर देता हूं और समय पर अपनी रकम उससे लेकर उसका सोना या मकान वापस कर देता हूं। 'लेकिन तुम्हारे पास क्या है? तुम्हारे इंट मोटों की कीमत क्या है? बाजार मे वे आधे दाम पर भी नहीं बिक सकते। ऐसे आदमी पर बार-बार कैसे विश्वास किया जा सकता है और उसे कैसे कर्ज दिया जा सकता है। श्याम ने ग्लानिपूर्वक कन्धा हिलाकर गहरा मौन धारण कर लिया। उसका चेहरा बिलकुल भावशून्य था।

धनाम का मुख श्याम के उत्तर से पीला प्रतीत होने लगा। यदि अभी वह अपना चेहरा शीशे में देखता तो मिर्गी में तड़पते व्यक्ति जैसा लगता।

श्याम अब अपने घुटनों को बजा रहा था और ऐसे भावों का प्रदर्शन कर रहा था जैसे उसके मन में उसकी इस करुणामयी अस्वीकृति का कोई प्रभाव नहीं है।

धनाम ने बैसाखी संभाली। उठने का प्रयास किया। उस लगा कि उसमें तनिक भी शक्ति नहीं है। चलने के पूर्व उसने श्याम को नमस्कार

किया। श्याम ने इसका उत्तर बड़ी लापरवाही से दिया।

कमरे के बाहर अनामिका खड़ी थी। उसका जर्जर चेहरा घनश्याम के उदास मुख को देखकर शंकाओं की रेखाओं से भर आया। वह समझ गई कि श्याम बाबू ने घनश्याम बाबू को कोरा उत्तर दे दिया है।

'क्या हुआ!' प्रश्नसूचक दृष्टि फेंककर अनामिका ने पूछा। क्षण भर के लिए घनश्याम रुका और फिर अत्यन्त धीमे से कांपते हुए स्वर में वह बोला 'यह मन को छाती पर रखकर झेलेगा।

'आपको रुपयों की ऐसी क्या आवश्यकता आ पड़ती?

'घर से चिट्ठी आई है वे बड़ी तंगी में हैं। वह चुप हो गया पर अनामिका को उसका मन बड़ा उद्विग्न लगा। अनामिका ने तुरन्त उसे रुकने के लिए कहा और स्वयं श्याम के कमरे में गई। श्याम अपनी तिजोरी में से नोटों को निकालकर गिन रहा था। पांवों की आहट पाकर उसने तुरन्त नोटों को तिजोरी में रखकर उसे बन्द कर दिया। अनामिका को देखकर वह खिसियानी हंसी के साथ बोला 'तुम!

'मैं आपसे एक विनती करने आई हूं।

'समझ गया तुम क्या कहना चाहती हो। कहोगी कि कुछ रुपया और उधार दे दो। लेकिन मैं फिलहाल ऐसा नहीं कर सकूंगा। मैं तुम्हें परसों पन्द्रह रुपये देकर पचीस का हैंडनोट लिखाऊंगा। पचीस क्यों? इसलिए कि दस पहले वाले और पन्द्रह अब के। इन रुपयों का तुम्हें ब्याज नहीं देना होगा।

अनामिका शांत दृष्टि से श्याम को देखती रही।

श्याम कुछ परेशान-सा बोला 'मैंने कहा उसे तुमने सुना नहीं? श्याम फिर धुनने बजाने लगा।

अनामिका उसके समीप बैठ गई। बोली 'घनश्याम बाबू को इस बार रुपया दे दीजिए। मैं आपसे हाथ जोड़ती हूं।

दयाल ने अनामिका को अभिप्राय भरी पैनी दृष्टि से देखा। उस दृष्टि में एक जिज्ञासा थी जो यह समझना चाहती थी कि इस वाक्य के पीछे कौन सी भावना काम कर रही है।

'तुम उनकी सिफारिश क्यों कर रही हो ? क्या तुम नहीं जानतीं कि यह मेरा पहले से ही कर्जदार है।

'जानती हूं।

'फिर इसे कर्ज देना कहां की बुद्धिमानी है।

'बुद्धि की बात मैं नहीं करती लेकिन उन्हें सख्त जरूरत है दयाल बाबू आप इन्हें गरीब भले ही कह लें पर बेईमान नहीं कह सकते। इनके पास रुपये आते ही ये आपका सबसे पहले चुकता कर दिये ?

'खाक चुकता कर देंगे। ये चित्रकार हैं। ये कला का उत्थान उद्धार और उसे एक नया मोड़ देने में लगे हुए हैं। देखती नहीं ये सभी बड़ी बड़ी फिलासफी और नैतिकता की बातें करते हैं।—धर्म एक ढकोसला है और भगवान एक बकवास। समाज में क्रांति आनी चाहिए और नारियों को स्वतंत्रता मिलनी चाहिए। 'लेकिन ये सब बातें उस समय हवा हो जाती हैं जब पास में रुपया नहीं होता है। देखा नहीं अनाम का चेहरा लगता है बरसों से बेचारा बीमार है बीमार।

'कुछ भी हो आपको । अनामिका ने भरपूर स्नेह भरी दृष्टि से दयाल को देखा। दयाल कांप-सा गया। तनिक उखड़े-उखड़े स्वर में बोला 'नहीं नहीं मैं इसे नहीं दूंगा फिर धर्म भंग व्यक्ति से वास्ता जहां तक हो सके कम ही रखना चाहिए।

अनामिका ने दयाल को हाथ जोड़ दिए। विगलित स्वर में उसने कहा 'इस बार आपको मेरा कहना मानना ही पड़ेगा। यदि अनाम बाबू ने यह रकम नहीं दी तो मैं दे दूंगी।

'तुम्हें अनाम से इतनी हमदर्दी क्यों है ?

अनामिका गम्भीर स्वर में बोली 'किसी परिवार में पैसा न होने से उस परिवार को कितनी भयंकर यंत्रणाएं उठानी पड़ती हैं इसका अनुभव मुझे है। ऐसा संभव है कि अभाव मनुष्य को पतन में डाल दें।

'लेकिन !'

अनामिका ने व्यास के पांव पकड़ लिए। व्यास अपने पांवों को छुड़ा कर बोला 'मुझे छूओ मत छूओ मत। अनाम को भीतर भेज दो।'

कुछ क्षण पश्चात् अनाम पुनः व्यास के कमरे में आया। हैंडनोट लिख कर उसने ढाई सौ रुपये अनाम को दे दिए और अनाम अनामिका को धन्यवाद देकर चल पड़ा।

रास्ते में जाते हुए वह सोच रहा था 'यह कठोर प्राणी अनामिका की बात क्यों मानता है? क्या यह अनामिका से प्यार करता है? क्या इतना स्वार्थी और लोलुप इन्सान के मन में मानवीय संवेदनाओं की लहरें दौड़ती हैं? क्या वह किसीसे प्यार कर सकता है?

८

अगले दिन संध्या समय इन्दु के यहां पार्टी थी। आंगन में कुछ मेजों को आपस में मिलाकर एक बड़ी मेज बनाई गई, जिसपर सफेद चादर बिछा दी गई। मेहमानों के लिए रसगुल्ले बरफी और समोसे के साथ-साथ चाय का प्रबंध भी किया गया।

ठीक समय मेहमानों का आगमन शुरू हो गया। इन्दु एक मिस्ट्रेस थी गायिका थी और थी मिलनसार युवती। उसके मित्रों की संख्या विशेषतः युवतियों की अधिक थी। अनाम के कहने पर, इन्दु ने चाहते हुए भी स्थानीय लेखकों को चुनकर निमन्त्रित नहीं किया। अनाम का ऐसा विश्वास था कि वे हमारे स्टैण्डर्ड के नहीं हैं और वे केवल हमें उपहास के पात्र ही बना सकते हैं। हां उस पार्टी में कुछ बुजुर्ग लेखक जो घटिया-साहित्यकारों एवं

मिनिस्टरों द्वारा संचालित पत्रों के सम्पादक भी आज दूल्हे बने हुए उपस्थित हुए थे।

भंवर बाबू की शान निराली थी। वे परमसुख धोती और बढ़िया सिल्क का कुर्ता पहने हुए थे और उपस्थिति से घूम-घूमकर बातचीत कर रहे थे। उनके हाव-भाव से लगता था कि हर महिला और हर पुरुष उनसे मिलने के लिए आतुर है। अनाम एक मेज के कोने में बैठा हुआ कुढ़ रहा था। नाइलोन की साड़ी में सज्जित इन्दु भंवर बाबू से कितनी घुल-घुल कर बातें कर रही है और अपनी सहेलियों से उनको किस तरह हंस-हंसकर मिला रही है यही सब उसको अत्यन्त कष्टप्रद लग रहे थे।

तब अनाम के मस्तिष्क में कल की घटना साकार हो उठी। व्यास से रुपये उधार लेकर वह सीधा इन्दु के यहां गया। इन्दु अपने कमरे में बैठी हुई कल की पार्टी के आयोजन का हिसाब लगा रही थी। अनाम को देखते ही वह बोली 'मैं बड़ी शर्मिंदा हूं कि पहले तुमसे नहीं मिल पाई। भंवर बाबू स्वयं आ गए थे इसलिए उनके साथ जाना पड़ा।

'कोई बात नहीं।

'बैठो तो सही।' इन्दु ने कुर्सी की ओर संकेत किया।

'मैं बैठने नहीं आया तुम्हें अपने संग ले जाने आया हूं।

'क्यों?

'पहले यह बताओ भंवर बाबू ने तुम्हें क्या तोहफा दिया?

'उन्होंने? इन्दु कहती-कहती रुक गई, 'नहीं बताऊंगी तोहफे की अहमियत मारी जाएगी।

'फिर मैं भी तुम्हें बाद में ही बताऊंगा। हालांकि मेरे पास 'कार' नहीं है इसलिए मेरे साथ तुम्हें तांगे में ही चलना पड़ेगा।

'पर कहां?

'थोड़े रास्ते तक?

'यदि शाम को चलें तो तुम्हें कोई एतराज होगा ?'

'नहीं !' उसकी आकृति एकदम बदल गई और वह तुरन्त दरवाजे की ओर घूम गया।

इन्दु अनाम की नाराजगी भांप गई। उसने तुरन्त आकर उसे रोका और तुरन्त चलने का आश्वासन दिया। अनाम कुछ नहीं बोला वह इन्दु को जलती निगाहों से देखता रहा। इन्दु ने तुरन्त कपड़े बदले और वह अनाम के साथ चल पड़ी।

गंतव्य स्थान पर पहुंचकर अनाम ने इन्दु से कहा 'तुम अपने मनपसंद तोहफा बतौर सकती हो। मैं भंवर बाबू की भांति तुम्हें सोने का ताज महल नहीं दे सकता फिर भी तुम्हारी इच्छा को पूर्ण करने की चेष्टा करूंगा। बोलो क्या चाहती हो ?'

अप्रत्याशित इन्दु गंभीर हो गई। सहज का नया घुमाव आ गया था। वह एक ओर अनाम को लेकर बोली 'तुम बार-बार भंवर बाबू का नाम क्यों लिया करते हो ? उनके प्रति तुम्हारी जलन अच्छी नहीं है। उन्होंने हमारा भला ही किया है।'

'मैंने कब कहा कि उन्होंने हमारा बुरा किया है ? लेकिन किसी कलाकार को इन पूंजीपतियों का पिछलग्गू बनना भी तो शोभा नहीं देता। जरूरत से अधिक महत्व भी ठीक नहीं।'

'ऐसी तो कोई बात नहीं है।'

'फिर अकेली उनके साथ क्यों गई थी ? आखिर तुम्हारा उनके साथ इस तरह घूमना किस वातावरण का जन्म दे सकता है ?'

'ओह ! अब समझी तुम यह कहना चाहते हो कि उनके साथ घूमने पर लोग तरह-तरह की बातें करेंगे जो उन्होंने हमारी और तुम्हारी मित्रता पर भी कम कीचड़ नहीं उछाला है ! अनाम ! हमें इतना नहीं डरना चाहिए, हमें इस तरह सोचना भी नहीं चाहिए। हम दोनों स्वच्छ दामन हैं

हमें जीवन के नये मानदंडों के साथ चलना चाहिए, जीना चाहिए।

तभी एक एंग्लो इंडियन जोड़ा जोर से बहस करता हुआ उनके पास से गुजरा।

इन्दु सावधान होती हुई बोली 'ओह! हम भावावेश में स्थान की अनुकूलता को भी भूल बैठे।

बात का प्रसंग बदल गया। अनाम ने तुरन्त पूछा 'तुम्हें कौन-सी वस्तु पसंद है।"

'जो तुम्हारी पसन्द वह मेरी पसन्द।

'फिर चलो।' उन दोनों ने छोटी चौपड़ की ओर प्रस्थान किया। तब वे एक घड़ीवाले की दूकान पर पहुंचे और अनाम ने एक सौ पन्द्रह रुपये में इन्दु के लिए एक घड़ी खरीदी।

इसके बाद वे रामबाग के एक छोर पर बैठकर प्रेम का वार्तालाप करने लगे। अनाम ने जाना कि इन्दु वस्तुतः उसे ही प्यार करती है। इस दिन उसने एक नारी के स्वासों की उष्णता और धड़कनें सुनीं। वह लंगड़ा इन्सान जिसे युवतियां या तो स्वार्थवश ही प्रेम किया करती थीं अथवा दया से द्रवित होकर उसपर करुणा की जगह प्रेम के भाव प्रकट किया करती थीं एक जवान युवती के स्वाभाविक प्रेम का स्पर्श पाकर बेचारा धन्य-धन्य हो गया। उसे लगा यह पावन प्रेम एक चिरन्तन आलोक बनकर संसृति में बिखर जाए और उसके जीवन में आनन्द का वर्षण कर दे और एक ऐसे मीठे दर्द की अमिट अनुभूति की सर्जना कर दे जो उसकी नस-नस में समा जाए।

वे क्षण! जीवन के परम सुख और विलास भावनाओं से भरे क्षण! आत्मा की प्रशांत कोमलताओं को लिए क्षण! वे क्षण चिरायुष्य हों अमर हों!

अनाम के स्मृति-पटल पर उन क्षणों की चिरन्तनता के लिए सहस्रों स्वर गूंज पड़े। वह टेबल पर इस तरह निस्पंद पड़ा था जैसे उसमें प्राण ही

न हो। मधुर कल्पना में वह भूल गया था कि वह कहाँ बैठा है।

अकस्मात भंवर बाबू ने उसके विचारों के सागर में कंकड़ फेंका।

किस विचार में खो गए अनाम जी?

ओह! किसीमें नहीं। अनाम ने मुस्कराने की चेष्टा की।

मेरा विचार है कि पार्टी की कार्यवाही शुरू की जाए। केक का सिस्टम हालांकि विदेशी है पर है मजेदार, अतः इसका आयोजन रख ही लिया गया है। अब मैं अपना तोहफा भेंट करूंगा अनाम बाबू?

भंवर बाबू ने हिन्दी का टाइपराइटर उठाकर इन्दु को दिया। इन्दु ने मुस्कराकर उनका अभिवादन किया। भंवर बाबू ने भीड़को सम्बोधित करके कहा 'अब इनके लिए सबसे महत्व की चीज यही है और मैं आशा करूंगा कि आप विश्व की एक महान लेखिका बनें। तब उन्होंने गर्व से अनाम की ओर देखा। उस दृष्टि में एक पूंजीपति का अहम् नग्न होकर नाच रहा था। अनाम उसे नहीं सह सका। उस गर्वभरी दृष्टि ने जो उस भंवर बाबू की ओर से चुनौती दे रही थी उसे क्षणिक आवेश में भर दिया। वह तुरन्त अपनी बैसाखी लेकर उठा। इन्दु की ओर बढ़ा और अपनी जेब से घड़ी निकालकर उसने इन्दु को दी। देकर उसने भंवर बाबू की ओर देखा और फिर इन्दु के न चाहते हुए भी उसने अपने हाथ से उस घड़ी को उसे पहना दिया।

एक दुर्घटना हो गई—केवल अनाम के लिए।

अकस्मात वकील व्यास ने प्रवेश किया। उनके हाथ में एक छोटी-सी पुस्तिका थी—चार-छह पन्ने की। नाम था—बीमा करवाइए और अपव्यय न कीजिए।—लेकिन उसने ज्योंही अनाम को हीरो की तरह घड़ी पहनाते देखा था एक व्यंग्य भरी हंसी हंस पड़ा। अनाम का शरीर पानी-पानी हो गया। वह तुरन्त अपनी कुर्सी की ओर बढ़ा लेकिन जल्दबाजी में उसका पांव रपट गया और वह गिर गया।

समीप खड़े भंवर बाबू और इन्दु ने उसे सहारा दिया। दो एंग्लो इंडियन लड़कियों ने एक लंबी आह छोड़कर दुखी भाव दर्शाए, 'बेचारा।

भंवर बाबू ने कहा 'जब आपको मालूम है कि आप तेजी से नहीं चल सकते फिर आप ऐसी गलती क्यों करते हैं?

अनाम ने कोई प्रत्युत्तर नहीं दिया। वह अपनी कुर्सी पर नीची गर्दन करके बैठ गया। थोड़ी दूर पर एक महिला दूसरी महिला से कह रही थी 'आदमी सुन्दर है पर है लंगड़ा।

लेकिन अनाम स्थिर होकर बैठा था।

एक संभ्रात महिला ने प्रवेश किया। इन्दु ने उसका आगे बढ़कर सम्मान किया। यह महिला किसी जमींदार की स्त्री थी और अपनी आदत के अनुसार वह सबको हेय दृष्टि से देख रही थी जैसे उसकी दृष्टि में यहां की उपस्थिति अत्यन्त साधारण है और ये सभी लोग उसकी श्रेष्ठता से बहुत नीचे हैं।

अनाम ने साहस करके दयाल की ओर देखा। दयाल अपनी पुस्तक इन्दु को भेंट करते हुए कह रहा था 'इस पुस्तक का हमें अपने जीवन के मूल सूत्रों को स्थिर बनाए रखने के लिए महाग्रंथ गीता की भांति चिन्तन मनन करना चाहिए। मैं समझता हूं कि इन सब तोहफों में यह तोहफा श्रेष्ठ है क्योंकि इसमें न तो बड़प्पन का प्रदर्शन है और न ही दिखावटा का।

तब उसने तीखी दृष्टि से अनाम की ओर देखा। उस दृष्टि में प्रताड़ना लहरें मार रही थी।

केक काट दी गई। सभी ने इन्दु के चिरायु होने की कामना की।

कुछ संगीत का आयोजन हुआ। हंसी-मजाक के वातावरण में दो ही नीरस व्यक्ति लग रहे थे। एक दयाल जो कभी-कभी आग्रह पर हंस दिया करता था और दूसरा अनाम जिसकी हंसी गहरी चिंता में विलीन हो गई थी।

उस पार्टी में आकर्षण के केन्द्रबिन्दु ये ही तीन बने थे—सभापति साहित्य प्रेमी भंवर बाबू, इन्दु और वह जमींदार की पत्नी जो निरन्तर प्रत्येक को हेय दृष्टि से देख रही थी।

९

वह सम्पूर्ण रात्रि मकान में खिड़की की राह गहरे अन्धेरे में जीवन के कई प्रश्नों को ढूढ़ने में गुजारी। वह निराशा के गहन आवरण में आशा की ज्योति के दर्शन करता हुआ सोचने लगा कि उसकी टांग ठीक हो सकती है या नहीं। आज जब वह पार्टी में गिरा था तब कितने लोगों की दया भरी आंखें उसकी ओर उठी थीं और स्त्रियों ने उसपर कितना दर्द भरा रहम खाया था। क्या एक दिन प्रतिमा की मां की तरह इन्दु की मां भी कह देगी कि उसे अपनी बेटी के लिए लंगड़ा पति नहीं चाहिए? यदि इन्दु की मां राजी भी हो गई तो वह अपनी बेटी के संग रहेगी। उसके जीवन का आधार इन्दु ही है। इन्दु! अन्धेरे में इन्दु का चेहरा अंगारा-सा दीप्त हो उठा। इन्दु उसे कभी भी इन्कार नहीं करेगी। उन दोनों का एक पथ है, उस पथ के लिए प्रत्येक एक दूसरे के लिए सच्चा साथी बन सकेगा। लेकिन उसकी चार बहिनें! सूखे-सूखे मुख और पतली-पतली बांहें। जर्जर खंडहर की भांति जिनके शरीर हो गए हैं। उसकी वे बहिनें कंकालों की भांति उसके सम्मुख खड़ी हो गईं। वे मुस्कराने का प्रयत्न कर रही हैं लेकिन मुस्कानें उनके पीले अधरों से बहुत दूर जा चुकी हैं। उनके कदम इतने दुर्बल हो गए हैं कि वे हिरणियों की भांति सरपट दौड़ नहीं सकतीं। वे हंसिनियों की मदगामी चाल से औरों का मन भी नहीं मोह सकतीं। घुटा-घुटा सा जीवन! नीरस और निस्पन्द!

प्रीत की वे अनुभूति भी नहीं कर सकतीं। इस उम्र में जब हर युवती पति या प्रेमी की मनोकामना रखती है, तब उसकी बहिनें अभावों में

भंवर बाबू, इन्दु आपकी नहीं हो सकती नहीं हो सकती ! वह एक सेविका है जिसके हृदय में मानवीयता अधिक है। जो एक कलाकार पर ही मोहित हो सकती है जो उपकार का बदला प्रत्युपकार से ही दे सकती है।

फिर उसे लगा कि वह बहुत थक गया है। उसने जम्हाई ली और सबेरे ही भंवर बाबू से मिलने की सोचकर सोने का प्रयास किया। उसे यह भी मालूम नहीं हुआ कि कब गहरी नींद आई।

अनामिका ने उसे ठीक आठ बजे उठाया। आंखें मलते हुए उसने अनामिका से कहा 'मुझे सात बजे भंवर बाबू के यहां जाना था तुमने मुझे क्यों नहीं उठाया ?

'आप गहरी नींद में सोए हुए थे।

'गहरी नींद !

उसने चाय रखते हुए कहा 'ऐसी गहरी नींद जिसमें बड़े विचित्र सपने आते हैं। आप नींद में कभी हंस रहे थे और कभी रो रहे थे। वे सपने भी कितने विचित्र होते हैं ?

अनाम ने अनामिका की बातों पर जरा भी ध्यान नहीं दिया। वह तुरन्त तैयार होकर भंवर बाबू के घर की ओर चल पड़ा।

१०

जब अनाम ने भंवर बाबू के ड्राइंगरूम में प्रवेश किया तब वहां गहरा सन्नाटा था। उस सन्नाटे में अत्याचारी के नालेदार जूतों की तरह अनाम की बैसाखी की 'खट्-खट्' गूंज रही थी। वरदा ने आज सीढ़ियों पर लिखा था 'भंवड़े से जो प्यार करेगा वह बहुत दुख पाएगा। इसे पढ़कर अनाम का मूड खराब हो गया था। वह पगली लड़की उसे क्यों तंग करती है, यह उसकी समझ में नहीं आया। वह रास्ते भर इसी कारण उलझन में पड़ा रहा।

यहाँ गहरा सन्नाटा था। भंवर बाबू तथा इन्दु को गंभीर मुद्रा में देखा तो उसे अकस्मात् उस युवक और युवती का ख्याल आ गया जो एकांत पाकर मुक्त चुहलबाजियां करते हैं और किसी बुजुर्ग को आता देखकर ऐसे सयाने बन जाते हैं जैसे वे कभी उद्दंड नहीं हो सकते।

अनाम ने मर्मभरी दृष्टि उन दोनों पर डाली और फिर प्रश्नवाचक स्वर में बोला 'आप दोनों बड़े गंभीर हैं?'

इन्दु ने केवल मुस्कराने की चेष्टा की और भंवर बाबू ने कहा 'हम सोच रहे थे कि आपकी टांग ठीक हो सकती है कि नहीं? क्या आपने कभी किसी डाक्टर से सलाह भी ली?'

'नहीं।'

'क्यों?'

'मैं जानता हूं इसके लिए हजारों रुपयों की जरूरत है?'

'मनुष्य चाहे तो रुपयों का प्रबन्ध कर सकता है।'

'आप बड़े आदमियों की बातें करते हैं। जिनके चुटकी बजाते रुपया आता है।'

इन्दु ने बात को समाप्त करते हुए कहा 'व्यर्थ की बातों को छोड़िए, चलिए अपनी बात पर आइए।'

भंवर बाबू ने तुरन्त कहा 'इन्दुजी का कहानी-संग्रह 'द्रौपदी का करुण विलाप' तैयार है। आपका एलबम कल प्रेस में चला जाएगा। इन्दु जी का कहना है कि मैं आपको पांच सौ रुपये एडवांस दे दूं।'

'केवल पांच सौ?'

'इससे अधिक मैं नहीं दे सकता। हिन्दी में ईमानदारी से इतना भी कोई नहीं देता है। मुझे अच्छी तरह मालूम है कि आपका यह एलबम कोई भी छापने को तैयार नहीं हुआ था।'

'फिर आप क्यों छाप रहे हैं?' उसने नाराजगी के साथ कहा। वह इस

अपमान को नहीं सह सका।

इन्दु ने उसे शांत करते हुए कहा 'अनाम! बात-बात में उत्तेजित होना अच्छा नहीं। यह व्यापार है, इसमें धैर्य और समझदारी की जरूरत है।

अनाम को यह उपदेश सूइयों के चुभोने जैसा लगा। उसने इन्दु की ओर घूरा। इन्दु के नयनों में शिकायत थी। ऐसी शिकायत जिसमें उनका प्यार भी होता है।

'मैं इसे छापूंगा। मेरे सामने लौटाने का प्रश्न ही नहीं है। मुझे आपकी और इन्दु जी की ही पुस्तकें छापनी हैं। मैं आपकी नई कथा को चमकाना चाहता हूं।

'फिर इन्दु जी जो कह देंगी वह मुझे मंजूर होगा।

'हुई न बात!' भंवर बाबू मुस्कराए।

इसी बीच एक मोटी स्त्री ने जिसकी कमर ढोल की तरह गोल-मटोल थी ड्राइंग रूम में प्रवेश किया और उसी समय वह वापस भी चली गई।

इन्दु की आंखें फट गई। लेकिन भंवर बाबू ने बेहयाई की हंसी के साथ कहा 'आप इन्हें नहीं जानतीं ये मेरी धर्म-पत्नी हैं। मैं अभी आया।

उनके जाते ही अनाम ने घृणा से मुंह बिचकाकर कहा 'ये इनकी धर्म पत्नी है या भैंस।

इन्दु ने चुप रहने का संकेत किया।

भंवर बाबू तुरन्त आ गए और बोले 'एक जरूरी काम आ गया था। हां फिर मैं आपको पांच सौ रुपये दूंगा पर अभी नहीं एक माह बाद। क्यों अनाम जी आपको बिना रुपयों के कष्ट तो नहीं होगा?

अनाम कुछ कहता इसके पहले ही इन्दु बोल पड़ी 'नहीं भंवर बाबू, अनाम जी को रुपये-पैसों की क्या कमी है? इतने प्रसिद्ध चित्रकार और कार्टूनिस्ट हैं कि जहां भी जाएंगे रुपया बटोर लाएंगे।

अनाम अब क्या कहता? गर्वित स्वर में बोला 'आप अपनी मर्जी से

दे दीजिएगा। चिंता की कोई बात नहीं।

'फिर यह तय रहा कि मैं आपका यह एलबम कल प्रेस में दे दूं। छपाई और सजावट का सारा काम आपके जिम्मे रहा।

'कोई बात नहीं।

इसके बाद चाय पीकर वे दोनों—इन्दु और अनाम—वहां से चल पड़े। गली के पार पहुंचते ही अनाम ने इन्दु से शिकायत भरे स्वर में कहा 'तुम्हें उस सेठ के बच्चे की हां में हां नहीं मिलानी चाहिए, तुम्हें उसे डांटना चाहिए था वह कला के बारे में क्या जानता है ?

'भंवर बाबू निरे बुद्धू नहीं हैं।' इन्दु ने अपनी असहमति प्रकट करते हुए कहा 'उन्हें साहित्य और कला का अच्छा ज्ञान है। वे भी तुम्हारी तरह विदेशी साहित्य का अध्ययन करते हैं।

अनाम चिढ़ गया 'तुम भी कभी-कभी बहक जाती हो। मैं भंवर बाबू को बहुत पहले से जानता हूं। वे केवल उपन्यासों के नाम और उनके लेखकों को ही बता सकते हैं। चित्रकारी में उनका ज्ञान शून्य के बराबर है। कला चित में दो-चार चित्रकारों का नाम भी नहीं बता सकते हैं। ये खोखले बुद्धिजीवी हैं जिनका अपना कोई ठोस आधार नहीं।

इन्दु ने रुखाई से कहा 'हो सकता है।

बात कुछ देर के लिए रुक गई।

दोनों ने अलग-अलग रिक्शे में बैठते हुए एक दूसरे से विदा मांगी। इन्दु को अपने स्कूल जाना था।

रास्ते भर अनाम यही सोचता रहा कि इन्दु बदल रही है। घर तक पहुंचते-पहुंचते यह विचार काफी दूर हो गया।

सीढ़ियों में बरखा बैठी हुई कुछ लिख रही थी। बैसाखी की 'खट्-खट्' सुनकर वह चौंक पड़ी। अनाम के समक्ष वह पकड़कर खड़ी हो गई।

अनाम ने उसके सामने खड़े होकर पूछा 'तुम आज नहीं जाओगी ?

देखो, मैं माँ को तुम्हारी शिकायत कर दूँगा।

'कर दीजिए, मैं किसीसे नहीं डरती।'

बरखा का स्पष्ट उत्तर सुनकर वह विस्मित रह गया। बरखा की निर्भीकता उसे नई जान पड़ी। उसकी आँखों में विद्रोह की चिनगारियाँ जल रही थीं। अनाम ने उसे परामर्श देने के स्वर में कहा, 'तुम्हें अब अपना बचपना छोड़ देना चाहिए, अब तुम बड़ी हो गई हो।'

'मैं अपनी इच्छा के अनुसार करूँगी। भले-बुरे को मैं खूब समझती हूँ।'

'तुम्हारी माँ को बुलाऊँ?'

'बुला लीजिए।'

अनाम 'बच्ची है' सोचकर ऊपर की ओर बढ़ा। अभी वह दो सीढ़ियाँ नहीं चढ़ पाया था कि बरखा खिलखिलाकर हँस पड़ी। उसकी हँसी में तीव्र व्यंग्य था। अनाम उसे नहीं सह सका। उसने पलटकर देखा। बैसाखी का संतुलन बिगड़ गया। वह गिरता-गिरता बचा। उसकी कुहनी पर खरोंच आ गई।

तभी बरखा रुक-रुककर बोली, 'अधिक चोट तो नहीं आई, अनाम बाबू? सहारा दूँ?'

और वह हँसती हुई उसकी आँखों से ओझल हो गई।

भीतर पहुँचते-पहुँचते अनाम का हृदय भर आया और उसके मन में आया कि वह दूर निर्जनता में जाकर बस जाए, जहाँ उसपर दया करने वाला और व्यंग्य कसने वाला कोई भी न हो।

११

अनाम चार दिन तक किसीसे नहीं मिला। अनामिका उससे उसकी उदासी के बारे में बार-बार पूछती थी लेकिन अनाम 'मन ठीक नहीं' कहकर खामोश हो जाता था। उदासी और एकान्त के जीवन में उसका सौम्य

कवि फिर से जाग उठा। उसने दो-तीन कविताएं लिखीं जिनके शीर्षक बड़े विचित्र थे। 'कीचड़ में कमल और म   रात का हृदय चांद का तीर' 'तारों भरा आंचल टूटा चांद।   उन कविताओं में उसके मन की हीन भावनाएं प्रयोगवादी नये प्रतीकों और उपमाओं के साथ प्रकट हुई थीं। इन सभी के बीच इन्दु की स्मृति उसके मन पर छाती रही। चार दिन बीत गए। इन्दु उसके यहां नहीं आई। उसकी खोज-खबर नहीं ली। उसका अन्तर घृणा से भर उठा उसे अब मंवर बाबू मिल गए हैं न ? वह उनके साथ मोटर में सैर करने जाएगी। वह इस गरीब लेखक को क्यों सम्भालेगी ? उसने इन्दु का एक विचित्र चित्र बना दिया जिसके पहनावे पर सिक्के ही सिक्के चीख रहे थ।

सवेरा हो गया था। आसमान साफ था इसलिए धूप बड़ी तेज होकर चमक रही थी।

अनामिका ने खाना तैयार कर लिया था। वह खाना परोस कर लाई। अनाम ने पहला कौर लिया कि सीढ़ियों पर किसीके आने की आहट मिली।

अनामिका ने देखा दयाल बाबू थ।

दयाल धीरे-धीरे ऊपर बढ़ा। उसकी टूटी हुई चप्पल और मसा कुचला कोट और मैली पेंट जो घुटन के नजदीक तनिक फट भी गई थी वह अनुमान भी करने नहीं देती थी कि वह व्यक्ति लखपति हो सकता है।

दयाल के नाम को सुनते ही अनाम घबरा गया। फिर भी उसने उस घबराहट को गहरी आत्मीयता में परिवर्तित करते हुए दयाल का सम्मानित शब्दों में स्वागत किया। दयाल उसके मनोभावों को समझता हुआ बोला 'कुछ व्यक्तियों को अपनी और अपने परिवार वालों की बलि देने में ही आनंद आता है।

अनामिका को दयाल की बात रहस्य भरी लगी। वह जिज्ञासा भरी

दृष्टि से दयाल की ओर देखने लगी। अनाम का कौर हाथ का हाथ में रह गया। उसका खून जम-सा गया।

'तुम पीले पड़ गए? क्यों अनाम बाबू! कदाचित तुम इस अपमान का सह नहीं सकोगे! तुम्हारा अहम् चौंकता भी सकता है। लेकिन मैं [illegible] सूदखोर हूं। दया और प्रेम से रहित। हृदयहीन और कठोर। चतुर और हवा के रुख को पहचानने वाला। ऐसे व्यक्ति को कोई कुशल अभिनय द्वारा ठगकर ले जाए तो उसे कितना दुःख होगा। कितना गुस्सा आएगा।

अनाम के मन में पीड़ाओं के बादल छा गए। हर क्षण उसे लगा कि बादल फटकर बरस पड़ेगा और उसके अन्तराल को पीड़ाओं के सर्पों से भर देगा। उसने घबराहट से अनामिका की ओर देखा। अनामिका पूर्ववत् निस्पंद-सी खड़ी थी। दयाल की आंखों में क्रूरता थी। फिर भी अनाम ने अस्फुट स्वर में बड़बड़ाने की कोशिश की 'दयाल बाबू, आप थोड़ी देर शांत रहिए, मैं खाना खा लेता हूं।

'तुम्हें भूख लगती है?'

क्षण भर के लिए गहरी निस्तब्धता छा गई।

'मुझे विश्वास नहीं होता कि तुम्हें भूख लगती है या तुम भूख के अस्तित्व को स्वीकार करते हो। तुम्हारे लिए पेसा देवता है। प्रेरणा है। जीवन है। लेकिन तुम उसका कला के माध्यम या उसके नाम से आनन्द लेना चाहते हो।

अनामिका ने बीच में अवरोध उत्पन्न करना चाहा। दयाल ने उसे रोक दिया।

तुम चुप रहो मनो, यह भोजन के समय जरा भी प्रतिकूल परिस्थिति नहीं चाहता। असीम शांति चाहता है। लेकिन इससे पूछो कि जिनके घर में रोटी नहीं है हजार परेशानियां हैं वे रोटी कैसे खाते हैं? यह कलाकार जरूर है लेकिन इसमें इन्सानियत नहीं। यह मुझे और तुम्हें धोखा

देकर रुपये से क्या! मैं अपने आपको इन्सान नहीं मानता मैं सूदखोर हूं पर यह इन्सानियत के पुतले इन्सानियत को खूब पनपाते हैं? शायद मैं शैतान भी इससे अच्छा हूं।

'श्याम बाबू! अनाम चीख पड़ा।

'चीखते क्यों हो? सुनो यह मुझसे रुपया मां-बहिन की मूछ के नाम पर ले गया और खरीद लाया अपनी प्रमिका के लिए घड़ी।

अनामिका स्तम्भ-सी रह गई।

'तुमने मुझे विवश किया तुमने अनाम के बहिनों की दुहाई दी। पता नहीं मेरे जैसा पत्थर दिल इन्सान तुम्हारा कहना क्यों मान बैठा? सुनो, तुम सच बोलती हो बात स्पष्ट करती हो इसलिए मुझे तुम अपने प्रण से डिगा सकती हो। लेकिन इस चित्रकार ने मुझे धोखा देकर लूट लिया।

'मैंने आपको लूटा नहीं हैंडनोट लिखकर रुपया लिया है। अनाम ने कांपते स्वर में कहा।

'तुम्हारा हैंडनोट का पाँच रुपया भी कोई नहीं देगा। तुम्हारे पास है भी क्या? तुम कलाकार हो मूर्ख और गरीब!

'लेकिन श्याम बाबू आपको सभ्यता के बाहर नहीं होना चाहिए, म आपकी पाई-पाई दे दूंगा। आप दो-चार दिन और धैय रखिए।

श्याम ने इधर-उधर देखा और फिर कहा 'स्त्री के रूप और यौवन की दीप्ति में चकाचौंध होने वाले आदमी फिर नहीं संभलते। तुम्हें घर की जगह उस अध्यापिका की चिन्ता है। फिर भला तुम मेरा कर्ज क्या चुका सोगे? तुम्हें हमु चाहिए, उसको राजी करने के लिए तुम अपना खून भी गिरवी रख सकते हो। छि:!

अनाम को गुस्सा आ गया 'श्याम बाबू सीमा से बाहर न जाइए, मेंन कह दिया कि मैं कल ही आपके रुपये चुका दूंगा।

तब तो मुझे बड़ी प्रसन्नता होगी। लेकिन एक बात हम गरीब का

भी मानो मेरे मुफलिस भाग्य की कोई भी चतुर चालू और शिक्षित युवती तुमसे प्यार नहीं कर सकती । एक लफंगे को जान-बूझकर अपना पति कौन बनाएगी ? यहां कला और कलाकारों पर मिटने वाले हृदय नहीं हैं ।

अनाम को बहुत गुस्सा आया । उसने चाहा कि वह बैसाखी से वकील का सिर फोड़ दे । इस विचार से वह कांप भी उठा । उसने जाते हुए कहा 'अब आप यहां मत आइएगा, मैं अपने आप आपका रुपया पहुंचा दूंगा ।'

वकील ने घूमकर कहा 'मैं वकील हूं मैं अपना रुपया वसूल करना भी जानता हूं ।'

वकील चला गया । अनाम खाने की थाली को फेंकते हुए पागलों की तरह चिल्लाया 'जंगली मोच कमीना बदतमीज खाने को बाहर चला गया ।'

अनामिका उसे विस्मित-सी देखती रही ।

'यह आदमी नहीं शैतान है । इसकी सारी दौलत को चुराकर लुटा देनी चाहिए ।' वह फिर चिल्लाया ।

अनामिका ने कोई उत्तर नहीं दिया । वह बिखरे हुए खाने को एकत्रित करने लगी । वह इतनी शांत और दुखी थी जैसे वह अब रो पड़ने को आतुर है ।

जब अनाम बहुत देर तक बड़बड़ाता रहा और अनामिका ने कोई प्रोत्साहन नहीं दिया तब अनाम उसपर भड़का पड़ा 'तुम बोलती क्यों नहीं क्या तुम गूंगी हो ?'

'मुझे सुनने में ही आनंद है अनाम बाबू ।'

'ओह ! तुम भी अब सूक्तियों में बोलती । साफ क्यों नहीं कहतीं ?' उसने अपना सिर पकड़ लिया ।

अनामिका ने थाली हाथ में लेकर कहा 'मैं इतनी देर से यही सोच रही थी कि आपने मिथ्या भाषण क्यों किया ? क्या आप झूठ और बहाना नहीं बना सकते थे ? क्या आप मुझसे सच्ची बात नहीं कह सकते थे ?'

'मैंने कोई बहाना नहीं बनाया मैंने जो कहा सच कहा। मेरे घर पर अभी एक पैसा भी नहीं है। वहां से चिट्ठी भी आई थी।

'फिर आपने अपने परिवार के प्रति यह अन्याय क्यों किया ?

'तुम नहीं जानती कि प्यार में आदमी को क्या-क्या करना पड़ता है ? वहां प्यार की होड़ लगती है। इस होड़ में मुझे भी कुछ दांव पर लगाना होता है। तुम्हें कैसे पता लगे कि प्यार में आदमी कितना लाचार और विवश होता है। मैं रमु को प्यार करता हूं उस पार्टी में मैं कुछ न देकर उसका और अपना अपमान कैसे करवा सकता था। आखिर मैं अपने आपको उसका निकटतम मित्र मानता हूं। मित्रकार हूं ! तुम नहीं जानती कि यह सब क्यों होता है।

वह उत्तेजित हो गया था। उसकी आंखें नम हो गई थीं। अनामिका ने ठंडी आह लेकर कहा 'मैं कभी किसी मां को भूखा और नंगा नहीं देख सकती चाहे मुझे आजीवन कुंआरी रहना पड़े। चाहे मुझे जीवन भर प्यार की प्यास में तड़पना पड़े।

१२

थोड़ी ही देर में अनाम जरूरत से अधिक शांत और गंभीर हो गया। उसे कुछ सोचना और न सोचना दोनों अजब-से लगे। उसको दयाल के लौट जाने के बाद मन ही मन एक घुटन और अपमान महसूस हो रहा था। धीरे-धीरे उसे लगा कि उसके सिर में दर्द हो रहा है। वह पलंग पर लेट गया पर अधिक देर तक नहीं सो सका। दयाल ने उसे समझा कहा इस बात ने उसपर गहरा असर किया और वह खिन्नमन-सा इधर-उधर करवटें लेता रहा।

अनामिका जा चुकी थी।

उस एकांत में वह जिंदगी की राह कुहनियों का सम्बल लेकर गड़ा

हो गया। दो युवती और इसमें [redacted] गुजर रहे थे। उसने क्षण भर के लिए कल्पना की कि वह इसी तरह इन्दु के साथ जा रहा है। इन्दु मुस्का-मुस्का कर उससे बातें कर रही है।

'पर मंगरू के साथ कौन शादी करेगा?' दयाल के ये शब्द उसके मस्तक में घृणा के सागर को जन्म दे रहे थे। श्याम उसकी किंचित भी परवाह नहीं करता। वह बकवास है। 'इन्दु उसे सच्चे हृदय से चाहती है। वह स्वयं इन्दु को हृदय से चाहता है। लेकिन वह चार दिन से गई क्यों नहीं?' उसने अपने कपड़ों की ओर देखा जैसे वह जाने का विचार कर रहा है।

उसने कपड़े बदले। बैसाखी ली। घर से बाहर चल पड़ा। बाड़ी की बाईं ओर एक छोटी बन्द गली पड़ती थी। उस बन्द गली के सिरे पर बरखा एक काले युवक से हंस-हंसकर बातें कर रही थी। वह काला लड़का दृष्टि को अप्रिय लगने वाला था। उसके गालों की हड्डियां उभरी हुई थीं। उसने एक मोटी धोती और कुर्ता पहन रखा था। उसके बाल घुंघराले और घने थे जैसे हब्शियों के होते हैं।

बरखा पर जैसे ही श्याम की दृष्टि पड़ी वैसे [redacted] वह तनिक उच्च स्वर में बोली 'देखो शंकर, आज संध्या वेला तुम मुझे अवश्य बाग में मिलना उसी जगह जहां हम कल मिले थे।' फिर उसने नाक-भौं सिकोड़ा। उसकी हर हरकत में एक उच्छृंखलता थी।

श्याम ने आगे बढ़ते हुए सोचा 'वह करती रहे अपनी बला से।' वह तेजी से कदम बढ़ाने लगा।

कोई रिक्शा उसे नहीं दीखा। वह फुटपाथ के छोर पर खड़ा रहा। वहां खड़े-खड़े उसने सोचा कि दयाल बाबू इस भेद को सभी के सामने लायेंगे। क्यों नहीं वह मंगरू बाबू से रुपये लेकर दयाल को दे आए। इस विचार से उसे सांत्वना मिली। वह मंगरू बाबू से भी परिवार की एक

आवश्यकता बताएगा। वह ऐसा सोचकर तनिक चिंता से मुक्त हुआ।

रिक्शा आता हुआ दिखाई पड़ा। उसने अपनी बैसाखी को सँभाला। रिक्शा तय किया और उसमें बैठ गया।

जब वह भंवर बाबू के घर पर पहुंचा तब नौकर ने उसे बताया कि वे दफ्तर में हैं। आप वहीं पर चले जाएं।

वह उसी समय दफ्तर पहुंचा।

भंवर बाबू किसी काम में व्यस्त थे अतः उसे थोड़ी देर प्रतीक्षा-गृह में प्रतीक्षा करनी पड़ी। वह वहां बैठा हुआ प्रभावशाली शब्दावली ढूंढने लगा ताकि भंवर बाबू उसे टाल नहीं सकें।

आखिर वह समय आ गया जिसकी अनाम को प्रतीक्षा थी। वह भंवर बाबू की सामने वाली कुर्सी पर बैठ गया। भंवर बाबू उसे प्रश्न भरी दृष्टि से देखते रहे। उनका यह मौन अनाम को रुचिकर नहीं लगा।

'बात यह है ! वह कहता-कहता चुप हो गया।

'हां-हां, कहिए, घबराइए नहीं।

अनाम झेंप गया। उसके लाख चाहने पर भी भंवर बाबू उसके मन की घबराहट को भांप गए। तब उसका चेहरा पीला-पीला-सा लगा और उसकी वाणी में अस्थिरता आ गई, 'बात यह है कि मेरे घर' म पत्र आया है मेरी बहिन की शादी होने वाली है, मुझे एक हजार रुपयों की जरूरत है।

'आप घबराते क्यों है ? इसमें घबराने की बात ही क्या है ? आपकी बहिन की शादी हो रही है आप निर्भीक होकर स्थिति बतलाइए, घबराइए नहीं। भंवर बाबू के स्वर में बड़प्पन था और वे इस तरह कह रहे थ जैसे अनाम एक अनुभवहीन युवक हो।

'घबराता कहां हूं घर से चिट्ठी आई है। सरोज का विवाह है। पांच सौ रुपये आप मुझे रायल्टी के हिसाब में अग्रिम दे रहे हैं और पांच सौ और

दे दीजिए।

'मैं आपको पांच सौ इसके अतिरिक्त भी दूंगा।

'मैं आपका मतलब नहीं समझा।

'मेरे पास अभी दयाल बाबू आए थे। आपके हुंड नोट लेकर कह रहे थे कल अदालत में दावा करेगा।

अनाम का चेहरा सफेद हो गया। उसकी वाणी अवरुद्ध हो गई। उसका रक्त जम गया।

'मैं आपसे सख्त नाराज हूँ। ऐसे प्रेम में सिवाय हानि के और कुछ भी नहीं मिलेगा। घर वाले रोटी रोटी चिल्लाते रहें और आप यहां छोकरे में रुपया उड़ाते रहें ऐसी झूठी शान से क्या लाभ?

अनाम अपराधी की भांति सिर झुकाकर बैठा रहा।

'मने दयाल को पांच सौ रुपये दे दिए हैं, आप इस रसीद पर दस्तखत कर दीजिए। भंवर बाबू ने एक रसीद निकाली और अनाम ने बिना देखे ही उसपर हस्ताक्षर कर दिए।

'मैं जा रहा हूं। अनाम ने उठते हुए कहा।

'क्यों चाय नहीं पिएंगे।

'नहीं।

'हां सुनिए, आज हनु 'मान महल में आएगी आप जरूर आइएगा।

'हां हां। कहकर अनाम वहां से चल पड़ा।

वहां से सीधा वह बाग के एक वृक्ष के नीचे बैठ गया। शाम तक बैठा रहा। गुमसुम और व्यथित।

शाम के समय वह अपने आपको भुलाने के लिए भीरोज आ गया जहाँ साहित्यिक कलाकार और पत्रकार एकत्रित होते थे।

उसको देखते ही आशुतोष बोला 'यार। तुम बड़े कमीने हो दोस्तों की खिल्ली उड़ाने में तुम्हें क्या मजा मिलता है?

उसने कोई उत्तर नहीं दिया। वह चुपचाप बैठ गया।

नवरंग जो प्रयोगवादी कवि था गंभीर होकर कहने लगा 'यह इसकी हमेशा की आदत रही है। जिन मित्रों का साथ करेगा उन्हींको यह अपने चित्रों व कार्टूनों का विषय बनाएगा उनकी महानताओं को स्वीकार नहीं करेगा बल्कि उनके सत्य को विकृत करके पेश करेगा। ऐसी भी क्या कला है?

शशिमित्र सिगरेट का कश खींचकर बोला 'अनिल यह तैमूरलंग है हुशियार! कुछ आलोचकों को इसने खूब पटा रखा है।

नवरंग हंसकर बोला 'पूंजीवादी मनोवृत्ति को समझता है। जिनसे अपनी प्रशंसा करवानी होती है उसको यह पहले से ही तारीफ करने लगता है। उसका चित्र वह अपनी विचित्र कला में नहीं बनाता।

'पक्का व्यापारी कलाकार है।

अनाम ने मौन तोड़ा मैं अब भी आपकी बात नहीं समझा। आज आप किस बात पर बाल की खाल निकाल रहे हैं?

'लीजिए, आपको जैसे कुछ पता नहीं। चलचित्र के कॉमिक अभिनेता की भांति शशिमित्र बोला 'तुम फिल्म में काम कर लो।

'पता हो भी कैसे? भाई इसकी वह इन्दु जी है न आजकल एक उपन्यास लिख रही है। आप उसी उपन्यास के संशोधन में व्यस्त हैं। नवरंग गर्दन हिलाकर बोला वह मेज पर अंगुलियां भी नचा रहा था। तभी 'घोसा' साहब ने प्रवेश किया। उर्दू के प्रगतिशील शायर। शराबी। मुंहफट।

इन्दु जी इससे नाता जोड़ने वाली है उस संगदिल नाविद पसन्द नहीं। जानते हो वह क्या जिन्दगी का असली मजा न भरता है जो वह इनके हरीफों को मानने वाला हो?

सब खिलखिला कर हंस पड़े।

अनाम को गुस्सा आ गया। वह अपनी बैसाखी लेकर उठ खड़ा हुआ।

'तुम साहित्यकार नहीं ढोंगी हो तुम्हारे बीच बैठना भी गुनाह है। अपने आपका अपमान करवाना है।

वह उठ खड़ा हुआ।

सड़क पर विचारों में खोया हुआ वह चला जा रहा था। समीप में कौन आ रहा है और कौन जा रहा है, इसका उसे पता ही नहीं था।

अकस्मात् किसीने उसकी पीछे से बांह पकड़ी। उसने रुककर देखा— मनोज था।

एक सेठ का बेटा जिसकी भी कई कहानियां अनाम ने पहलेपहल संशोधित की थी किन्तु आजकल वह अच्छी कहानियां लिख लिया करता है।

'मुझे छोड़ दो मैं एकांत चाहता हूं।

'क्यों ?

तुम नहीं जानते कि आज का दिन मेरे लिए कितना भयानक है! तूफान पर तूफान आ रहे हैं। परेशानी पर परेशानी आ रही है। मेरा मन मेरे सभी परिचितों को लेकर क्षोभ से भर गया है। मैं चाहता हूं कि यहां से दूर बहुत दूर, क्षितिज के पार चला जाऊं! बच्चन की इस कविता— इस पार प्रिये तुम हो मधु है, उस पार न जाने क्या होगा ? के विपरीत अब मैं सोचता हूं—मुझे लगता है—यहां दुःख कटुताएं और अपमान के अतिरिक्त कुछ भी नहीं है मधु और प्रिय सब बकवास। सब झूठ।

मनोज उसकी ओर धीरे-धीरे मुस्कराता हुआ अपनी भौंहों को उठाकर बोला 'मैं तुम्हें ऐसी ही जगह ले चलता हूं जहां बच्चन जी की कविता साकार नजर आएगी।

'कहां।

'मेरे साथ आओ।

उसने शब्दों पर जोर देकर कहा 'लेकिन तुम जाओगे कहां ?

उसने बिलकुल सच कहा 'मेरी एक प्रेमिका है उसके पास तुम्हें ले

भमता हूँ।

तुम्हारी प्रेमिका ?

'वह एक सुन्दर और स्वस्थ युवती है। तुम उससे मिलकर बड़े प्रसन्न होओगे। वह बड़ी शिक्षिता और समझदार है लेकिन है एक वेश्या। यदि वहाँ वह तुम्हें अन्य व्यक्ति से प्रेम करती हुई मिल जाए तो बुरा न मानना। उसके प्यार का आधार हृदय नहीं पैसा है। भावना नहीं व्यापार है। फिर भी वह अपने आपको मेरी प्रेमिका समझती है। बोलो चलोगे ?

अनाम कुछ देर गंभीरता से मनोज के चेहरे का निरीक्षण करता रहा। मनोज एक चुस्त सैनिक की भांति पतलून की क्रीजों को तानकर खड़ा हो गया। इस बीच कई आदमी आए और गुज़र गए।

'कहीं वह तुम्हारा इन्तज़ार तो नहीं कर रही है ?

'कर ज़रूर रही है पर आज मैं वहां नहीं जाऊंगा। आज मैं तुम्हारे साथ ही चलूंगा। उसने उदासीनता से कहा।

वे दोनों एक चाय घोष के घर में घुसे। पूरा फ्लैट खाली से रंगा था। मनोज ने उसका चुम्बन लेकर उसका स्वागत किया और फिर कमरे में लगे कृष्ण प्रभु के चित्र से क्षमा-याचना की।

अनाम अपनी बैसाखी को कुर्सी के नीचे खिसकाकर बैठ गया। मनोज ने दोनों को उनका परिचय देते हुए कहा 'ये प्रसिद्ध चित्रकार हैं। चित्र बनाते हैं। यह तुमसे यानि मेरी माधवी (प्रमिला) से मिलने आए हैं। और मैंने तुम्हारे बारे में इन्हें सब कुछ समझा दिया है। मोनी ने एक गहरी दृष्टि अनाम पर फेंकी। इसके बाद मनोज काफी देर हंसी-मज़ाक करता रहा। अनाम नासमझ बच्चे की तरह उनकी बातों को सुनता रहा। तब मनोज मोनी को लेकर भीतर के कमरे में चला गया।

अनाम को 'थोथा' की बात सुई-सी चुभ गई थी। उसके कई मित्रों का भी ऐसा ही ख्याल था कि उसमें पुरुषत्व नहीं है। क्यों नहीं वह अपनी

परीक्षा कर ले। इस प्रेमिका के प्रेम का आधार हृदय नहीं पैसा है, मा
नहीं व्यापार है। तब ?

मनोज धीरे मुसकुराता हुआ वापस आ गया था।

प्रणाम के मुख पर पसीना देखकर बोला 'तुम पानी-पानी क्यों हो
हो ?

नहीं तो ?

'छुपा रहे हो।

'बात यह है कि मैं !

'सीख ले।

और मनोज ने तुरन्त उसे बैसाखी पकड़ाई और उसकी एक बी म
कर उसे भीतर के कमरे में प्रवेश दिया।

उस आलीशान कमरे में कामोत्तेजक चित्र टँगे हुए थे। प्रणाम ने
की नजर बचा के उन चित्रों पर एक दृष्टि डाली।

'माइए।

वह उनके समीप सजीले किशोर की तरह गर्दन नीची कर बैठ ग

मनोज ने बीच में अवरोध उत्पन्न किया। उसने संकेत करके
को बुलाया और कानों ही कानों में कुछ कहा। सोनी उसी स्वर में
कहकर मुस्करा भर दी।

सोनी ने प्रणाम के हाथों को अपने हाथ में ले लिया। बोली 'मा
टांग के क्या हुआ ?

'यह जन्म से ही ऐसी है।

'ओह !

'खिड़कियां बन्द कर दूं ?

प्रणाम ने कहा 'हां !

खिड़कियाँ बन्द हो गईं।

पाँच ही मिनट के बाद अनाम काँपता हुआ कमरे के बाहर निकला। वह पीड़ित मनुष्य की तरह था पर उसके मर्मों में एक अद्भुत शांति विराज रही थी।

सोनी ने उसका ज़ोर से हाथ पकड़ लिया।

"आप लंगड़े हैं तो क्या हुआ? क्या लंगड़ों के बाल-बच्चे नहीं होते? आप इतनी हीनता का अनुभव न करें। आप बहुत अच्छे पति बन सकते हैं।

अनाम ने सोनी का हाथ प्यार से पकड़कर कहा "अभी मुझे जाग जाने दो। मेरा दिमाग ठीक नहीं है। मैं जीवन में सफल हो जाऊंगा। मैं पुरुष हूँ संपूर्ण रूप से पुरुष!"

आध घंटे के बाद अनाम मनोज को कह रहा था "मैं एक क्षण के लिए भी नहीं भूला कि मैं लंगड़ा नहीं हूँ। मेरी टाँग सोनी के सुन्दर मुख के आगे मुझे भूलती हुई-सी लगी और मैं 'नारमल' हो गया। मुझे लगा कि मैं संसार का सबसे अभागा और दुखी प्राणी हूँ। लेकिन सोनी के असीम स्नेह ने मुझे बचा लिया। मैं भूल गया कि मैं क्या हूँ? मुझे यह भी याद नहीं रहा कि मैं लंगड़ा हूँ।

यह स्वर्ग की बातें हैं। ईश्वर की दी हुई सजा को हमें वरदान की तरह ग्रहण करनी चाहिए।

वरदान की भाँति मैं अभिशाप को ग्रहण नहीं कर सकता। मैं एक महत्त्वाकांक्षी प्राणी हूँ। मैं छोटे से छोटे और बड़े से बड़े आदमी से अपना सम्मान करवाना चाहता हूँ। मैं चाहता हूँ कि मुझे सभी केवल प्रेम की दृष्टि से देखें दया की दृष्टि से नहीं। किन्तु इस टाँग की वजह से मुझे बहुत अपमानित होना पड़ता है। इस टाँग का क्षणिक अपमान मुझे बरसों के सम्मान से अधिक पीड़ा जनक लगता है।

मनोज ने प्रभाग के दुखी भावों को स्नेह से दुलारते हुए कहा 'इस टांग को लेकर सभी तुम्हारा अपमान कर सकते हैं पर इन्दु नहीं। इन्दु ने आज तक जो प्रतिष्ठा पाई है वह तुम्हारे कारण। सुना है कि उसके कहानी संग्रह के प्रकाशन पर यहां की महिला जागृति परिषद्' एक समारोह कर रही है जिसका सभापतित्व यहां के कोई बड़े सेठ बनारसीदास मालपाणी कर रहे हैं।

'इन्दु ही मेरी भावनाओं को का करती है। मैं उसके उपन्यास पर इतनी मेहनत करूंगा कि वह निश्चय ही एक श्रेष्ठ कलाकृति होगी।

'तुम इन्दु से विवाह क्यों नहीं कर लेते ?

मैं उसे कहना चाहता हूं पर मेरी हिम्मत ही नहीं पड़ती। संभावित उत्तर को लेकर मेरे मन में भय-सा लगा रहता है।

तुम्हें शीघ्र कहना चाहिए। वह एक महत्वाकांक्षिणी युवती है। वह समाज में अपनी बहुत प्रतिष्ठा चाहती है। केवल एक भावना में ही तुम दोनों में समानता है।

मेरी भी ऐसी ही इच्छा है मनोज मैं इतना बड़ा और लोकप्रिय चित्रकार बनना चाहता हूं जिससे लोग मेरी टांग को भूलकर मेरी कृतियों पर केन्द्रीभूत हो जाएं। और इन्दु स्वयं विवाह की इच्छा प्रकट करे।

'ऐसा संभव है। क्योंकि तुम एक प्रतिभा सम्पन्न चित्रकार हो।

रात का गहरा आंचल फैल चला था।

उठते हुए मनोज ने कहा घर जाकर आराम करो। अपने मन की हीनता को ग्रंथियों में मत बदलने दो। बहुत-से व्यक्ति लंगड़े-बहरे होते हैं। वे तुम्हारी तरह पीड़ित-विचलित रहकर जीवन को पीड़ादायक थोड़े ही बनाते हैं ? और लोगों को तो तुम बहुत पसंद हो।

'हां उसने मुझे सचमुच नया आलोक दिया है। मैं उसका हृदय से आभारी हूं।

तीन दिन बीत गए। अनाम रात के सन्नाटे के संगीत को बड़ी बेचैनी से सुन रहा था। वह दो दिन से निराश-विकृत मस्तिष्क वाले प्राणी की तरह जीवन की नश्वरता और व्यर्थता पर विलाप कर रहा था। वह अनामिका को कहता रहा जीवन वृथा है। इन्दु उससे मिलने नहीं आ सकती तब उसके अपने प्राण तुच्छ हैं अर्थ और सम्मान तुच्छ हैं विश्व-ब्रह्मांड तुच्छ है। तब वह किसीको नहीं मानेगा इस सम्मान को इस गर्जन को।

यह नारी बड़ी विचित्र है दुर्निवार है।

प्रेम करती है द्वेष करती है और उन दोनों का सामंजस्य लेकर पुरुष को छलती रहती है।

अनाम को एक पत्र मिला था। इन्दु ने कार्य-व्यस्तता के कारण न आने की क्षमा मांगी थी। क्षमा के साथ उसने अनाम को एक ताड़ना भी दी थी 'यह प्रेम महत्वहीन है जो प्रगति के सम्मान को घटा दे। तुम्हारे घर वाले जब मेरे और मेरे ताहफे के बारे में सुनेंगे तब वे क्या विचारेंगे? वे सोचेंगे कि वह युवती उनके लड़के का पथ-विभ्रम कर रही है। और तुम भी कैसे मनुष्य हो। मानवीय और आत्मीय नाते-रिश्तों को भूलकर तुम एक लड़की के पीछे पागल हो रहे हो। प्रेम का ऐसा रूप हमारे परिवारों में शोभनीय नहीं होता। मैं तुमसे प्रार्थना करती हूं कि तुम मुझे समझने का प्रयास करोगे।

वह उसे समझने का प्रयास करेगा इस विचार ने उसपर हल्का सा आघात किया। उसे यह उम्मीद नहीं थी कि इन्दु उसे इस तरह का उत्तर देगी। स्वयं न मिलकर इस पत्र द्वारा ही उनके गहरे सम्बन्धों में अवरोध करने का प्रयास करेगी।

अनाम ऐसा नहीं होने देगा।

रात के ढलते तिमिर के साथ वह इन्दु के पास जाएगा। उसे सारी स्थिति के बारे में कहेगा। उसे समझाएगा आज के युग में एक प्रेमी किस प्रकार ऐसे कार्यों से बच सकता है? आज हमारे सम्बन्धों के प्रतीकों के रूप में ये तोहफे, भेंटें और पार्टियां बन गई हैं।

एक तारा टूटकर गिरा।

अनाम को लगा कि उसकी सबसे प्यारी भावना पर आघात हो गया है। उसका मुख पीला, गमगीन और उदास हो गया। उसे रह-रहकर श्याम पर ईर्ष्या और गुस्सा आता था। उस कम्बख्त ने इस बात का प्रचार प्रसार करके क्या पाया? दुष्ट है न, कष्ट देने में ही उसको आनन्द आता है।

इस तरह बेचैनी और आशंकाओं में रात व्यतीत होने लगी। उसने आशा पर उस रात उसे एक पल के लिए नींद नहीं आई। रह-रह कर उसे ख्याल आता था कि वह इन्दु के बिना सुख से नहीं रह सकता।

१४

क्षितिज के काले भाल पर कोहनूर हीरे के सदृश सूरज की बिन्दी दीप्त हुई।

अनाम तुरन्त दैनिक कार्यवाही से निवृत्त होकर इन्दु के घर की ओर चला। इतने सवेरे-सवेरे अनाम को देखकर इन्दु को विस्मय हुआ। वह उसे चाय का एक प्याला देती हुई बोली, 'तुम्हारी आंखों से लगता है कि तुम रात भर सोए नहीं।'

'तुम्हारा अनुमान ठीक है।'

'फिर तुम्हें काफी पीनी चाहिए।'

'नहीं, मुझे काफी की जरूरत नहीं है। मैं बिलकुल ठीक हूं। केवल मुझे एक बात के बारे में तुमसे पूछना है।'

'कहो।'

'तुम्हें मुझे ऐसा पत्र नहीं लिखना चाहिए। यह पत्र मेरे हृदय में कई प्रश्न एक साथ उगा सकता है। मुझे पीड़ित कर सकता है मुझे ईर्ष्यालु बना सकता है मेरे भाव-जगत में तूफान उठा सकता है।

इन्दु ने संभवत् अपनी दृष्टि घुमाई 'तुम्हें आवेश में आकर कुछ नहीं कहना चाहिए। हमारे भाव-लोक में भी विशेष एक लोक है वह है हमारा कर्तव्य-लोक। हम मानवीय भावनाओं और सद्गुणों के पुतले बने रहते हैं यदि हम स्वयं उनको व्यवहार में नहीं लाएँगे तब हमारा हर काम एक बोझा बन जाएगा।

'लेकिन मैंने अपने कर्तव्य के विरुद्ध कुछ नहीं किया। उस समय के उत्तेजित क्षणों में मेरे जैसा आदमी अपना सर्वस्व लुटाकर भी अपनी चाहने वाली को उसकी पसन्द की चीज लाकर देगा। यह बिलकुल स्वाभाविक है।

'भंवर बाबू ने जो कहा उसमें ऐसी कोई बात नहीं झलकती थी। तुममें एक प्रेमी की ईर्ष्या है। जब तुम्हें यह पता लगा कि भंवर बाबू मुझे मेरी मनपसन्द का तोहफा देना चाहते हैं तुमने श्याम से अपनी माँ-बहिन की दुहाई देकर रुपये लिए। यह बिलकुल गलत बात है। मुझे कतई पसन्द नहीं।

घनाम हतप्रभ-सा इन्दु के कठोर शब्दों को सुनता रहा।

वह अपनी दृष्टि घुमाकर बोली 'भंवर बाबू ने तुम्हारे हुंडनाट श्याम बाबू से लेकर मुझे दे दिए हैं। उन्हें भी तुम्हारा यह व्यवहार जरा पसन्द नहीं। यदि मेरी इज्जत का सवाल पैदा न होता तो वे श्याम को एक पैसा भी नहीं देते। उन्होंने मुझसे कहा श्याम कह रहा था कि घनाम की सारी कमाई इन्दु के घर जाती है। घनाम के घर वाले भूखों मरते हैं और यह इश्क मिजाजी में बरबाद हो रहा है। अब तुम्हीं बताओ कि एक लड़की यह सब कैसे सह सकती है? जो कोई इस बात को सुनेगा वह मेरे बारे में क्या सोचेगा? तुम्हारे घर वाले मुझे मास्टरनी का एक कुपात्र और छिनाल

रात के ढलते तिमिर के साथ वह इन्दु के पास जाएगा। उसे सारी स्थिति के बारे में कहेगा। उसे समझाएगा, आज के युग में एक प्रेमी किस प्रकार ऐसे कार्यों से बच सकता है? आज हमारे सम्बन्धों के प्रतीकों के रूप में ये तोहफे भेंटें और पार्टियां बन गई हैं।

एक तारा टूटकर गिरा।

अनाम को लगा कि उसकी सबसे प्यारी भावना पर आघात हुआ गया है। उसका मुख पीला गमगीन और उदास हो गया। उसे रह रहकर श्याम पर ईर्ष्या और गुस्सा आता था। उस कम्बख्त ने इस बात का प्रचार-प्रसार करके क्या पाया? दुष्ट है न कष्ट देने में ही उसको आनन्द आता है।

इस तरह बेचैनी और आशंकाओं में रात व्यतीत होने लगी। उसने साल भर उस रात उसे एक पल के लिए नींद नहीं आई। रह-रह कर उसे ध्यान आता था कि वह इन्दु के बिना सुख से नहीं रह सकता।

१४

क्षितिज के काले भाल पर कोहनूर हीरे के सदृश सूरज रूपी बिन्दी दीप्त हुई।

अनाम तुरन्त दैनिक कार्यवाही से निवृत्त होकर इन्दु के घर की ओर चला। इतने सवेरे-सवेरे अनाम को देखकर इन्दु को विस्मय हुआ। वह उसे चाय का एक प्याला देती हुई बोली 'तुम्हारी आंखों से लगता है कि तुम रात भर सोए नहीं।

'तुम्हारा अनुमान ठीक है।

'फिर तुम्हें काफी पीनी चाहिए।

'नहीं मुझे काफी की जरूरत नहीं है। मैं बिलकुल ठीक हूं। केवल मुझे एक बात के बारे में तुमसे पूछना है।

'कहो।

तुम्हें मुझे ऐसा पत्र नहीं लिखना चाहिए। यह पत्र मेरे हृदय में कई प्रश्न एक साथ उठा सकता है। मुझे पीड़ित कर सकता है, मुझे ईर्ष्यालु बना सकता है, मेरे भाव-जगत में तूफान उठा सकता है।

इन्दु ने यंत्रवत् अपनी दृष्टि घुमाई, 'तुम्हें आवेश में आकर कुछ नहीं कहना चाहिए। हमारे भाव-लोक में भी विशेष एक लोक है, वह है हमारा कर्तव्य-लोक। हम मानवीय भावनाओं और सद्गुणों के पुतले बन रहते हैं, यदि हम स्वयं उनको व्यवहार में नहीं लाएंगे तब हमारा हर कार्य एक धोखा बन जाएगा।

'लेकिन मैंने अपने कर्तव्य के विरुद्ध कुछ नहीं किया। उस समय के उत्तेजित क्षणों में मेरे जैसा आदमी अपना सर्वस्व लुटाकर भी अपना चाहने वाली को उसकी पसन्द की चीज लाकर देता। यह बिलकुल स्वाभाविक है।

'भंवर बाबू ने जो कहा, उसमें ऐसी कोई बात नहीं खटकती थी। तुममें एक प्रेमी की ईर्ष्या है। जब तुम्हें यह पता लगा कि भंवर बाबू मुझे मेरी मनपसन्द का तोहफा देना चाहते हैं, तुमने दयाल से अपनी मां-बहिन की दुहाई देकर रुपये लिए। यह बिलकुल गलत बात है। मुझे कतई पसन्द नहीं।

अनाम हतप्रभ-सा इन्दु के कठोर शब्दों को सुनता रहा।

वह अपनी दृष्टि घुमाकर बोली, 'भंवर बाबू ने तुम्हारे हजार दयाल बाबू से लेकर मुझे दे दिए हैं। उन्हें भी तुम्हारा यह व्यवहार जरा पसन्द नहीं। यदि मेरी इज्जत का सवाल पैदा न होता तो वे दयाल को एक पैसा भी नहीं देते। उन्होंने मुझसे कहा, दयाल कह रहा था कि अनाम की सारी कमाई इन्दु के घर जाती है। अनाम के घर वाले भूखों मरते हैं और वह इधर ऐयाशी में बरबाद हो रहा है। अब तुम्हीं बताओ कि एक लड़की यह सब कैसे सह सकती है? जो कोई इस बात को सुनेगा, वह मेरे बारे में क्या सोचेगा? तुम्हारे घर वाले मुझ सामान्य नारी को एक कुलटा और छिनाल

के अतिरिक्त कुछ समझेंगे ही नहीं।

'तुम्हारा ऐसा सोचना सर्वथा निराधार है।

'मैं ऐसा कहां सोचती हूं ? ऐसा तो दूसरे सोचते हैं और मैं सुनती हूं।

प्रनाम ! उसने चूक निगलकर मुख से धीरे-धीरे कहा 'मैंने तुम्हारे घर सौ रुपये भेज दिए हैं। भविष्य में तुम पहले उनका ध्यान रखोगे। इन्दु ऐसी लड़की नहीं है जिसके पीछे तुम अपना सर्वस्व विसर्जन कर दो।

प्रनाम को यह बात दूसरे सम्बन्धों की सूचनात लगी।

'इन्दु मुझे समझने की कोशिश करो।

'मैं इसकी आवश्यकता नहीं समझती। मैं तुम्हें एक अच्छे आदमी और श्रेष्ठ कलाकार के रूप में देखना चाहती हूं।

इन्दु के इस वाक्य ने बात के सिलसिले को समाप्त कर दिया।

प्रनाम उठने लगा। इन्दु ने तुरन्त उससे कहा 'तुम्हें मेरी बातों को समझने का प्रयास करना चाहिए। इन बातों से हमारे सम्बन्धों में अन्तर नहीं आएगा।' 'और सुनो परसों मेरा स्वागत होने वाला है। तुम्हें वहां जरूर आना है।

जब प्रनाम वहां से चला तब उसका मन सुन्न हो गया था। उसके मन में मर्ममिश्रित व्यथा छा गई जो उसको उन्मादित-सा करने लगी। वह व्यर्थ ही इधर-उधर की गलियों में घूमता रहा। उसके सारे वस्त्र भीगकर गीले हो गए। चलने में उसे तकलीफ होती थी। लेकिन आज उसे आनन्द-सा आ रहा था। कभी-कभी उसे भयंकर गुस्सा भी आता था कि वह क्यों जिन्दा है इस संसार में ? इस संसार में उस जैसे पंग पंग मनुष्य को जीने का हक नहीं। वह श्रेष्ठ कलाकार है लेकिन यहां कलाकार का कौन सम्मान करता है ? यहां कलाकार को एक मूर्ख और बेकार व्यक्ति समझते हैं जो अपने महत्वपूर्ण जीवन को कला की साधना में खराब किया करता है।

वह इसी प्रकार सोचता-विचारता मनोज के घर पहुंच गया। मनोज

मार्क्स का 'कर्मीज समर' पढ़ रहा था। उसकी बैसाखी की 'खट्-खट्' सुन कर वह बिना देखे ही बोला 'आओ अनाम आज बेवक्त कैसे आ गए?'

अनाम ने कोई उत्तर नहीं दिया। वह गम्भीर मुद्रा में बैठ गया। उसका मुंह उतरा हुआ था तथा उसकी आंखों में व्यथा की चिनगारियां स्पष्टतया लक्षित हो रही थीं।

'बात क्या है?' उसने पुस्तक बन्द करके कहा।

'इन औरतों के बारे में तुम्हारा क्या ख्याल है?'

प्रश्न ऐसा था कि मनोज सावधान हो गया। वह अनाम के चेहरे पर अपनी दृष्टि गाड़कर बोला 'यह आते ही तुमने 'एटम' का प्रयोग कर लिया।'

'और आदमी यदि लंगड़ा और गरीब हो? उसके बड़ा परिवार हो तो उसे क्या करना चाहिए?' वह उत्तेजित होकर बोला।

'एटम के बाद हाइड्रोजन का विस्फोट! बंधुवर, मैं जरा अभी मस्ती के मूड में हूं। इस चक्कर में पड़ना नहीं चाहता।'

'तुम पैसे वाले हो न, दूसरों के दर्द में तुम क्यों पड़ोगे?'

मनोज की मुद्रा गंभीर हो गई। उसकी तीक्ष्ण दृष्टि ने अनाम की आकृति के अवसाद और करुणा को समझ लिया। वह प्यार से बोला 'औरत सिर्फ औरत है। वह प्यार करती है मैना की तरह, वह घृणा करती है निष्प्रं गणिका की तरह। वह स्नेह देती है यशोदा की तरह और उपेक्षा करती है तुम्हारी इन्दु की तरह। वह मेनका की तरह मजबूर और नरगिस की 'कम्मन' की तरह स्वतंत्र है। कहने का तात्पर्य यही है कि औरत सिर्फ औरत है।'

उसकी बोली बन्द होते ही अनाम ने पूछा 'इन्दु की तरह उपेक्षा?'

'इन्दु तुम्हें प्यार करती है' मेरा यह अनुमान गलत निकला। वह एक महत्त्वाकांक्षिणी युवती है। उसका लक्ष्य जीवन में श्रेष्ठ पद पाने का है। वह बड़ी स्वार्थी और चतुर है। वह यह अच्छी तरह जानती थी कि तुमसे सम्पर्क होने से उसकी रचनाएं संशोधित हो-होकर अच्छे से अच्छे पत्रों में छप सकती।

के अतिरिक्त कुछ समझते ही नहीं।

'तुम्हारा ऐसा सोचना सर्वथा निराधार है।

'मैं ऐसा कहा सोचती हूं ? ऐसा तो दूसरे सोचते हैं और मैं सुनती हूं।

प्रनाम ! उसने चूक निगलकर कुत्रा से धीरे-धीरे कहा 'मैंने तुम्हारे पर सौ रुपये भेज दिए हैं। भविष्य में तुम पहले उनका ध्यान रखोगे। इन्दु ऐसी लड़की नहीं है जिसके पीछे तुम अपना सर्वस्व विसर्जन कर दो।

प्रनाम को यह बात दूटते सम्बन्धों की शुरुआत लगी।

'इन्दु मुझे समझने की कोशिश करो।

'मैं इसकी आवश्यकता नहीं समझती। म तुम्हें एक अच्छे आदमी और श्रेष्ठ कलाकार के रूप में देखना चाहती हूं।

इन्दु के इस वाक्य न बात के सिलसिले को समाप्त कर दिया।

प्रनाम उठने लगा। इन्दु ने तुरन्त उससे कहा 'तुम्हें मेरी बातों को समझने का प्रयास करना चाहिए। इन बातों से हमारे सम्बन्धों में अन्तर नहीं आएगा ? और सुनो परसों मेरा स्वागत होने वाला है। तुम्हें वहां जरूर आना है।

जब प्रनाम वहां से चला तब उसका मन गुम हो गया था। उसके मन में मयमिश्रित व्यथा छा गई जो उसको उन्मादित-सा करने लगी। वह व्यर्थ ही इधर-उधर की गलियों में घूमता रहा। उसके सारे वस्त्र भीगकर गीले हो गए। चलने में उसे तकलीफ होती थी। लेकिन आज उसे आनन्द-सा आ रहा था। कभी-कभी उसे भयंकर गुस्सा भी आता था कि वह क्यों जिन्दा है इस संसार में ? इस संसार में उस जैसे अंग भंग मनुष्य को जीने का हक नहीं। वह श्रेष्ठ कलाकार है लेकिन यहां कलाकार का कौन सम्मान करता है ? यहां कलाकार को एक मूर्ख और बेकार व्यक्ति समझते हैं जो अपने महत्वपूर्ण जीवन को कला की साधना में खराब किया करता है।

वह इसी प्रकार सोचता-विचारता मनोज के घर पहुंच गया। मनोज

मारेंस का 'चटर्लीज लवर' पढ़ रहा था। उसकी बैसाखी की 'खट्-खट' सुन कर वह बिना देखे ही बोला 'आओ अनाम आज बेवक्त कैसे आ गए ?'

अनाम ने कोई उत्तर नहीं दिया। वह गम्भीर मुद्रा में बैठ गया। उसका मुंह उतरा हुआ था तथा उसकी आँखों में व्यथा की चिनगारियां स्पष्टतया लक्षित हो रही थीं।

'बात क्या है ?' उसने पुस्तक बन्द करके कहा।

'इन औरतों के बारे में तुम्हारा क्या ख्याल है ?'

प्रश्न ऐसा था कि मनोज सावधान हो गया। वह अनाम के चेहरे पर अपनी दृष्टि गड़ाकर बोला 'यह आते ही तुमने 'एटम' का प्रयोग कर लिया।'

'और आदमी यदि लंगड़ा और गरीब हो ? उसके बड़ा परिवार हो तो उसे क्या करना चाहिए ?' वह उत्तेजित होकर बोला।

'एटम के बाद हाइड्रोजन का विस्फोट ! बंधुवर, मैं जरा अभी मस्ती के मूड में हूं। इस चक्कर में पड़ना नहीं चाहता।'

'तुम जैसे बात हो न दूसरों के दर्द में तुम क्यों पड़ोगे ?'

मनोज की मुद्रा गंभीर हो गई। उसकी तीक्ष्ण दृष्टि ने अनाम की आकृति के अवसाद और करुणा को समझ लिया। वह प्यार से बोला 'औरत सिर्फ औरत है। वह प्यार करती है सीता की तरह वह घृणा करती है तिष्य रक्षिता की तरह। वह स्नेह देती है यशोदा की तरह और उपेक्षा करती है तुम्हारी इन्दु की तरह। वह मेनका की तरह मजबूर और शरत की 'कमल' की तरह स्वतंत्र है। कहने का तात्पर्य यही है कि औरत सिर्फ औरत है।'

उसकी बोली बन्द होते ही अनाम ने पूछा 'इन्दु की तरह उपेक्षा ?'

'इन्दु तुम्हें प्यार करती है मेरा यह अनुमान गलत निकला। वह एक महत्वाकांक्षिणी युवती है। उसका लक्ष्य जीवन में श्रेष्ठ पद पाने का है। वह बड़ी स्वार्थी और चतुर है। वह यह अच्छी तरह जानती थी कि तुमसे सम्पर्क होने से उसकी रचनाएं संशोधित हो-होकर अच्छे से अच्छे पत्रों में छप सकती

है। इसलिए तुम्हें अपना मीत बनाया। लेकिन वह एक लंगड़े को अपना जीवन-साथी नहीं बना सकती।

'यह तुम्हारे मन की घृणा बोल रही है। वह तुमसे बातचीत नहीं करती है इससे तुम उसके बारे में ऐसी बात बकते हो।

'मैं बकता नहीं हूँ ठीक कहता हूँ। आजकल वह शंकर बाबू के साथ मोटर में घूमती है। उसका सम्मान होने वाला है, उसमें बड़े-बड़े आदमी आएंगे। तब मैं देखूंगा कि वह तुम्हें हाथ पकड़कर अपने पास बिठाती है या नहीं?

'वह मुझे प्यार करती है।' यह वाक्य उसने जब बड़े आत्मविश्वास से कहा तब उसके हृदय पर मुक्का-सा लगा। जैसे उसने अपने आपको धोखा देकर यह विश्वास दिलाया हो।

१५

सौ रुपयों की पहुँच की चिट्ठी आई थी। मां ने अति स्नेहपूरित शब्दों में उसको आशीष लिखी थी। उसकी चिट्ठी में उसकी आन्तरिक मार्मिकता फूट-फूट पड़ रही थी। उसने मातृत्व की सीमा दिखाकर लिखा था 'तुम्हारी छोटी बहिन कई दिनों से बिस्तर पर पड़ी हुई है। उसे डबल निमो-निया हो गया था। वह इतनी दुर्बल और कुरूप हो गई है जैसी प्रेत छायाएं। शरीर सूखकर कांटा हो गया। उसकी दीप्तिमयी आंखें केवल गड्ढों के रूप में रह गई हैं। धनाम! तुम्हारे द्वारा रुपये मिलने पर मैं उसके प्राणों को बचाने में समर्थ हो गई हूँ। तुम्हारे रुपये पाकर मुझे लगा कि तुम्हारा हृदय अत्यन्त निर्मल और पवित्र है। तब तुम्हारा मुख नवजात शिशु की पवित्रतम भावनाएं लेकर मेरे सम्मुख नाच उठा। मुझे तुम इतने रुपये हर माह भेजते रहो तो मैं इन्हें पर्याप्त समझकर एक स्वाभिमानिनी का जीवनयापन कर सकूंगी और तकाजा द्वारा उत्पन्न मानसिक यंत्रणाओं से बच

सकूंगी।

'एक बात मने और सुनी है। वह बात तुम्हें अप्रिय लग सकती है पर बाद में अधिक यातनामय लगेगी। मित्र का नाम नहीं बताऊंगी लेकिन वह कभी झूठ नहीं बोलता। उसने लिखा है कि तुमने एक मास्टरनी को अपनी जीवन-साथी के रूप में चुना है। कदाचित तुम्हें इन मास्टरनियों के जीवन चरित्र का ज्ञान नहीं है। ये चरित्र की भ्रष्ट और स्वभाव की उच्छृंखल होती हैं। अभिनय में कुशल और प्रकृति की क्रूर होती हैं। यदि ऐसा न होता तो वह तुम्हारी कमाई का बहुत बड़ा हिस्सा आमोद प्रमोद में तथा सैर-सपाटे में खर्च नहीं करवाती। मैं उसे कठोर स्वभाव वाली और निर्दयी भी कहूंगी क्योंकि वह तुम्हारे घर की दशा से परिचित होकर भी तुम्हें अपने कुटुम्ब के प्रति उत्तरदायी बनने को नहीं कहती। ऐसी युवती को तुम गृह लक्ष्मी बनाकर सुख से नहीं रह सकोगे। वह एक संभ्रांत कुल की होनी चाहिए। उसके मुख पर गरिमामय सुकुमारता और उज्ज्वलता होनी चाहिए ताकि सुख और व्याम में भी उसके होठों पर जीवन भरी आह्लाद मुस्कान नाचती रहे।

माँ का यह पत्र उसे उत्तेजित करने के लिए पर्याप्त था। इन्दु के बारे में माँ के जो विचार थे वे बहुत निम्न और ओछी प्रकृति के द्योतक थे। इन्दु एक संभ्रांत और प्रेम-कुसुम-मधुर स्वभाव वाली है। उसने स्वयं मुझे बिना पूछे ही मेरी माँ को रुपये भेजे। यह उसकी सज्जनता का प्रमाण है।

फिर उसके मस्तिष्क के मंच पर एक मासी किन्तु उदास आकृति खड़ी हो गई। जिसका चेहरा दारुण दुःख के कारण विकृत हो गया था। वो एक अपमानित-कर्मकिमी-सी उसके सम्मुख खड़ी होकर कह रही थी कि आप उसके सम्बन्धों पर केवल एक दृष्टि से विचार करेंगे कि वह अनाम की कमाई पर ऐश कर रही है। अनाम अपनी माँ और बहिनों का मुख मारता है और इन्दु के लिए सुख के साधन एकत्रित करता है। वह निरन्तर

विभिन्न कल्पनाएं करके अपने आपको पीड़ित और उत्तेजित कर रहा था।

चार बज गए थे।

धूप अधिक तेज होकर चमक रही थी। सड़क पर यात्रियों का आवागमन मंद पड़ गया था। तांगे रिक्शे और बसें उसी रफ्तार से आ-जा रही थीं।

अकस्मात बरखा की मां ने उसके कमरे में प्रवेश किया। उसके चेहरे पर व्यग्रता झलक रही थी। उसका स्वर घबराया हुआ था। उसने धीरे से उसके निकट बैठकर कहा 'अनाम बाबू, इस बरखा को क्या हो गया है? आप ही अब इसे समझाइए न?'

'क्यों क्या हुआ?' आश्चर्यचकित होकर अनाम ने पूछा।

'हुआ क्या? एक लड़के से वह प्यार कर बैठी। उसके साथ घूमती फिरती रहती है। भला बताइए, क्या यह उम्र प्यार करने की है? अभी तो वह बच्ची है।'

'उसको समझा दीजिए।'

'वह समझती नहीं। कल रात मैंने उसे लकड़ी से पीटा भी, उसे जान से मारने की धमकी भी दी पर परिणाम कुछ नहीं निकला। आज सबेरे सबेरे वह फिर उस लड़के से मिलने चली गई।'

अनाम ने बरखा की मां की आंखों में अग्नि-परीक्षा के समय एक नारी के नेत्रों में जो आकुलता और चिन्ता विद्यमान होती है वह देखी। उसका चेहरा सफेद-सफेद-सा लगा।

अनाम ने धैर्य देते हुए कहा 'आप उसे शांति से समझाइए, यह मारना पीटना काम को और बिगाड़ देगा।' 'क्या आप उसकी तुरन्त शादी की व्यवस्था नहीं कर सकते?'

'कैसे कर सकते हैं? परिवार की दरिद्रता और लड़की की कुरूपता दोनों ही बाधक हैं। देखिए, वह आपका बहुत कहना मानती है अच्छे

विश्वास है कि आप उसे समझा देंगे और वह आपका कहना मान लेगी। अच्छा मैं चली उन्होंने इस बात को किसीको न कहने के लिए कहा था। लेकिन मैं विवश थी आपको कहना ही पड़ा। मान-मर्यादा का प्रश्न जो ठहरा।

वह मनाम का उत्तर सुने बिना ही चली गई।

१६

आयोजन में जैसे ही पुस्तक मनाम के हाथ में आई वैसे ही उसका मुंह उतर गया। ऐसे आघात की उसे स्वप्न में भी कल्पना नहीं थी। उसकी चेतना विक्षुब्ध हो उठी और उसने तीखी और घृणा भरी दृष्टि से इन्दु को देखा जो सेठ किसनलाल से शिष्टाचारपूर्ण ढंग से मुस्कराकर वार्तालाप कर रही थी। प्रधान अतिथि कोई मिनिस्टर थे वे अभी तक नहीं आए थे। सभापति पगड़ी पहने हुए दो-चार व्यक्तियों से व्यापार की बातचीत कर रहे थे। उपस्थिति बार-बार इन्दु की ओर देखकर उसकी कहानियों की प्रशंसा कर रही थी।

'इन्दु ने उसके साथ कितना बड़ा छल किया।' यह विचारकर मनाम की आत्मा दुःख से भर आई। उसकी आंखें विस्मय भरे दुःख से चमक उठीं।

मनाम ने इन्दु की साहित्यिक प्रवृत्ति को बल और प्रोत्साहन दिया। अपना चित्त न लगाकर उसने इन्दु की कहानियों को पूरा-पूरा दुबारा लिखा। उन्हें प्रकाशित कराया। उसका पारिश्रमिक दिलाया। अपने खास-खास मित्रों से कहकर उसकी कहानियों की जगह-जगह चर्चा कराई इसका फल उसने उसे इस अपमान के साथ दिया। उसकी इच्छा हुई कि वह रो पड़े।

उसने टूटे दिल से एक बार पुस्तक को फिर खोला और समर्पण वाला पृष्ठ पढ़ा—"आदरणीय श्री शंकरलाल जी को जो साहित्य के प्रेमी और पोषक हैं।"

और जब प्रभात ने बहुत दिन पहले उसे पूछा था तब उसने कितने भावपूर्ण स्वर में कहा था कि वह अपनी पहली कृति उसे ही प्यार के साथ भेंट करेगी। फिर इन्दु ने ऐसा क्यों किया? उसके सामने ऐसी मजबूरी क्या आ गई?

तभी एक सज्जन ने कहा "मिनिस्टर साहब आ गए हैं। भीड़ में क्षण भर के लिए हल्का कोलाहल उठा जो बाद में गहरी शांति में बदल गया। सभापति और प्रधान अतिथि ने अपने आसन करतल ध्वनि के बीच ग्रहण किए। स्वागत समिति विद्यादेवी के भाषण के बाद स्थानीय साहित्यकारों के भाषण हुए। अपने भाषण में प्रभात ने इन्दु की बहुत प्रशंसा की। हालांकि आज वह इन्दु से सख्त नाराज था लेकिन वह इन्दु की सार्वजनिक आलोचना करना नहीं चाहता था ऐसा करने से उसे डर था कि इन्दु उससे सदा के लिए बिगड़ सकती है। उसने अत्यन्त विनम्र शब्दों में इन्दु की प्रशंसा करते हुए कहा श्रीमती होमवती देवी तथा शिवा विमला लूथरा चन्द्रकिरण सौनरिक्सा तथा मालती परुलकर के बाद कुमारी इन्दु (वह क्षण भर रुका और उसने मन ही मन उसे 'मेरी प्रिय इन्दु' कहा) ने अपनी सशक्त लेखनी द्वारा जो साहित्य सर्जन करना प्रारंभ किया है उसमें नारी-मनोभूमि की यथार्थ अनुभूति चित्रण हुआ है। उनकी कला नारी-जीवन का एक अछूता पहलू लिए हुए है। शैली की दृष्टि से मैं इन्हें सभी लेखिकाओं में अग्रणी मानता हूँ। मैं शुभकामना करता हूँ कि वे इसी भांति निरन्तर साहित्य रचना करती रहेंगी।

मिनिस्टर ने साहित्य पर एक लघु भाषण दे दिया। उसने अन्त में इतना ही कहा 'इन्दु जी अभी उदीयमान लेखिका हैं साहित्य-सर्जन में वे शीघ्र ही श्रेष्ठता प्राप्त करेंगी ऐसी आशा है।

तालियाँ!

आयोजन समाप्त होने के बाद भंवर बाबू ने इन्दु से 'सांस्कृतिक संगम'

के मंत्री के यहाँ भोजन करने को जाने के लिए कहा। प्रनाम एक कोने में खड़ा हुआ साहित्यिक मित्रों की फब्तियां सुन रहा था। एक तरुण कवि कह रहा था 'बेचारे मकरंद के तीन कविता-संग्रह निकले पर उसके लिए कोई भी आयोजन नहीं हुआ।

एक व्यापारी ने भद्दी हंसी हंसते हुए कहा 'इन्दु जी के पुत्र प्रनाम जी ने इतनी ख्याति अर्जित कर ली है पर उनके सम्मान में आयोजन तो क्या साधारण गोष्ठी भी नहीं हुई।

हंसी।

प्रनाम के मन में तिलमिलाहट।

भंवर बाबू प्रनाम को उस भोज में सम्मिलित न करने के प्रयत्न में थे। उनकी विचारधारा एक प्रतिद्वन्द्वी की होकर भी काफी समझ थी पर उन्होंने कभी भी इन्दु के समक्ष अपनी गंभीरता का नहीं तोड़ा। प्रायः वे इन्दु के समक्ष अपनी मोटी-भद्दी पत्नी की प्रशंसा ही करते रहते थे। उन्हें बस एक ही बात का दुःख था कि उनकी पत्नी साहित्य-रुचि की नहीं है।

इन्दु की सहेलियां उसे घेरे हुई थी। भंवर बाबू बार-बार आग्रह कर रहे थे पर इन्दु उनके आग्रह पर विशेष ध्यान नहीं दे रही थी। केवल वह हर बार इतना ही कहती थी। मैं चलती हूं और वापस बातचीत में मग्न हो जाती थी। उसे अपनी प्रशंसा सुनने में अत्यन्त आनन्द आ रहा था। उसके चेहरे पर गर्व की दीप्ति और भी थी।

अन्त में भंवर बाबू को अपना स्वर बदलना पड़ा।

इन्दु ने अपनी सहेलियों से विदा मांगी। उसे इस व्यस्तता में प्रनाम का ध्यान तक नहीं आया। प्रनाम उसी कोने में खड़ा हुआ इन्दु के आग्रह की प्रतीक्षा कर रहा था और मन ही मन वह प्रशंसा से इन्दु में उत्पन्न स्थिरापित दर्प के बारे में एक मनोवैज्ञानिक की तरह विवेचन कर रहा था।

वह चली। उसने प्रनाम को नहीं देखा। प्रनाम पुत्र से पुकार कर

अगर वह लंगड़ा नहीं होता तो इन्दु उसकी उपेक्षा नहीं करती। हालांकि उसकी अन्तःप्रवृत्तियां बार-बार इसीपर जोर दे रही थीं कि इन्दु और उसके बीच के अंतर का कारण उसकी टूटी टांग नहीं पैसा है किन्तु वह अपने आपको टांग का वास्ता देकर ही सन्तोष कर रहा था।

रात को जब वह घर पहुंचा तब अनामिका अपने घर जा चुकी थी। इस एकान्त में कटु स्मृतियां उसे और सताने लगीं। घर आकर वह बिना भोजन किए ही सो गया।

२२

बिमला का उपन्यास निकल गया। उसने घर आकर अनाम को एक प्रति भेंट की साथ ही अपनी सम्मति लिख देने का अनुरोध किया। बिमला ने इस बीच प्रकाशित अनाम के एक लेख की बड़ी तारीफ की जिसमें एक लड़की के अनैतिक सम्बन्धों पर बड़ी चतुराई से प्रकाश डाला गया था। वह नायिका अपने मुंह बोले भाई से प्रेम करती थी उसका उसके साथ अनैतिक सम्बन्ध था किन्तु विवाह के बाद वर्षों तक यह सम्बन्ध इस 'भाई' शब्द के पीछे चलता रहा और लेखक ने बड़े रहस्यात्मक ढंग से इन दोनों चरित्रों का चित्रण किया था।" इस लेख के साथ अनाम के तीन-चार चित्र भी थे जो उसकी शैली के श्रेष्ठ नमूने थे। बिमला को भंवर बाबू ने यह भी बताया था कि इसकी नायिका अनाम के एक मित्र की बहिन है जिसके यहां अनाम प्रायः आया-जाया करता था। वह मित्र मुझे मिला था और उसने दुःख प्रकट करते हुए मुझसे कहा था कि यह अनुमान सर्वथा निराधार है, गलत है। तो भी वर्णन के संकेतों से उसकी बहिन का ही अनुमान लगाया जाएगा।" इसका परिणाम उसके दाम्पत्य जीवन के लिए भयंकर भी हो सकता है। अनाम का यह स्वभाव था। इसे वह कदापि नहीं छोड़ सकता। किन्तु बिमला ने उसकी बड़ी प्रशंसा की। अच्छी सम्मति की अपेक्षा में यह आवश्यक भी था।

जब विमला आश्वासन लेकर चली गई तब वह विमला का उपन्यास लेकर इन्दु के घर चला।

इन्दु घर में नहीं थी। उसकी मां ने बड़ी रुखाई से मनाम से बातचीत की। उसे इन्दु के बारे में कुछ भी नहीं बताया। हरएक प्रश्न का उत्तर उसने गोलमोल ढंग से दिया। मनाम को यह बहुत बुरा लगा। वह उसी समय वहां से लौट आया।

मनामिका ने उसे पोस्टकार्ड देते हुए कहा 'मनाम बाबू! आप घर क्यों नहीं चले जाते?

वह गुस्से में बिफर पड़ा। उसने कार्ड फाड़कर उत्तेजित स्वर में कांपते हुए कहा 'भाड़ में जाए ये घर वाले और सुनो मनामिका यदि तुम्हें काम करना है तो एक नौकरानी की तरह करो। मेरे व्यक्तिगत जीवन में हस्तक्षेप करने का तुम्हें कोई अधिकार नहीं।

वह पलंग पर पड़कर एक मासिक पत्र के पृष्ठ उलटने लगा। मनामिका खाना लेकर आ गई। वह चुपचाप खाना खाने लगा। मनामिका ने शंकित स्वर से पूछा 'आप बुरा न मानें तो आपको एक बात कहूं।

नहीं। उसने हठात् उत्तर देकर मनामिका की आंखों की ओर देखा। उसमें कौतुकपूर्ण भाव दीखे। उसकी भी जिज्ञासा जगी। दीर्घ स्वर में बोला 'क्या कहना चाहती हो।

'आज इन्दु कमाल बाबू के पास आई थी।

'क्यों?

बात बिलकुल नई थी।

'कुछ कर्ज लेने।

'उसे कर्ज की क्यों जरूरत पड़ गई?

'उसका ऐसा विश्वास है कि राधाकृष्ण बाबू उससे विवाह कर लेंगे। वह इस प्रयास में है कि वे बड़े लोग उसे कम स्तर का न समझें इसलिए वह

अपना जीवन-स्तर ऊंचा करने के चक्कर में है। श्याम बाबू ने सात सौ देकर एक हजार का हैण्डनोट लिखाया है। उसके जाने के बाद वे भारी स्वर में बोले 'अनूप बसी चांद को छूना चाहता है' और वे ही ही करके हंसने लगे।

अनाम गम्भीर हो गया।

बाद वह जान-बूझकर नीरोज गया। वहां उसकी मित्र-मंडली ने उसकी बहुत बुरी गत बनाई। उन्होंने यह भी बताया कि इन्दु के सम्पादकत्व में एक मासिक पत्र की योजना बन गई है। नवरंग ने यह भी बताया कि उसके पास कविता के लिए पत्र भी आ चुका है।

'इसे कहते हैं लकी लेडी।' विजय बोला 'प्रसिद्धि और लक्ष्मी दौड़ दौड़कर उसके पास आ रही हैं।'

'रात को नींद तो आती है?'

'तैमूर को अधिक मत सताओ। एक तो बेचारे के हाथ से प्रेमिका निकल रही है और आपको मजाक सूझ रहा है।'

'यदि यह कंगला नहीं होता तो इन्दु इसे नहीं छोड़ती।'

'मैं नहीं मानता।' नवरंग ने बीच में ही कहा 'यह गरीब न होता तो इन्दु निश्चय ही इसकी थी।'

अनाम अधिक नहीं सुन सका। वह अपनी बैसाखी उठाकर बाहर निकल गया। पीछे से उसने केवल एक हंसी सुनी।

२३

एक सप्ताह बाद वह सवेरे-सवेरे बैसाखी लेकर आगरा जानेवाली सड़क पर घूम रहा था। वह सप्ताह भर से घर से बाहर नहीं निकला था। इस बीच भंवर बाबू ने उसे बुलाया था लेकिन उसने उस पतित आदमी से बात करना भी ठीक नहीं समझा। वह घर पर बैठा रहा अपने आपको संसार से पृथक करके। इस सड़क पर हवाखोरों की चहल-पहल में वह

जब विमला आश्वासन लेकर चली गई तब वह विमला का उपन्यास लेकर इन्दु के घर चला।

इन्दु घर में नहीं थी। उसकी माँ ने बड़ी रुखाई से अनाम से बातचीत की। उसे इन्दु के बारे में कुछ भी नहीं बताया। हरएक प्रश्न का उत्तर उसने गोलमोल ढंग से दिया। अनाम को यह बहुत बुरा लगा। वह उसी समय वहाँ से लौट आया।

अनामिका ने उसे पोस्टकार्ड देते हुए कहा 'अनाम बाबू ! आप घर क्यों नहीं चले जाते ?

वह गुस्से में बिफर पड़ा। उसने कार्ड फाड़कर उत्तेजित स्वर में कांपते हुए कहा 'भाड़ में जाए वो घर वाले और सुनो अनामिका यदि तुम्हें काम करना है तो एक नौकरानी की तरह करो। मेरे व्यक्तिगत जीवन में हस्त क्षेप करने का तुम्हें कोई अधिकार नहीं।

वह पलंग पर पड़कर एक मासिक पत्र के पृष्ठ उलटने लगा। अना मिका खाना लेकर आ गई। वह चुपचाप खाना खाने लगा। अनामिका ने संकित स्वर में पूछा 'आप बुरा न मानें तो आपको एक बात कहूँ।

'कहो'। उसने तुरन्त उत्तर देकर अनामिका की आँखों की ओर देखा। उसमें कौतुकपूर्ण भाव दीखे। उसकी भी जिज्ञासा जागी। धीमे स्वर में बोला 'क्या कहना चाहती हो।

'आज इन्दु दयाल बाबू के पास आई थी।

'क्यों ?

'रात बिलकुल गई थी।

'कुछ कर्ज लेने।

'उसे कर्ज की क्यों जरूरत पड़ गई ?

'उसका ऐसा विश्वास है कि राधाकृष्ण बाबू उससे विवाह कर लेंगे। वह इस भ्रम में है कि वे बड़े लोग उसे कम स्तर का न समझें इसलिए वह

अपना जीवन-स्तर ऊंचा करने के चक्कर में है। दयाल बाबू ने सात सौ देकर एक हजार का हैंडनोट लिखाया है। उसके जाने के बाद वे भारी स्वर में बोले 'मम्मा पक्षी चांद को छूना चाहता है और वे ही' ही' करके हंसने लगे।

अनाम गम्भीर हो गया।

आज वह जान-बूझकर नीरोद गया। वहां उसकी मित्र-मंडली में उसकी बहुत बुरी गत बनाई। उन्होंने यह भी बताया कि इन्दु के सम्पादकत्व में एक मासिक पत्र की योजना बन गई है। नवरंग ने यह भी बताया कि उसके पास कविता के लिए पत्र भी आ चुका है।

'इसे कहते हैं चांदी केदी।' विजय बोला 'प्रसिद्धि और लक्ष्मी दौड़-दौड़कर उसके पास आ रही हैं।'

'रात को नींद तो आती है?'

'तैमूर को अधिक मत सताओ। एक तो बेचारे के हाथ से प्रेमिका निकल रही है और आपको मजाक सूझ रहा है।'

'यदि यह लंगड़ा नहीं होता तो इन्दु इसे नहीं छोड़ती।'

'मैं नहीं मानता।' नवरंग ने बीच में ही कहा 'यह गरीब न होता तो इन्दु निश्चय ही इसकी थी।'

अनाम अधिक नहीं सुन सका। वह अपनी बैसाखी उठाकर बाहर निकल गया। पीछे से उसने केवल एक हंसी सुनी।

२३

एक सप्ताह बाद वह सवेरे-सवेरे बैसाखी लेकर आमेर जानेवाली सड़क पर घूम रहा था। वह सप्ताह भर से घर से बाहर नहीं निकला था। इस बीच भंवर बाबू ने उसे बुलाया था लेकिन उसने उस पतित आदमी से बात करना भी ठीक नहीं समझा। वह घर पर बैठा रहा अपने आपको संसार से पृथक करके। इस सड़क पर हलवाइयों की चहल-पहल में वह

अपने अस्तित्व को पृथक समझकर विचारों में लीन होकर बह रहा था। बैसाखी की 'खट्-खट्' ध्वनियों का ध्यान उसकी ओर आकर्षित कर रही थी।

वह सोच रहा था यह प्यार बड़ा निर्दयी है और यह युग बड़ा कठोर है। अब प्राणी हृदय की सजीवता से नहीं यों ही निर्जीवता से प्रभावित होता है अब नारी-हृदय निश्वासों के ताप से भी नहीं पिघलता। उसे सौन्दर्य और प्रेम के उस अलौकिक सामञ्जस्य के रहस्य का ज्ञान ही नहीं रहा। वह पूंजी और धन के मध्य एक अज्ञेय वस्तु-सा डोल रहा है और पुरुष उससे छला जा रहा है।"

"मैं छला गया। मैं अब भी किसी दुर्दमनीय प्रेरणा के वशीभूत होकर इन्दु के इर्दगिर्द घूमने की चेष्टाएं करता रहता हूं। वह मुझे निरन्तर मर्मान्तक वेदनाएं दे रही है और मैं उसके पास से अपनी आत्मा की शान्ति की खोज रहा हूं। मैंने इसके लिए किसीकी चिन्ता नहीं की। घर-बाहर सभी को भुला बैठा। सभी को निराश किया और दुःख दिए और अन्त में मुझे उसका प्रवाह स्पर्श भी नहीं मिला। ओह! मैं कितना पागल हूं।" और उसने इस वाक्य को मुंह ऊंचा करके हवा को सौंप दिया इससे उसके मन को ढाढ़स मिला।

चलते-चलते वह अत्यन्त थक गया। उसके पांव उसे जवाब देने लगे। पीछे से उसकी सारी कमर भीग गई थी।

अप्रत्याशित उसे मकरंद मिल गया।

व्यंग से उसे घूरकर बोला 'अच्छा जनाब आप अपनी लैला को ढूंढने आए हैं। वह यहां से आधा कोस दूर राधाकृष्ण बाबू के पास बैठी हुई गुलछर्रें उड़ा रही है।

वह इतना कहकर आगे बढ़ गया।

अनाम क्षण भर के लिए रुक गया। उसे उधर जाना अच्छा नहीं लगा। राधाकृष्ण बाबू उसपर व्यंग्य छोड़ेंगे और इन्दु न जाने कैसा बर्ताव करेगी। वह वहीं पर बैठकर विचार-विमर्श करने लगा।

अपमानक इन्दु के समक्ष आने की भावना दुर्दमनीय रूप से उसमें जाग्रत हुई और वह आवेश में जल्दी-जल्दी कदम उठाता हुआ आगे बढ़ चला। वह बार-बार यही सोच रहा था कि वह उस स्थिति में किसी भी अपमान को बर्दाश्त नहीं करेगा। वह ईंट का जवाब पत्थर से देगी पर वह वहां जाएगा अवश्य।

आखिर वह उसी जगह पहुंचा जहां राधाकृष्ण और इन्दु थे। राधा कृष्ण लेटा हुआ था और इन्दु रोमांटिक ढंग में किसी नायिका की तरह मुस्करा रही थी।

अनाम ने जान-बूझकर उधर नहीं देखा। वह जल्दी से कदम उठाता हुआ बढ़ा। बैसाखी की आवाज इन्दु के कानों में पड़ी। उसने घूमकर देखा और पुकारा 'अनाम अनाम!

अनाम को लगा कि उसकी बैसाखी और पांव जमीन से चिपक गए हैं। वह चाहकर भी आगे नहीं बढ़ सका।

राधाकृष्ण ने पुकारा 'आइए अनाम जी आइए, ऐसी भी क्या नाराजगी है?

अनाम बिलकुल थक गया। उसके बैसाखी वाले हाथ और एक टांग में असह्य पीड़ा हो रही थी। उसने बैसाखी को उठाना चाहा पर वह नहीं उठी। उसे प्रतीत हुआ कि बस अब वह गिर जाएगा और उसे अपने प्रति इन्दी के सामने लज्जित होना पड़ेगा। फिर भी वह साहस करके उधर मुड़ा। चला। शरीर की नस-नस फट रही थी। दूसरी टांग भी टूटकर गिर जाना चाहती थी। बैसाखी वाले हाथ की हथेली की चमड़ी छिल गई थी। सारी पीड़ाएं उसकी आंखों से झांक रही थीं।

वह धीरे-धीरे आगे बढ़ा। उसके समीप पहुंचते-पहुंचते अनाम गिर कर पड़ गया। क्षण भर के लिए उसे होश नहीं आया। इन्दु ने मोटर में पड़ी 'झारी' से पानी निकालकर उसके मुह पर छिड़का। अनाम को होश

आ गया। अपनी अस्पष्ट चेतना में उसने राधाकृष्ण को यह कहते हुए सुना, 'तुमने ऐसे रोगी और दुर्बल से प्रेम करके अच्छा नहीं किया। इसके साथ जीवन गुजरना भी बहुत कठिन होता।

इन्दु ने कुछ उत्तर नहीं दिया।

अनाम ने बैठने का प्रयास किया। वह बैठ भी गया। राधाकृष्ण ने सहानुभूति भरे स्वर में कहा 'आपको पैदल नहीं आना-जाना चाहिए, जान-बूझकर अपनी आत्मा को कष्ट देना सर्वथा अनुचित है। कहीं टांग और खराब हो गई तो?

अनाम ने कोई उत्तर नहीं दिया। उसने जलती हुई दृष्टि से इन्दु को देखा। उसमें अनाम के अभिशप्त जीवन की करुणा घुमड़ रही थी। इन्दु उस दृष्टि को सह नहीं सकी। वह अपनी दृष्टि कहीं और भटकाने लगी। स्थिति कुछ विचित्र हो रही थी अतः कोई नहीं बोला। गहरा मौन छाया रहा।

'अच्छा चलिए, आप भी आइए अनाम जी आपको रास्ते में छोड़ता चलूं।

अनाम ने अस्वीकार कर दिया।

जब इन्दु और राधाकृष्ण चले गए तब अनाम की आंखों में आंसू आ गए। वह कई घंटे वहीं पर पड़ा रहा निर्जीव और निश्चेष्ट।

दोपहर को घर आया। मां का तार आया था। उसने तुरन्त बुलाया था। वह बीमार थी।

वरदा की मां मुंह फाड़-फाड़कर रो रही थी। अनामिका ने बताया कि वरदा के पति ने वरदा को जोर से पीटा है। उसकी चमड़ी में बेंत के निशान चमक रहे हैं। किन्तु वरदा इसे स्वीकार नहीं कर रही है। उसका पति उसे यहां हमेशा के लिए छोड़ गया है पर वरदा अभी पुनः जाने का हठ कर रही है। वह हठ कर रही है कि जहां उसका पति रहेगा वह वहीं

रहती चाहे दुःख में चाहे सुख में।

अनाम ने वरदा को बुलाया। उसकी दाईं आँख का निचला भाग सूज गया था। उसके हाथों पर जमे नीले दाग साफ दीख रहे थे। उसका मुंह उदास और आँखें नम थीं।

"क्या बात है वरदा ? माँ रो क्यों रही है ?"

"कुछ नहीं अनाम बाबू !" वह कम्पित-पुंजित स्वर में बोली "माँ माँ है न इसलिए उसका रोना कारणहीन नहीं होता। वह पति के प्रसाद को सब समझती है। मैंने उससे कह दिया अपराध मेरा था। मैंने उसके दो चाय के प्याले तोड़ दिए, फिर वह भूख क्यों नहीं पीटेगा ! माँ कहती है उस दुष्ट के पास न जा लेकिन प्रेम में क्या कभी ऐसा हुआ है ? मैं उसके बिना नहीं रह सकती। एक पल भी नहीं रह सकती। वरदा की आँखों से गंगा-जमुना बह उठीं।

उसके जाने के बाद अनाम के मस्तिष्क में सरोज का चेहरा नाचने लगा। उसे लगा कि कहीं सरोज भी इस पथ का अनुसरण न कर लें। उसने तार को उठाया। तार में सरोज की आकृति देखी ! उसे माँ की बीमारी का विश्वास नहीं हुआ उसे लगा कि हो न हो सरोज किसी लड़के से प्यार कर बैठी है और वह विद्रोहिणी बन गई है।

अनाम की आँखों के समक्ष वरदा का चेहरा उसके आंसू और उसके शरीर पर चमकते दाग नाच उठे।

वह अत्यन्त संतप्त हो उठा "कहीं सरोज के साथ ऐसा हुआ तो ?

अप्रत्याशित द्वन्द्व उसके मस्तिष्क में घूम गई। अब वह उसके व्यवहार को सह नहीं सकेगा। वह उन व्यंग्य बाणों को भी नहीं सह सकेगा जो उसे अब सुनने हैं।

वह बड़ा बदनसीब है। दुर्भाग्य उसके जीवन का साथी है।—एक विरक्ति भरी मुस्कान उसके अधरों पर दौड़ गई। वह प्यार के लिए तड़प

। है लेकिन उसे प्यार नहीं मिला। वह सदा प्यासा रहा है और रहेगा। लिकि युग के मानदंड बदल गए हैं अब आदमी नहीं आदमी की पूंजी ी जाती है। उसके गुण नहीं उसकी दौलत देखी जाती है।

वह अधमरा हो उठा। उसके समक्ष भूखी-प्यासी सरोज की आकृति थी। उसे बीमार बाप की खांसी सुनाई पड़ी। मां का दुखों से भरा र शरीर दिखा। वह कांप उठा उसे लगा इन दुखों का जिम्मेदार वह केवल वह!

काफी देर तक वह संघर्ष में पड़ा रहा। तब वह दलाल के पास गया। उसे कुछ रुपये उधार लिए। दलाल ने हंसकर कहा 'अब तुम पक्के कलाकार बने हो। देखो मेरे रुपये वायदे के अनुसार लौटा देना अन्यथा मैं भूत तरह तुम्हारे पास आ पहुंचूंगा।

अनाम निरुत्तर रहा।

'तुम्हारी बहू शीघ्र ही महारानी बनेगी राधाकृष्ण महाराज की हुक्म जानी!' वह एक बेडौल हंसी हंसा।

अनाम ने कोई उत्तर नहीं दिया।

'बेचारी मन्नो का हिसाब कर देना उसे मेरा ब्याज देना है। लना मत।' दलाल फिर एक निरर्थक हंसी हंसा।

हैंडनोट पर दस्तखत करके अनाम घर आया और अनामिका को कहा ह उसका सामान बांध दे वह घर जा रहा है। पिताजी फर्मापर है, उसे ह स्वयं भी आए और पता देखकर वह अपना रुपया अदा करले।

'अपनी मां को इस अभागी का प्रणाम कहना। मैंने कभी-कभी आपको अक्षेप किए थे इससे आपको हार्दिक कष्ट पहुंचा होगा।' अनामिका ने मन स्वर में कहा। उसकी आंखें भर आईं।

'नहीं अन्नो मनुष्य को अपनी जिम्मेवारियों से नहीं भागना चाहिए। ह पलायन वस्तुतः एक भ्रम है। मैंने जिसे चाहा, वह मुझे नहीं मिला।'

'और इन्दु ?

'वह भी मुझे नहीं मिली मैं उसके योग्य नहीं हूं। भंगड़ा हूं। ओह !
इस भंगड़ेपन को भुलाने के लिए मैंने सबको भुला दिया लेकिन यह सत्य
नर्मम रूप से प्रकट हुआ। अम्मो ! तुमने मुझपर बड़े अहसान किए, कभी
इसका चुकाऊंगा।

मन्नो की आंखें भीग गईं।

मनाम चलने लगा। बरखा आई। बरखा की जगह उसे सरोज का मुख
दिखा। उसकी आंखों में आंसू आ गए। वह जल्दी-जल्दी नीचे उतर गया।
बरखा उसकी बैसाखी की 'खट्-खट्' सुनती रही।

उसके एक घंटा बाद इन्दु मनाम के घर आई। वह अत्यन्त उद्विग्न
और चिन्ताग्रस्त थी। उसने आते ही बरखा से पूछा 'मनाम बाबू कहां हैं ?

'वे चले गए। बरखा ने छोटा-सा उत्तर दिया।

'कहां ?

'अपने घर। उनकी मां बीमार है।

'कब लौटेंगे ?

'शायद कभी नहीं। वे बड़े दुखी थे।

इन्दु धीरे-धीरे घर से बाहर निकली।

आज राधाकृष्ण ने उसका सर्वस्व लूट स्पष्ट कह दिया था कि उसकी
मां एक मास्टरनी को अपने घर की बहू नहीं बना सकती। उसे भी
उसके चरित्र पर पूर्ण विश्वास नहीं है। उसके पहले मनाम और मंवर बाबू
। उसने इस बात पर जोर दिया कि इन्दु को विरोध भी नहीं करना
चाहिए। वह उसे सब कुछ देगा। उसे सम्पादिका बनाएगा उसके उपन्यास
छापेगा पैसा देगा।

तब वह इतनी विकृति भीन हंसी हंसा कि इन्दु की आंखों में आंसू आ
गए। उसे लगा कि वह सोसायटी आदमी को आदमी नहीं समझती।

उसने अनाम को छोड़कर राधाकृष्ण को चाहा प
क्यों चाहेगा ? उसे उससे सुन्दर युवती मिल सकती
बनने की प्रवंचनामयी होड़ ! घर के बाहर वह लम्बी
हुई सड़क पर इस तरह बैठ गई जैसे कोई टूटा हुआ

उसकी आँखों के आगे अनाम की मूर्ति थी एक
प्यासा युवक ! प्यासा और दुखी ।

खट्-खट् खट् की वही चिर परिचित ध्वनि !'

उसने आवेश में चाहा कि वह दौड़कर उस
की धड़कनों में आत्मसात करले । इस पवित्र विचार
में नया बोध भर गया और उसका हृदय नये आलोक से
तथा उसके मन की वंशी बज उठी है और प्रत्येक
निर्गन्ध फूल की तरह महक रहा है ।